खण्ड - 'क' (गद्य)

महाकविबाणभट्टप्रणीतम्

चन्द्रापीडकथा

(पूर्वार्द्ध भाग)

महाकवि बाणभट्ट : संक्षिप्त परिचय

जीवन-परिचय–बाणभट्ट संस्कृत साहित्य के सर्वश्रेष्ठ गद्य कवि हैं। उनके समय, जीवन-परिचय तथा रचनाओं आदि के विषय में किसी प्रकार का सन्देह नहीं है। इसका कारण है उनके आश्रयदाता हर्षवर्धन का ऐतिहासिक व्यक्तित्व होना, साथ ही उनकी कृतियों में वर्णित घटनाएँ तथा अन्य बाह्य साक्ष्य भी उसे प्रमाणित करते हैं। हर्षचरित के प्रथम दो उच्छ्वासों और कादम्बरी (भूमिका, श्लोक 10 से 20) में बाण ने अपनी आत्मकथा और वंश-परिचय दिया है। हर्षचरित के प्रथम उच्छ्वास में इन्होंने अपने वंश की पौराणिक उत्पत्ति बतायी है। इनके वंश प्रवर्तक वत्स, सरस्वती के पुत्र सारस्वत के चचेरे भाई थे। बाण के पिता का नाम चित्रभानु तथा माता का नाम राजदेवी था। बचपन में ही उनकी माता का देहान्त हो गया और पिता ने उनका पालन-पोषण किया। 14 वर्ष की आयु में ही इनके पिता का भी स्वर्गवास हो गया। पिता की मृत्यु के बाद शोकसन्तप्त बाण अपने मित्रों के साथ देशाटन पर निकल पड़े और यायावरी जीवन व्यतीत करने लगे। भ्रमण के दौरान बाण राजदरबारों तथा गुरुकुलों में भी गये। विद्वानों के बीच रहते हुए बाण की प्रकृति बदल गयी और वे अपने वात्स्यायन वंश के अनुरूप गम्भीर स्वभाव के होकर अपनी जन्म-भूमि को लौट आये। इनके पूर्वजों का निवास-स्थान शोण (सोन) नदी के पास प्रीतिकूट नामक ग्राम था।

समय–बाण सम्राट् हर्ष के सभा-पण्डित थे, अतः बाण के समय-निर्धारण में कोई कठिनाई नहीं है। हर्ष का राज्याभिषेक अक्टूबर, 606 ई0 में हुआ और उनकी मृत्यु 648रई0 में हुई। ताम्रपत्रों तथा चीनी यात्री ह्वेनसांग के संस्मरणों से ये तिथियाँ निर्णीत हो चुकी हैं। ह्वेनसांग ने 629 से 645 ई0 तक भारत-भ्रमण किया था और वह हर्ष के निकट सम्पर्क में भी आया था। अतः बाण का समय 7वीं शताब्दी ई0 का पूर्वार्द्ध मानना उचित है।

8वीं शताब्दी ई0 से लेकर अनेक संस्कृत ग्रन्थकारों ने बाण और उनके ग्रन्थों का उल्लेख किया है, अतः बाण के समय के विषय में कोई विवाद नहीं है।

रचनाएँ–मुख्य रूप से बाणभट्ट के दो ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं–

1. हर्षचरित,
2. कादम्बरी।

इनके नाम से तीन और ग्रन्थ माने जाते हैं–

1. चण्डीशतक,

2. मुकुटताडितक,

3. पार्वती परिणय।

परन्तु इन तीनों रचनाओं की प्रामाणिकता सन्दिग्ध है।

हर्षचरित–यह आठ उच्छ्वासों में लिखी हुई एक आख्यायिका है। इसके प्रारम्भ में स्वयं बाण ने अपने वंश का विशद् वर्णन किया है और अगले उच्छ्वासों में हर्ष की वंश-परम्परा से प्रारम्भ करते हुए उनकी उत्पत्ति तथा विकास का विस्तृत वर्णन किया है।

कादम्बरी–यह एक अनूठा कथा-ग्रन्थ है। इसमें एक काल्पनिक कथा वर्णित है। कादम्बरी को हम आधुनिक युग में उपन्यास कह सकते हैं। भाव और भाषा-शैली सभी दृष्टियों से कादम्बरी एक उत्कृष्ट रचना है, अतः यह कथन उचित ही है कि कादम्बरी के रसज्ञों को भोजन भी अच्छा नहीं लगता—''कादम्बरीरसज्ञानामाहारोऽपि न रोचते।''

पार्वती परिणय–यह एक नाटक है, इसमें भगवान् शिव तथा पार्वती का विवाह वर्णितरहै।

चण्डीशतक–यह सौ श्लोकों का संग्रह-ग्रन्थ है। इसमें अत्यन्त सुन्दर शब्दावली में भगवती चण्डिका की स्तुति की गयी है।

मुकुटताडितक–यह एक नाटक है, परन्तु अब अप्राप्य है।

बाण की शैली एवं काव्य-सौन्दर्य–बाण संस्कृत गद्य-काव्य के मूर्द्धन्य सम्राट् माने गये हैं। उन्होंने गद्य में पद्यों से भी अधिक सौन्दर्य एवं चमत्कार-प्रदर्शन किया है। बाण की सबसे प्रमुख विशेषता है कि उन्होंने अपने दोनों गद्य-काव्यों में शैलीगत समस्त विशेषताओं का संग्रह करने का प्रयत्न किया है, अतः उनके ग्रन्थ सभी के लिए आनन्ददायी हैं। बाण के अनुसार नवीन या चमत्कारिक अर्थ, उत्कृष्ट स्वभावोक्ति, सरल श्लेष प्रयोग, सुन्दर रसाभिव्यक्ति और ओज-गुणयुक्त शब्दयोजना, ये सारे गुण एकत्र दुर्लभ हैं। परन्तु बाण की रचनाओं में ये सभी गुण प्राप्त होते हैं।

रीति–बाण पाञ्चाली रीति के कवि हैं। उनकी रचनाओं में भाव और भाषा का अनुपम समन्वय मिलता है। पाञ्चाली रीति का तात्पर्य है, विषय के अनुरूप शब्दावली का प्रयोग और बाण इसके सिद्धहस्त कवि हैं।

शैली–बाण के समय चार प्रकार की गद्य-शैलियाँ प्रचलित थीं, जिनमें से तीन बाण के साहित्य में मिलती हैं–दीर्घसमासा, अल्पसमासा और समासरहिता। बाण का किसी शैली पर विशेष आग्रह नहीं था।

समासों का अस्तित्व गद्य शैली की प्रमुख विशेषता माना जाता है–'ओजः समास भूयस्त्वमेतद् गद्यस्य जीवितम्।' समासों का जमघट लगा देने में बाण ने कमाल दिखलाया है। जिस प्रकार उन्होंने समास-बहुल लम्बे-लम्बे वाक्यों का प्रयोग किया है, उसी प्रकार समासरहित छोटे-छोटे वाक्यों के प्रयोग में भी कौशल दिखाया है।

भाषा–बाण की भाषा का प्रवाह अविच्छिन्न है। उन्होंने भाव और भाषा का अत्यन्त सुन्दर समन्वय प्रस्तुत किया है। शृङ्गार रस के वर्णन में कोमलकान्त पदावली है और करुण रस के वर्णन में सरल-सुबोध पदावली का प्रयोग है। अतएव उनके काव्य में ललित पदविन्यास और रचनाशैली अत्यन्त आकर्षक प्रतीत होती है। नये-नये अर्थों का सन्निवेश भी उन्होंने विलक्षण ढङ्ग से किया है। बाण का अक्षय शब्दकोश और पदावलियों का अविराम स्पन्दन, काव्य के लिए अपेक्षित समस्त तत्त्व जो बाण की कृतियों में वर्तमान हैं, उसे देखकर ही 'बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्' की उक्ति चल पड़ी, जो सार्थक भी है।

अलङ्कार–बाण की रचनाओं में अलङ्कारों की छटा दर्शनीय है। उन्होंने अलङ्कारों का प्रयोग समुचित तथा अत्यन्त स्वाभाविक रूप में किया है। कहीं भी अलङ्कारों के कारण भाषा की रमणीयता में व्याघात नहीं उत्पन्न हुआ है। बाण के अलङ्कार-प्रयोग के विषय में प्रसिद्ध है कि बाण के लम्बे-लम्बे समास यदि पहाड़ी नदी की वेगवती धारा के समान हैं, तो उनकी श्लिष्ट उपमाएँ इन्द्रधनुष की छाया की भाँति उसे रंगीन बना देती हैं। उनके अनुप्रासों से भाषा में एक विलक्षण स्वर-माधुर्य आ गया है–'मधुकरकलकलङ्ककालीकृतकालेय-कुसुमकुड्मलेषु'। उनके श्लेष जुही की माला में पिरोये गये चम्पक पुष्पों की भाँति हैं–'निरन्तर

श्लेषघनाः सुजातयो महास्रजश्चम्पककुड्मलैरिव'। बाण की उत्प्रेक्षाओं और उपमाओं से सम्पूर्ण कथा व्याप्त है। वस्तुतः बाण के चित्रणों का अधिकांश सौन्दर्य उनकी उत्प्रेक्षाओं में ही है। बाण के अर्थापत्ति, विरोधाभास आदि अलङ्कारों के प्रयोग भी बड़े स्वाभाविक बन पड़े हैं।

रस–बाण रससिद्ध कवि हैं। शृङ्गार उनका सर्वप्रिय रस है। वे संयोग शृङ्गार के वर्णन में जितने सिद्धहस्त हैं, उससे अधिक सफलता उन्हें विप्रलम्भ शृङ्गार के वर्णन में मिली है। बाण जिस रस का प्रयोग करते हैं, उसका मार्मिक वर्णन कर पूर्ण रसास्वाद कराते हैं।

चरित्र-चित्रण–बाण ने हर्षचरित में ऐतिहासिक और कादम्बरी में काल्पनिक पात्र लिये हैं। कादम्बरी के पात्र समाज के विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधि हैं, साथ ही, दिव्यलोक के पात्र भी हैं। प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण अति उत्तम है, जबकि गौण पात्रों का चित्रण उतना प्रभावशाली नहीं बना। बाण मर्यादित प्रेम के समर्थक हैं।

बाण ने तत्कालीन समाज और संस्कृति का बहुत सुन्दर और सजीव चित्रण किया है। बाण के सुभाषित उनकी सूक्ष्म दृष्टि और चिन्तन-शक्ति के परिचायक हैं।

बाण की दो-एक प्रशस्तियाँ यहाँ दी जा रही हैं। कादम्बरी के उत्तरभाग के 7वें श्लोक में कादम्बरी की रसभरता के विषय में भूषणभट्ट ने स्वयं कहा है–

(1) कादम्बरी रसभरेण समस्त एव मत्तो न किञ्चिदपि चेतयते जनोऽयम्।।

(2) मरुचिरस्वरवर्णपदा रसभाववती जगन्मनोहरति।

(2) तत् किं तरुणी, नहि नहि वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य।।

–धर्मदाससूरि, विदग्धमुखमण्डन, 4/28

चन्द्रापीडकथा : कथा-सार

प्राचीनकाल में शूद्रक नामक एक राजा था। विदिशा नाम की नगरी उसकी राजधानी थी। एक बार जब वह सभा मण्डप में बैठा हुआ था कि दक्षिण दिशा से एक चाण्डाल कन्या पिंजड़े में एक तोता लिए हुए आयी और उसके समीप जाकर बोली, "महाराज यह तोता सम्पूर्ण शास्त्रों का ज्ञाता और पृथ्वी का एक रत्न है। इसे आप स्वीकार करें।" राजा के पूछने एवं उनकी उत्सुकता को सन्तुष्ट करने हेतु शुक ने बताया कि बाल्यकाल में वह एक मुनि कुमार के द्वारा जाबालि के आश्रम में पहुँच गया। मेरे विषय में मुनियों की जिज्ञासा जानकर जाबालि ऋषि ने इस प्रकार बताया–

अवन्ति में उज्जयिनी नाम की एक नगरी में तारापीड नाम का एक राजा हुआ था। शुकनास नाम का एक ब्राह्मण उसका मन्त्री था। देवताओं की आराधना, पूजापाठ के बाद तारापीड को चन्द्रापीड नाम का और मन्त्री शुकनास को वैशम्पायन नाम का पुत्र-रत्न प्राप्त हुआ। विद्याध्ययन एवं युवावस्था प्राप्त होने पर चन्द्रापीड को युवराज और वैशम्पायन को उसका मन्त्री नियुक्त किया गया। विजय में मिली कुलूत राजा की पुत्री राजकन्या पत्रलेखा को चन्द्रापीड की सेवा में नियुक्त किया गया। दिग्विजय अभियान में चन्द्रापीड किरातों की नगरी सुवर्णपुर पहुँचा। अपने इन्द्रायुध पर सवार वह एक दिन शिकार खेलते समय किन्नरों के एक युगल का पीछा करते हुए अच्छोद सरोवर के तट पर पहुँच गया। वहाँ शिव मन्दिर में एक कन्या को पूजा करते हुए देखा। चन्द्रापीड के पूछने पर उस कन्या ने बताया कि वह गन्धर्वराज हंस की पुत्री महाश्वेता है। महर्षि श्वेतकेतु के पुत्र पुण्डरीक ने एक दिन उसे देखा और वे इतने आसक्त हो गये कि उनका जीवन खतरे में पड़ गया। पुण्डरीक के मित्र कपिंजल से सूचना पाकर रात्रि में जब मैं उनसे मिलने यहाँ पहुँची तब तक वे अपना प्राण त्याग चुके थे। मैंने उनके शरीर के साथ सती होने का निर्णय लिया तभी कोई उनके शरीर को लेकर आकाश में उड़ गया। उसी समय मुझे आकाशवाणी सुनाई पड़ी कि शाप का अन्त होने पर यह फिर तुमसे मिलेगा। तब तक तुम यहीं रहकर तपस्या करो। कुछ देर के बाद पुण्डरीक का मित्र कपिंजल भी जो हमारे निकट खड़ा था, अचानक मुझे अकेला छोड़कर दूर आसमान में उड़ता हुआ विलीन हो गया।

महाश्वेता अपनी आपबीती चन्द्रापीड को सुनाकर उसका उचित अतिथि सत्कार किया। महाश्वेता एक दिन चन्द्रापीड को साथ लेकर अपनी प्रिय सखी कादम्बरी को समझाने के लिए हेमकूट गयी। सखी के दुःख से प्रभावित होकर कादम्बरी विवाह नहीं करना चाहती थी। किन्तु महाश्वेता के साथ पहुँचे युवराज चन्द्रापीड को देखते ही वह उस पर आसक्त हो गई। कुछ दिनों उपरान्त अपनी सेविका पत्रलेखा को वहीं रुकने के लिए कहकर चन्द्रापीड अपनी सेना में लौट आया। किन्तु वहाँ आये पत्रवाहक से मिले पत्र को पढ़कर वैशम्पायन एवं सेवक को पत्रलेखा के साथ जाने का आदेश देकर अपनी राजधानी लौट आया। कुछ दिनों बाद एक दूत के माध्यम से कादम्बरी का सन्देश पाकर वैशम्पायन की खोज के बहाने चन्द्रापीड कादम्बरी से मिलने चल पड़ा। यात्रा के बीच में ही चन्द्रापीड को जानकारी प्राप्त हुई कि अच्छोद सरोवर के किनारे वैशम्पायन पड़ा हुआ है। वह वापस आना ही नहीं चाहता है। चन्द्रापीड के वहाँ पहुँचने पर महाश्वेता ने उसे बताया कि वैशम्पायन ने उसके प्रति दुर्व्यवहार किया जिसके कारण उसने उसे शुक हो जाने का शाप दे दिया है। चन्द्रापीड इतना सुनते ही वहीं गिरकर मर गया। यह दृश्य देखकर पत्रलेखा भी इन्द्रायुध को लेकर अच्छोद सरोवर में कूद पड़ी। तदन्तर सरोवर से एक पुरुष निकला। सारी कथा कादम्बरी और महाश्वेता को सुनाकर दोनों को अपने प्रेमियों से पुनर्मिलन के लिए आश्वस्त किया।

राजा शूद्रक शुक के मुख से इतना सुनते ही मृत्यु को प्राप्त हो गया। इस घटना के बाद चन्द्रापीड जीवित हो गया और फिर चन्द्रलोक से पुण्डरीक भी आ गया। परिणामस्वरूप चन्द्रापीड का कादम्बरी के साथ और पुण्डरीक का महाश्वेता के साथ विवाह सम्पन्न हो गया।

चन्द्रापीडकथा : चरित्र-चित्रण

शूद्रक

बाण की कादम्बरी की कथा दो जन्मों से सम्बन्धित है। राजा शूद्रक पूर्वजन्म में युवराज चन्द्रापीड था। चन्द्रापीड पूर्वजन्म में चन्द्रमा था। वह शाप के कारण पृथ्वी पर दो बार जन्म लेता है। प्रथम बार चन्द्रापीड के रूप में जन्म लेकर मित्र वैशम्पायन की मृत्यु के आघात से प्राण त्याग देता है, तत्पश्चात् राजा शूद्रक के रूप में जन्म लेता है। राजा शूद्रक का शारीरिक सौष्ठव अत्यन्त आकर्षक था। उसके चरित्र की विशेषताएँ इस प्रकार कही जा सकती हैं–

महाबलशाली चक्रवर्ती सम्राट्–राजा शूद्रक महाप्रतापी चक्रवर्ती सम्राट् था। उसके पराक्रम के आगे समस्त राजा अपना मस्तक झुकाते हैं और उसकी आज्ञा शिरोधार्य करते हैं। अपने पराक्रम और तेज के कारण वह दूसरे इन्द्र के समान प्रतीत होता था। चक्रवर्ती के लक्षणों से सम्पन्न शूद्रक चारों समुद्रों की मालारूपी मेखलावाली पृथ्वी का स्वामी था–''**अशेषनरपतिशिरः समभ्यर्चितशासनः पाकशासन इवापरः, चतुरुदधिमालामेखलाया भुवो भर्त्ता, प्रतापानुरागावनतसमस्तसामन्तचक्रः, चक्रवर्तीलक्षणोपेतः, चक्रधर इव'' इति।** वह सम्पूर्ण पृथ्वी के भार को हाथों में कङ्कन के समान अनायास धारण करता था–''**वलयमिव लीलया भुजेन भुवनभारमुद्वहन्।**''

संयमी–शूद्रक के राजमहल में अनेक स्त्रियाँ उसकी परिचायिकाओं के रूप में कार्य करती थीं। उसे स्नानादि कराती थीं, परन्तु शूद्रक उनके बीच अनासक्त भाव से रहता था। बाण ने शूद्रक के लिए स्पष्ट कहा है–''**प्रथमे वयसि वर्तमानस्यापि रूपवतोऽपि सन्तानार्थिभिरमात्यैरपेक्षितस्यापि सुरतसुखस्योपरि द्वेष इवासीत्।**'' अर्थात् मन्त्रियों के द्वारा सन्तान की आकाङ्क्षा करने पर भी वह स्त्री-सुख से विमुख था। वह जितेन्द्रिय था, इन्द्रियों का दास नहीं। बाण पुनः शूद्रक को '**वनितासम्भोगसुखपराङ्मुखः**' कहकर उसके संयमी होने का परिचय देते हैं।

शास्त्रपारङ्गत एवं गुणग्राही–राजा शूद्रक समस्त शास्त्रों का ज्ञाता था और दूसरों के गुणों को भी परखनेवाला था। उसके राज-दरबार में विद्वानों और गुणीजनों का सदा आदर होता था। अनेक छन्दों का ज्ञाता शूद्रक अपना समय शास्त्रचर्चाओं में व्यतीत करता था–''**कदाचिदाबद्धविदग्धमण्डलः काव्यप्रबन्धरचनेन, कदाचिच्छात्रालापेन, कदाचिदाख्यानकाख्यायिकेतिहासपुराणाकर्णनेन....।**'' वह राज-सभा में प्रायः विद्वत् सभाओं और गोष्ठियों का आयोजन करता रहता था–''**आदर्शः सर्वशास्त्राणाम्, उत्पत्तिः कलानाम्, कुलभवनं गुणानां, आगमः काव्यामृतरसानाम्, उदयशैलो मित्रमण्डलस्य, उत्पातकेतुरहितजनस्य प्रवर्तयिता गोष्ठीबन्धानाम्, आश्रयो रसिकानाम्।**'' वह सभा में लोभरहित विद्वान् मन्त्रियों से घिरा रहता था–''**नीतिशास्त्रनिर्मलमनोभिरलुब्धैः स्निग्धैः प्रबुद्धैश्चामात्यैः परिवृतः।**''

सौन्दर्य का प्रशंसक–राजा शूद्रक किसी भी प्रकार के गुण का प्रशंसक है, वह स्वाभाविक सौन्दर्य की भी प्रशंसा करता है। राजसभा में जब चाण्डालकन्या राजा के समक्ष उपस्थित होती है, तो उसके सौन्दर्य को देखकर वह चकित रह जाता है–''**अहो! विधातुरस्थाने रूप-निष्पादनप्रयत्नः....मन्ये च मातङ्गजातिस्पर्शदोषभयादस्पृशतेयमुत्पादिता प्रजापतिना, अन्यथा कथमियमक्लिष्टता लावण्यस्य।**''

धर्मनिष्ठ–राजा शूद्रक धर्म के प्रति आस्था रखता है। उसके दैनिक कृत्यों में ईश्वरोपासना भी सम्मिलित है। पितरों को तर्पण देता है, मन्त्रों से पवित्र जल से सूर्य को अञ्जलि देता है तथा देवालय में शङ्कर की पूजा करता है–''**सम्पादितपितृजलक्रियो मन्त्रपूतेन तोयाञ्जलिना दिवसकरमभिप्रणम्य देवगृहमगमत्। उपरचित पशुपतिपूजश्च।**''

इस प्रकार पराक्रम का रसिक होते हुए भी विनय का व्यवहार करनेवाला शूद्रक विजय- प्राप्ति का उत्कट अभिलाषी एवं अत्यधिक शक्तिशाली था।

चाण्डालकन्या

सौन्दर्य की प्रतिमा–अपने अत्यधिक सौन्दर्य के कारण चाण्डालकन्या सौन्दर्य की प्रतिमा के सदृश थी। राजा शूद्रक जैसा पराक्रमी तथा चक्रवर्ती सम्राट् भी उसके अप्रतिम सौन्दर्य को देखकर चकित रह जाता है–''**असुरगृहीतामृतापहरणकृत-कपटपटुविलासिनीवेशस्य श्यामतया भगवतो हरेरिवानुकुर्वतीम्।**'' उसका रूप-लावण्य विष्णु के मोहिनी रूप का अनुकरण करनेवाला था। अपलक नेत्रों से चाण्डालकन्या के रूप-सौन्दर्य को देखते हुए वह सोचता है कि यदि विधाता ने उसे इतना रूप दिया तो उसे ऐसे कुल में जन्म क्यों दिया। वह सोचता है कि शायद अछूत को छूने के दोष के भय से इसे बिना छुए ही बना डाला है–''**यदि नामेयमात्मरूपोपहसिता-शेषरूपसम्पदुत्पादिता किमर्थमपगत-स्पर्शसम्भोगसुखे कृतं कुले जन्म।**'' अन्ततः शूद्रक विधाता को धिक्कारता है कि ऐसे अनुपयोगी स्थान पर सर्व-सौन्दर्य तथा रूपलावण्यता की कमनीयता क्यों स्थापित की–**सर्वथा धिग्धिग्विधातारमसदृशसंयोगकारिणम्, अतिमनोहराकृतिरपि क्रूरजातितया····।**''

चतुरता–रूपवती होने के साथ ही चाण्डालकन्या अत्यन्त चतुर एवं विवेकशील स्त्री है। शूद्रक के समक्ष सभाभवन में प्रवेश करके वह सभी लोगों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए जर्जर बाँस के टुकड़े को फर्श पर जोर से पटकती है, जिससे उत्पन्न तेज आवाज के कारण पूरी सभा का ध्यान उसकी ओर चला जाता है। इससे स्पष्ट है कि वह कितनी चतुराई से सभा-मण्डप में अपनी उपस्थिति का महत्त्व उत्पन्न करती है।

वात्सल्यमयी–चाण्डालकन्या का हृदय स्नेह तथा वात्सल्य से परिपूर्ण है। पिंजड़े में बन्द तोते के रूप में भी पुत्र के लिए उसके हृदय में अगाध स्नेह तथा वात्सल्य है। वह अपने पुत्र की देख-रेख तथा रक्षा के लिए मृत्युलोक में निवास करना स्वीकार करती है और चाण्डाल कुल में जन्म लेकर अपने आचरण को पवित्र रखती है। शुक रूप में स्थित पुत्र के शाप का अन्त समीप समझकर वह सम्पूर्ण वृत्तान्त राजा को सुनाती है।

वस्तुतः कादम्बरी के अनुसार चाण्डालकन्या महामुनि श्वेतकेतु की पत्नी एवं पुण्डरीक की माता है, जिसके शापग्रस्त हो जाने पर उसकी रक्षा के लिए चाण्डाल कुल में जन्म लेती है, जिससे स्पर्श के दोष से बची रहे। वैशम्पायन नामक शुक के शापमुक्त होने पर वह पुनः अपने लोक को चली जाती है।

वैशम्पायन नामक शुक

यह तोता अपने पहले के दो जन्मों में क्रमशः श्वेतकेतु का पुत्र पुण्डरीक तथा शुकनास नामक मन्त्री का पुत्र वैशम्पायन था। चन्द्रमा के शाप के कारण यह मनुष्य लोक में शुकनास के यहाँ उत्पन्न हुआ। महाश्वेता के द्वारा शाप दिये जाने पर तोते की योनि में उत्पन्न हुआ। पूर्वजन्म के संस्कार के कारण इसका शास्त्रज्ञान तथा महाश्वेता के प्रति अनुराग आदि नष्ट नहीं हुए। इसकी चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

शास्त्रज्ञ तथा कलाओं में निपुण–पूर्वजन्मों के संस्कार के कारण शुक सम्पूर्ण विद्याओं, कलाओं, शास्त्रों, पुराणों, इतिहास तथा राजनीति का ज्ञानी था। इसका यह ज्ञान राजा 'शूद्रक' के लिए आशीर्वाद के रूप में कही हुई निम्न आर्या में स्पष्ट हो जाता है–

स्तनयुगमश्रुस्नातं समीपतरवर्ति हृदयशोकाग्नेः।
चरति विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम्॥

अपने इसी ज्ञान के कारण इसने अपने तथा शूद्रक के पूर्वजन्मों की कथा को स्पष्ट रूप में कहा था।

मनुष्य की वाणी में बोलनेवाला–इसकी वाणी मनुष्य के समान स्पष्ट थी। स्वयं राजा शूद्रक उसकी इस चमत्कारयुक्त वाणी से प्रभावित होकर अपने मन्त्री कुमारपालित से कहता है कि सुना आप लोगों ने, इस पक्षी की वर्णों के उच्चारण में स्पष्टता और स्वर में मधुरता! पहले तो यही महाश्चर्य है कि यह (शुक) वर्णों की परस्पर स्पष्ट पृथकतावाली सुस्पष्ट मात्रा, अनुस्वार, स्वर तथा व्याकरण-संयत अक्षरोंवाली वाणी बोलता है–''**श्रुता भवद्भिरस्य विहङ्गमस्य स्पष्टता वर्णोच्चारणे, स्वरे च मधुरता! प्रथमं तावदिदमेव महदाश्चर्यम्....।**''

महाश्वेता का प्रेमी–पूर्वजन्म के संस्कार के कारण इसे महाश्वेता से अति प्रेम था। अतः जैसे ही इसके पङ्खों में उड़ने

की शक्ति आयी, वह महाश्वेता से मिलने के लिए उड़ चला।

दुर्भाग्यशाली—यह दुर्भाग्यशाली भी था। जन्म लेते ही इसकी माता स्वर्ग चली गयी और बचपन के आरम्भ में ही इसके पिता को वृद्ध भील ने मार डाला। यह इसके पूर्वजन्म के पिता श्वेतकेतु की तपस्या का प्रभाव था कि किसी प्रकार इसके जीवन की रक्षा हो सकी।

पूर्वजन्म का ज्ञाता—इसे पहले के दो जन्मों का पूर्ण ज्ञान था। इसी ज्ञान के आधार पर वह राजा शूद्रक को कहानी सुनाता है। संक्षेप में इसके सम्पूर्ण गुण चाण्डालकन्या के द्वारा शूद्रक के समक्ष निम्नलिखित कथन से स्पष्ट है–

देव! विदितसकलशास्त्रार्थः, राजनीतिप्रयोगकुशलः, पुराणेतिहासकथालापनिपुणः,...

सकलभूतलरत्नभूतोऽयं वैशम्पायनो नाम शुकः। ...तदयात्मीयः क्रियताम्।

इसी ज्ञान के आधार पर वह राजा शूद्रक से स्वयं सम्मान प्राप्त करता है। राजा शूद्रक स्वयं वैशम्पायन शुक से पूछते हैं कि क्या आपने कुछ अभीष्ट खाद्य पदार्थों का अन्तःपुर में आस्वादन किया–

'कच्चिदभिमतमास्वादितमभ्यन्तरे भवता किञ्चिदशनजातम्।''

अन्ततः राजा शूद्रक उसके चरित्र से प्रभावित होकर जिज्ञासावश उसके विषय में समस्त जानकारी देने का निवेदन करता है।

कादम्बरी का चरित्र-चित्रण

परिचय—कादम्बरी बाणभट्ट कृत 'कादम्बरी' की प्रमुख स्त्री पात्र है। वह गन्धर्वों के राजा चित्ररथ की एकमात्र पुत्री है। वह चन्द्रापीड की प्रेमिका, महाश्वेता की सखी और सम्पूर्ण कलाओं में दक्ष स्त्री है।

प्रमुख नायिका—कादम्बरी के नाम पर ही रचना का नामकरण होने से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि कादम्बरी मुख्य स्त्री-पात्र है। यद्यपि यह कथानक के आदि में ही हमारे सामने आती है और महाश्वेता के मुख से ही हमें उसका परिचय मिलता है, किन्तु नायक चन्द्रापीड की प्रिया होने के कारण तथा बाद के कथानक में सर्वत्र मुख्य रूप से उपस्थित होने से वही इस आख्यायिका की नायिका है।

सच्ची प्रेमिका—वह चन्द्रापीड को पहली बार देखते ही उस पर अनुरक्त हो जाती है और सदैव उनके पास रहना चाहती है, **'हे सखि! महाश्वेते, × × × दर्शनादारभ्य शरीरस्याप्ययमेव प्रभुः किमुत भवनस्य परिजनस्य वा'**। एकान्त में चन्द्रापीड के बारे में सोचना और पत्रलेखा के द्वारा चन्द्रापीड को सन्देश भेजना इसके प्रमाण हैं। पत्रलेखा चन्द्रापीड से कादम्बरी की मनोभावना का वर्णन करती हुई कहती है–वह चन्द्रापीड के मरने पर उसके साथ सती होना चाहती है, किन्तु आकाशवाणी के द्वारा पुनर्मिलन का सन्देश दिये जाने पर यह सब-कुछ छोड़कर अच्छोद सरोवर के किनारे ही उसके मृत शरीर की रक्षा और सेवा करती हुई एक तपस्विनी का जीवन व्यतीत करने लगती है।

सङ्कोची—यह अत्यन्त लज्जाशीला और सङ्कोची स्वभाव की है। इसी कारण से महाश्वेता के बार-बार आग्रह करने पर भी वह चन्द्रापीड को अपने हाथ से पान देने में सङ्कोच करती है और महाश्वेता के मुख से अपनी दृष्टि हटाये बिना ही उसे पान देती है। इसी कारण ही विभिन्न प्रकार से चन्द्रापीड के द्वारा पूछे जाने पर भी स्पष्ट रूप से अपने प्रेम को प्रकट नहीं करती।

प्रिय सखी—वह महाश्वेता की प्रिय सखी है। वह महाश्वेता से प्रेम करती है और महाश्वेता इससे प्रेम करती है। महाश्वेता कादम्बरी का परिचय कराती हुई चन्द्रापीड से कहती है–**'सरलहृदया महानुभावा च कादम्बरी।'**

सम्पूर्ण कलाओं में दक्ष—वह सङ्गीत, चित्रकारी, शृङ्गार आदि सम्पूर्ण कलाओं में दक्ष है। इस प्रकार कादम्बरी के चरित्र में अनेक विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं।

चन्द्रापीड का चरित्र-चित्रण

'कादम्बरी' महाकवि बाण की श्रेष्ठ गद्य-काव्यात्मक रचना है। चन्द्रापीड इस गद्य-काव्य का धीरोदात्त नायक है। उसके चरित्र में निम्नलिखित विशेषताएँ दिखायी पड़ती हैं–

रूपवान्—चन्द्रापीड सुन्दर राजकुमार है। जब उसमें यौवन आता है तब तो उसका अङ्ग-प्रत्यङ्ग निखर उठता है। शिक्षा प्राप्त कर जब वह घर आता है, तब नवयौवन उसके सौन्दर्य को दोगुना कर देता है।

बुद्धिमान् और गुणवान्—चन्द्रापीड की बुद्धि बहुत तीव्र है। विद्या-मन्दिर में वह आचार्यों द्वारा पढ़ायी गयी सम्पूर्ण विद्याओं को बहुत थोड़े समय में ग्रहण कर लेता है। सभी शास्त्रों, शस्त्रविद्या, घोड़े और हाथी पर सवारी, पक्षियों की भाषा का ज्ञान आदि सभी में वह पारङ्गत हो जाता है।

वीर—चन्द्रापीड महान् वीर तथा पराक्रमी भी है। वह युवराज बनकर दिग्विजय करने के लिए चलता है, तो चारों दिशाओं को जीतकर सबको अपने अधीन कर लेता है।

सच्चा मित्र—चन्द्रापीड सच्चा मित्र है। अपने मित्र वैशम्पायन के बिना वह रह नहीं सकता। चाहे विद्यालय में पढ़ने जाय अथवा दिग्विजय के लिए प्रस्थान करे, मित्र उसके साथ रहता है। मित्र ही कठिनाई के समय सहायता करता है—ऐसा उसका विश्वास है। चन्द्रापीड को जब यह पता चलता है कि महाश्वेता के शाप से वैशम्पायन मर गया है, तब अपने मित्र के शोक में व्याकुल चन्द्रापीड प्राण त्याग देता है।

सच्चा प्रेमी—चद्रापीड कादम्बरी से प्रेम करता है। कादम्बरी के प्रथम दर्शन में ही उसके हृदय में प्रेम प्रवाहित हो जाता है। उसका प्रेम निःस्वार्थ और वासनारहित है। कादम्बरी से मिलन के लिए वह आकुल होता है। उज्जयिनी से वर्षा-आँधी में चलकर भी वह कादम्बरी के पास पहुँचने का प्रयास करता है। कादम्बरी की प्रत्येक इच्छा को वह पूर्ण करना चाहता है। उसके प्रेम में कहीं भी स्वार्थ अथवा वासना की गन्ध नहीं है।

दिव्य पुरुष—चन्द्रापीड यद्यपि राजा तारापीड का पुत्र अर्थात् लौकिक मनुष्य है, परन्तु वास्तव में वह लोकपाल चन्द्रमा है। शाप के कारण वह पहले चन्द्रापीड के रूप में और फिर राजा शूद्रक के रूप में जन्म लेता है। शापमुक्त होकर वह फिर चन्द्रलोक, हेमकूट और उज्जयिनी पर शासन करता है।

संक्षेप में, चन्द्रापीड चन्द्रमा का अवतार है। वह वीर, बुद्धिमान् तथा गुणवान् राजकुमार के रूप में पृथ्वी पर अवतरित हुआ है।

पुण्डरीक का चरित्र-चित्रण

पुण्डरीक महाकवि बाणभट्ट कृत कादम्बरी का महत्त्वपूर्ण पात्र है। उसके चरित्र में निम्न प्रमुख विशेषताएँ देखने को मिलती हैं—

सुन्दर एवं चञ्चल—महामुनि श्वेतकेतु से आकृष्ट लक्ष्मी के मानसपुत्र का नाम पुण्डरीक है। तीनों लोक में श्वेतकेतु का रूप सर्वाधिक सुन्दर है, अतः पुत्र पुण्डरीक भी अत्यन्त सुन्दर युवक है। लक्ष्मी का पुत्र होने से उसमें नैसर्गिक चञ्चलता भी है। तभी तो महाश्वेता के आकृष्ट होते ही वह अपनी मानसिक दुर्बलता के कारण उस पर आसक्त हो जाता है।

कुशल प्रेमी—महाश्वेता के पुष्पमञ्जरी विषयक कौतूहल को देखकर वह उसके पास चला आता है और अपने कानों से उतारकर उसके कानों में पहनाते समय अनजाने ही महाश्वेता के गालों के स्पर्शसुख से उसकी अँगुलियाँ काँप जाती हैं और रुद्राक्षमाला उसके हाथ से गिर जाती है। मुनिपुत्र होने पर भी पुण्डरीक प्रणयव्यापार में प्रवीण है।

वाक्पटु—महाश्वेता के प्रेमपाश में आबद्ध हो जाने से कपिञ्जल उसकी भर्त्सना करता है, तो वह असत्य भी बोल जाता है और कहता है कि वह कामवश नहीं है। बनावटी क्रोध से वह महाश्वेता को प्रेम-फटकार भी सुनाता है, किन्तु अवसर मिलते ही छिपकर तरलिका के पास पहुँच जाता है और महाश्वेता के बारे में सारी बातें पूछता है। वह प्रेमपत्र भी तरलिका के माध्यम से महाश्वेता के पास पहुँचा देता है। पुण्डरीक की धार्मिकता, विद्वत्ता, तपस्विता एवं मित्रता आदि का मूल्याङ्कन कपिञ्जल के शब्दों में किया जा सकता है और यह कहा जा सकता है कि पुण्डरीक के अन्दर अनेक विशेषताएँ हैं।

महाश्वेता का चरित्र-चित्रण

गौरवर्णा परम रूपवती गन्धर्वराज हंस की पुत्री महाश्वेता स्वभाव से सरल, उदार हृदयवाली, अतिथि सेवा परायण, तर्कशीला एवं बुद्धिमती है। उसकी माँ गौरी चन्द्रमा के वंश में उत्पन्न अप्सराओं के कुल में पैदा हुई थी। इससे स्पष्ट है कि बाण रचित 'कादम्बरी' की मुख्य नायिका कादम्बरी की सहेली महाश्वेता का जन्म अप्सराओं के कुल में हुआ था। महाश्वेता अपनी माँ गौरी से भी अधिक गौर वर्ण की और अत्यन्त आकर्षक थी। इसी कारण मुनिकुमार पुण्डरीक इसकी तरफ आकर्षित हुआ और अल्पकालिक

विछोह भी सहन करने में अक्षम होकर मृत्यु को प्राप्त हो गया था।

दृढ़ संकल्पवती—महाश्वेता दृढ़ संकल्पवाली युवती है। मुनिकुमार पुण्डरीक को प्रथम दर्शन में ही आकर्षित होकर उसे प्राप्त करने का निश्चय कर लेती है। कपिञ्जल से पुण्डरीक की अस्वस्थता की सूचना पाकर वह रात्रि में उससे मिलने तरलिका के साथ निर्भय होकर सरोवर की तरफ जाती है। वहाँ पुण्डरीक की मृत्यु की दशा में पाकर उसके साथ सती होने का निर्णय लेती है। आकाशवाणी सुनकर कि "तुम प्राणों का परित्याग मत करना, तुम्हारा इसके साथ फिर मिलन होगा", महाश्वेता ने तपस्विनी के रूप में वहीं रहने का संकल्प किया। पिता के राजमहल में वैभवपूर्ण सुखमय जीवन का परित्याग करके निर्जन वन-प्रान्तर में रहकर कठोर तपस्यारत जीवन व्यतीत करना उसके दृढ़ संकल्पी व्यक्तित्व का ही द्योतक है।

पतिव्रता– महाश्वेता मानसिक रूप से पुण्डरीक को अपना पति स्वीकार कर चुकी थी। सामाजिक मान्यता के अभाव में भी पतिपरायण होकर एकनिष्ठ भारतीय आदर्श नारी का वह प्रतिनिधित्व करती है। वह दृढ़ चरित्र की स्वामिनी है। आकाशवाणी की सूचना पर वह पुण्डरीक के पुनर्आगमन तक तपस्विनी का जीवन व्यतीत करने का संकल्प लिए है। वैशम्पायन के प्रेम प्रदर्शन करने पर वह उसे शुक होने का श्राप देती है। यह उसके पातिव्रत्य धर्म पालन की गरिमा का स्पष्ट उदाहरण है।

व्यवहार-कुशल एवं कोमल हृदयवाली– महाश्वेता के व्यक्तित्व की मुख्य विशेषता उसकी व्यवहार-कुशलता एवं दयालुता है। वह उच्च कुलीन गन्धर्वराज हंस की पुत्री है। राजमहल में उसका बचपन व्यतीत हुआ। कोमल हृदयवाली होने के कारण ही वह तपस्वी कुमार पुण्डरीक को अपना हृदय दे देती है। वह राजकुमार चन्द्रापीड का आतिथ्य-सत्कार करती है। कादम्बरी उसकी प्रिय सहेली है। उसके कल्याण की कामना हेतु चन्द्रापीड को साथ लेकर वह उसके पास जाती है। अपने सम्पर्क में आने वाले केयूरक, पत्रलेखा आदि प्रत्येक व्यक्ति से वह बड़ी ही कुशलतापूर्वक व्यवहार करती है। सभी उसका सम्मान करते हैं। उसका व्यवहार चातुर्य उस समय भी प्रकट होता है जब पुण्डरीक अपनी अक्षमाला लौटाने के लिए कहता है तो वह अपनी एकावली उसके हाथ पर रखकर चली जाती है। वह सद्गुणी, निश्छल और सरल हृदया है। उसके चरित्र में कहीं भी अशिष्टता या कपटता का दर्शन नहीं होता है। चन्द्रापीड को वह अपनी आपबीती बिना कुछ छिपाये बता देती है। उसे सत्य के उद्घाटन करने में कभी लज्जा या ग्लानि का अनुभव नहीं करती है।

कठोर तपोव्रती– महाश्वेती कठोर तपोव्रती है। मुनिजनों का आदर करने वाली है। पुण्डरीक की दुरवस्था की सूचना देने जब कपिञ्जल राजमहल में जाकर उससे मिलता है तो महाश्वेता उसका चरण धुलकर अपने आँचल से साफ करती है। पुण्डरीक से मिलने के लिए वह गुरुजनों की आज्ञा लिये बिना ही रात्रि में ही यह सोचकर चल पड़ती है कि कहीं पुण्डरीक के प्राणों पर संकट न आ जाये। पुण्डरीक की मृत्यु पर वह पहले सती होने का निर्णय लेती है किन्तु आकाशवाणी एवं दिव्य पुरुष के कथन पर वह तपस्विनी बन कर वहीं निर्जन वन में गुफा में रहने लगती है। वह पाशुपत व्रत एवं कठोर अनुष्ठानों में अपना जीवन लगा देती है। यह क्रम तब तक चलता है जब तक शाप का अन्त नहीं हो जाता है।

स्पष्ट है कि महाश्वेता प्रेम, त्याग, करुणा, सहानुभूति, सरलता, निष्कपटता आदि अनेक मानवीय सद्गुणों से युक्त एक आदर्श भारतीय नारी सिद्ध होती है।

पत्रलेखा का चरित्र-चित्रण

पत्रलेखा का परिचय युवराज चन्द्रापीड को महादेवी द्वारा दी गयी आज्ञा से प्राप्त होता है–महाराज ने कुलूत देश को जीतकर उस देश के राजा की पुत्री पत्रलेखा को कैदियों के साथ यहाँ लाकर रनिवास की सेविकाओं के बीच नियुक्त कर दिया था। उसे अनाथ राजपुत्री जानकर मेरे मन में उसके प्रति प्रेम हो गया। मैंने उसे अपनी पुत्री के समान पाल-पोसकर बड़ा किया है। 'अब यह पानदान का डिब्बा लेकर चलने वाली तुम्हारी योग्य सेविका बने'– आयुष्मान् उसके प्रति साधारण सेविका की दृष्टि न रखें और अपनी भावनाओं के समान ही इसे भी चंचलता से रोकें। स्पष्ट है कि उज्जयिनी के राजा तारापीड की पत्नी महारानी विलासवती द्वारा पालित पुत्री पत्रलेखा की सामाजिक स्थिति विशिष्ट थी।

स्वस्थ एवं सौन्दर्यवती—लम्बी,स्वस्थ एवं सुगठित शरीरवाली पत्रलेखा रूपवती एवं आकर्षक व्यक्तित्ववाली थी। गन्धर्व राजपुत्री कादम्बरी उसके सौन्दर्य को देखकर चकित रह गई थी। पत्रलेखा के सौन्दर्य के सम्बन्ध में कादम्बरी की यह युक्ति 'अहो! मानुषीषु पक्षपातः प्रजापतेः' पूर्णतया सत्य प्रतीत होती है।

योग्य परिचारिका—चन्द्रापीड की ताम्बूल करङ्कवाहिनी पत्रलेखा सभी दृष्टिकोणों से सुयोग्य परिचारिका प्रमाणित होती

है। वह अपने कर्त्तव्य का पूर्णरूप से निर्वाह करती है। सेवाकाल में वह सदैव चन्द्रापीड के साथ रहती है। जिस समय चन्द्रापीड दिग्विजय के लिए उज्जयिनी से निकलता है और वह सुवर्णपुर पहुँचता है, हर जगह वह चन्द्रापीड के साथ रहती है। चन्द्रापीड का सानिध्य पत्रलेखा को सुख की अनुभूति करता है।

कर्त्तव्यपरायण—पत्रलेखा अपने कर्त्तव्य के प्रति सदैव जागरूक रहती है। उज्जयिनी हो या सुवर्णपुर, दिग्विजय यात्रा हो या कादम्बरी का महल सब जगह, हर समय वह अपने कर्त्तव्य के प्रति तत्पर रहती है। वह चन्द्रापीड की सेविका भी, सलाहकार भी और सखी भी है।

विश्वासपात्र—पत्रलेखा विश्वासपात्र सेविका है। वह छाया सदृश चन्द्रापीड के साथ सदैव उपस्थित रहती है। विश्वासपात्र होने के कारण ही चन्द्रापीड अपने मनोभावों को उससे प्रकट कर देता है। वह उससे कादम्बरी के प्रति अपने हृदय को भी खोल देता है। पत्रलेखा अपनी विश्वसनीयता के कारण कादम्बरी का भी विश्वास भाजन है। कादम्बरी भी चन्द्रापीड के प्रति मनोभावों को पत्रलेखा के समक्ष प्रकट कर देती है।

स्पष्ट है कि महाकवि बाण ने पत्रलेखा को कर्त्तव्यपरायण, स्वामिभक्त, आदर्श सेविका के रूप चित्रित किया है।

शुकनास का चरित्र-चित्रण

अवन्ति में उज्जयिनी के राजा तारापीड का प्रधानमंत्री शुकनास का चरित्र अपने विशिष्ट गुणों के कारण सर्वश्रेष्ठ है। शुकनास की बुद्धि बड़े-बड़े कार्यों के संकट में भी स्थिर रहती थी। राजा तारापीड प्रजा को निश्चिन्त करके राज्य का भार मंत्री शुकनास के ऊपर डालकर सुख से रहने लगा था। शुकनास ने अपनी बुद्धि के बल से उस महान राज्य के भार को सरलता से धारण कर लिया था। वह धीर-गम्भीर, विद्वान एवं राज्य संचालन में कुशल ब्राह्मण था। वह महाराज तारापीड का विश्वास पात्र था।

निर्भीक एवं कर्त्तव्यनिष्ठ—शुकनास के चरित्र की मुख्य विशेषता उसकी कर्त्तव्यनिष्ठता है। वह राज्य की सेवा को अपना परम धर्म मानता है वह समयानुसार राज्य के हित में निर्णय लेता है और अपने कार्य से राज्य का हित करता है। वह लगन एवं पूर्ण निष्ठा के साथ राज्य के समस्त कार्यों का संपादन करता है। निर्भीक स्वभाव, विवेकशीलता, दूरदर्शिता, अनुभव परिपक्वता का दर्शन उस समय स्पष्ट परिलक्षित होता है जब वह युवराज चन्द्रापीड को अनेक प्रकार के उपदेश देकर उसे सावधान करता है। वह उसे राजा का कर्त्तव्य सिखाता है।

राज्य के प्रति समर्पित— प्रधानमंत्री शुकनास राज्य एवं राजा के प्रति एकनिष्ठ एवं समर्पित है। वह राज्य एवं प्रजा के कल्याण में सदैव संलग्न रहता है। चन्द्रापीड के जन्म के अवसर पर उसकी प्रसन्नता देखने लायक होती है। युवराज पद पर जब चन्द्रापीड का राज्याभिषेक किया जाता है तो वह उसे बहुविधि उपदेश देकर भविष्य में लोकप्रिय राजा के रूप में तैयार करता है। उसके उपदेशों, सम्बोधन, चेतावनी से उसकी राज्यभक्ति परिलक्षित होती है।

महाराज तारापीड का विश्वासपात्र– प्रधानमंत्री शुकनास महाराज तारापीड का पूर्ण विश्वासपात्र मंत्री है। चन्द्रापीड को शिक्षा पूर्ण होने पर गुरु आश्रम से वापस लाने के लिए प्रबन्धमंत्री शुकनास ही करता है। चन्द्रापीड को इस सन्दर्भ में राजा के पत्र के साथ मंत्री शुकनास का भी पत्र मिलता है। इस उदाहरण से शुकनास की गरिमा एवं विश्वासपात्रता का परिचय मिलता है। राजा तारापीड राज्य संचालन का भार शुकनास पर डालकर चिन्ता रहित हो जाते हैं।

धीर-गंभीर स्वभाव— ब्राह्मण मंत्री शुकनास सम्पूर्ण राज्य संचालन की शक्ति पाकर भी अत्यन्त सरल, विनम्र, राजा एवं प्रजा का कल्याण चाहने वाला सद्चरित्र व्यक्ति ही सिद्ध होता है। वह राजनैतिक संकट प्रकट होने पर भी अविचलित रहता है। वह सभी समस्याओं का समाधान अपने विवेक एवं बुद्धि कौशल से करता है।

दूरदृष्टिवाला— प्रधानमंत्री शुकनास अनुभवी एवं दूरदर्शी है। वह धन-वैभव से उत्पन्न बुराई को समझता है। लक्ष्मी के प्रभाव से व्यक्ति दूषित विचारवाला हो जाता है। इसलिए युवराज चन्द्रापीड को लक्ष्मी की विशेषताओं से अवगत कराता है। शुकनासोपदेश इसका सर्वोत्तम उदाहरण है।

इस आधार पर हम कह सकते हैं कि शुकनास के चरित्र में वे सभी गुण मौजूद हैं जो एक राजभक्त मंत्री में होना चाहिए। वह धैर्यवान, निर्भीक, निस्पृह, बुद्धिमान और निष्ठावान मंत्री है।

●●

महाकविश्रीबाणभट्टविरचितम्

चन्द्रापीडकथा

(पूर्वार्द्ध भाग : शब्दार्थ, हिन्दी अनुवाद, व्याकरणात्मक टिप्पणी एवं प्रश्नोत्तर)

चन्द्रापीडकथा

1. आसीत् पुरा शूद्रको नाम राजा। तस्य विदिशाभिधाना राजधान्यासीत्। स तस्याम्, असकृदालोचितनीतिशास्त्रैः निर्मलमनोभिः अमात्यैः परिवृतः, समानवयोविद्यालङ्कारैः राजपुत्रैः सह रममाणः, प्रथमे वयसि वर्तमानोऽपि वनितासुखपराङ्मुखः सुखमतिचिरमुवास। एकदा तम्, आस्थानमण्डपगतम् दक्षिणापथात् आगता काचित् चण्डाल-कन्यका पञ्जरस्थं शुकम् आदाय, समुपसृत्य ''देव! विदितसकलशास्त्रार्थः, राजनीतिकुशलः, पुराणेतिहासकथासु निपुणः, सकलभूतलरत्नभूतः, वैशम्पायनो नाम शुकोऽयम् आत्मीयः क्रियाताम्' इत्युक्त्वा, पञ्जरं पुरो निधाय, अपससार। अपसृतायां तस्याम्, स विहङ्गराजः राजाभिमुखः भूत्वा, स्पष्टतरवर्णया गिरा कृतजयशब्दः राजानम् उद्दिश्य अर्याम् इमाम् पपाठ–

शब्दार्थ– पुरा = प्राचीनकाल में। विदिशाभिधाना = विदिशा नाम की। राजधान्यासीत् = राजधानी थी। तस्मात् = उसमें। असकृदालोचितम् = सूक्ष्म विवेचक। नीतिशास्त्रैः = नीतिशास्त्र की। निर्मलमनोभिः = पवित्र मनवाले। अमात्यैः = मंत्रियों द्वारा। परिवृतः = चारों तरफ से घिरा हुआ। समानवयोविद्यालङ्कारैः = समतुल्य अवस्था, विद्या एवं आभूषणोंवाले। राजपुत्रैः सहः = राजकुमारों के साथ। रममाणः = आनन्द मनाता हुआ। प्रथमे वयसि = युवावस्था में। वनितासुखपराङ्मुखः = स्त्री-सुख से विरक्त। सुखमतिचिरमुवास = बहुत समय तक सुखपूर्वक रहा। एकदा = एक बार। दक्षिणापथात् = दक्षिण दिशा से। आगता = आयी हुई। चाण्डालकन्यका = चाण्डाल की कन्या। पञ्जरस्थं = पिंजड़े में स्थित। शुकम् आदाय = तोते को लेकर। समुपसृत्य = पास में आकर। विदितसकलशास्त्रार्थः सम्पूर्ण शास्त्रों को जानने वाला। राजनीतिकुशलः = राजनीति में प्रवीण। पुराणेतिहासकथासु = पुराण, इतिहास एवं कथाओं में। सकलभूतलरत्नभूतः = सम्पूर्ण पृथ्वी का एक रत्न सदृश। आत्मीयः क्रियताम् = आप स्वीकार करें। इत्युक्त्वा = ऐसा कहकर। पञ्जरं = पिंजड़े को। पुरो निधाय = सामने रखकर। अपससार = हट गई। अपसृतायां तस्याम् = उसके हट जाने पर। राजाभिमुखः भूत्वा = राजा की तरफ मुख करके। स्पष्टतरवर्णया = स्पष्ट वर्णोवाली। गिरा = वाणी से। कृतजयशब्दः = जयशब्द का उच्चारण किया। राजानम् उद्दिश्य = राजा को लक्ष्य करके। आर्याम् इमाम् पपाठ = इस आर्या छन्द को पढ़ा।

हिन्दी अनुवाद– प्राचीनकाल में शूद्रक नामक एक राजा था। विदिशा नाम की नगरी उसकी राजधानी थी। वह उसमें बार-बार नीतिशास्त्र की मीमांसा करके स्वच्छ मनोवृत्तियों वाले मंत्रियों से युक्त तथा अपने ही समान आयु, विद्या और आभूषणों से सुशोभित राजकुमारों के साथ आनन्द करता हुआ, युवावस्था के होते हुए भी स्त्री-सुख से अनासक्त होकर बहुत दिनों तक सुख से निवास करता रहा। एक बार जब वह सभा-मंडप में बैठा हुआ था कि दक्षिण दिशा से एक चाण्डालकन्या पिंजड़े में एक तोता लिये हुए आयी और उसके समीप जाकर बोली, ''महाराज यह तोता सम्पूर्ण शास्त्रों का ज्ञाता, राजनीति में कुशल, पुराण, इतिहास तथा कथा में निपुण और पृथ्वी का एक रत्न है। इसका नाम वैशम्पायन है। इसे आप स्वीकार करें।'' इस प्रकार कहकर वह पिंजड़े को राजा के सामने रखकर हट गयी। उसके हट जाने पर उस तोते ने राजा की ओर मुँह करके स्पष्ट शब्दों में 'जय' शब्द का उच्चारण किया और राजा को लक्ष्य करके यह आर्या छन्द पढ़ा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– आसीत् = (अनद्यतने लङ्, अस् धातु, लङ् लकार, अन्य पुरुष, एकवचन) था। पुरा = अव्यय। विदिशाभिधाना = विदिशा अभिधानं यस्याः सा, बहुव्रीहि समास। राजधान्यासीत् = राजधानी + आसीत्। असकृदालोचितम् नीतिशास्त्रैः=असकृत् आलोचितम् नीतिशास्त्रम् यैः तैः। निर्मलमनोभिः = निर्मलानि मनांसि येषाम् तैः। समानवयोविद्यालङ्कारैः = समानम् वयः विद्या अलङ्कारश्च येषां तैः। वनितासुखपराङ्मुखः = वनितायाः सुखम् तेन पराङ्मुखः। सुखमतिचिरमुवास = सुखम्+अतिचिरम्+उवास। चांडालकन्यका = चांडालस्य कन्यका, षष्ठी तत्पुरुष। आदाय = आ+दा+ल्यप्। समुपसृत्य = (समुप्+सृ+ल्यप्) विदितसकलशास्त्रार्थः = विदितः सकल शास्त्रस्य अर्थः येन सः, बहुव्रीहि। राजनीतिकुशलः = राजनीतिषु कुशलः, तत्पुरुष। पुराणेतिहासकथासु = पुराणश्च इतिहासश्च कथा च पुराणेतिहासकथा तासु, द्वन्द्व समास। सकलभूतलरत्नभूतः = सकलस्य भूतलस्य रत्नभूतः यः सः। इत्युक्त्वा = इति+उक्त्वा। निधाय निधु+ल्यप्। पपाठ = पठ् धातु, लिट् लकार, अन्य पुरुष, एकवचन। आर्या छन्द का लक्षण है–

यस्याः प्रथमे पादे द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि।
अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश साऽऽर्या॥

अर्थात् इसके प्रथम पाद में 12 मात्राएँ होती हैं, द्वितीय में 18, तृतीय में 12 और चतुर्थ में 15 मात्राएँ होती हैं।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. ''देव! विदितसकलशास्त्रार्थः, राजनीतिकुशलः, पुराणेतिहासकथासु निपुणः, सकलभूतलरत्नभूतः वैशम्पायनो नाम शुकोऽयम्।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– देव! सम्पूर्ण शास्त्रों का ज्ञाता, राजनीति में कुशल, पुराण, इतिहास और कथा में निपुण, सम्पूर्ण भूमण्डल का एकमात्र रत्नस्वरूप वैशम्पायन नाम का तोता है।

प्रश्न 3. शूद्रकः कः आसीत्?

उत्तर– शूद्रकः विदिशायाः राजा आसीत्।

प्रश्न 4. शूद्रकस्य राजधानी का आसीत्?

उत्तर– शूद्रकस्य राजधानी विदिशाभिधाना नगरी आसीत्।

प्रश्न 5. शूद्रकः कैः परिवृतः आसीत्?

उत्तर– शूद्रकः अमात्यैः परिवृतः आसीत्।

प्रश्न 6. को नाम प्रथमे वयसि वर्तमानः आसीत्?

उत्तर– राजा शूद्रकः प्रथमे वयसि वर्तमानः आसीत्।

प्रश्न 7. चाण्डाल कन्यका कुतः आगता?

उत्तर– चाण्डाल कन्यका दक्षिण पथात् आगता।

प्रश्न 8. वैशम्पायनः कः आसीत्?

उत्तर– वैशम्पायनः शुकः आसीत्।

प्रश्न 9. शुकः किं नाम आसीत्?

उत्तर– शुकः वैशम्पायनो नाम आसीत्।

प्रश्न 10. नरपतेः पुरः पञ्जरं निधाय को अपससार?

उत्तर– नरपतेः पुरः पञ्जरं निधाय चाण्डालकन्यका अपससार।

2. ''स्तनयुगमश्रुस्नातं समीपतरवर्तिहृदयशोकाग्नेः।
चरति विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम्॥''

अन्वय– भवतो रिपुस्त्रीणाम् स्तनयुगम् हृदयशोकाग्नेः समीपतरवर्ति अश्रुस्नातम् विमुक्ताहारम् व्रतमिव आचरति।

शब्दार्थ– भवतो = आपके। रिपुस्त्रीणाम् = शत्रु की स्त्रियों के। स्तनयुगम् = दोनों स्तनों के। हृदय शोकाग्नेः = हृदय की शोकाग्नि के। समीपतरवर्ति = समीप में स्थित। अश्रुस्नातम् = आँसुओं से स्नान किये हुए। व्रतमिव आचरति = व्रत में लगे हुए के समान।

हिन्दी अनुवाद– 'आपके शत्रुओं की स्त्रियों के दोनों स्तन (नेत्रों से निरन्तर बहनेवाले) आँसुओं में स्नान करके, हृदय के शोकाग्नि के अत्यन्त निकट स्थित होकर मोती की माला (व्रती-पक्ष में भोजन) का त्याग करके मानो व्रत (तपस्या) कर रहे हैं।'

व्याकरणात्मक टिप्पणी– रिपुस्त्रीणाम् = रिपूणाम् स्त्रियः तासाम्। स्तनयुगम् = स्तनस्य+युगम्। शोकाग्नेः = हृदयस्य शोकः तस्याग्निः तस्य। अश्रुस्नातम् = अश्रुणा स्नातम्।

विशेष– भाव यह है कि आपने समस्त शत्रुओं का विनाश कर दिया है, अतएव उनकी स्त्रियाँ सदा शोक में विलाप करती हैं, जिससे उनके दोनों स्तन आँसुओं में स्नान करते रहते हैं, हृदय में स्थित शोकाग्नि के अत्यन्त निकट रहते हैं और विमुक्ताहार (मोतियों की माला से अलग) रहते हैं। इस प्रकार मानो वे तपस्या करते हैं। तपस्वी भी त्रिकाल स्नान करता है, होमाग्नि के अत्यन्त निकट रहता है और विमुक्ताहार (भोजन का त्याग किये) रहता है।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. स्तनयुगमश्रुस्नातं समीपतरवर्ति हृदयशोकाग्नेः। चरति विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम्॥'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– आपके शत्रुओं की स्त्रियों के दोनों स्तन (नेत्रों से निरन्तर बहनेवाले) आँसुओं में स्नान करके, हृदय की शोकाग्नि के अत्यन्त निकट स्थित होकर मोती की माला का त्याग करके मानो व्रत (तपस्या) कर रहे हैं।

प्रश्न 3. शुको वैशम्पायनः कामार्या पपाठ?

उत्तर– शुको वैशम्पायनः –

स्तनयुगमश्रुस्नातं समीपतरवर्तिहृदयशोकाग्नेः।
चरति विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम्॥

इतिमार्या पपाठ।

प्रश्न 4. विमुक्ताहारं किं व्रतमिव चरति?

उत्तर– विमुक्ताहारं शूद्रकस्य रिपुस्त्रीणां स्तनयुगं व्रतमिव चरति।

प्रश्न 5. अस्य श्लोकस्य वक्ता कोऽस्ति?

उत्तर– अस्य श्लोकस्य वक्ता शुकः अस्ति।

3. राजा तु तां श्रुत्वा सञ्जातविस्मयः तमेवमब्रवीत्। आवेदयतु भवानादितः प्रभृतिः कात्स्न्र्येन आत्मनो वृत्तम्। जन्म कस्मिन् देशे? का माता? कस्ते पिता? कथं शास्त्राणां परिचयः? कियद्वा वयः? कथं पञ्जरबन्धः? कथं चाण्डालहस्तगमनम्? इह वा कथमागमनमिति।

शब्दार्थ– श्रुत्वा = सुनकर। सञ्जातविस्मयः = आश्चर्यचकित होकर। तमेवमब्रवीत् = उससे इस प्रकार कहा। आवेदयतु = बताओ। भवानादितः प्रभृतिः = आप प्रारम्भ से ही। कात्स्न्र्येन = विस्तार के साथ। आत्मनोवृत्तम् = अपना जीवन-चरित्र।

हिन्दी अनुवाद– राजा ने उस तोते की वाणी को सुनकर चकित होकर उससे इस प्रकार कहा, "आप आरम्भ से ही विस्तार के साथ अपना आत्मचरित्र सुनाइए। जन्म किस देश में हुआ? माता कौन हैं? तुम्हारे पिता कौन हैं? तुम पिंजड़े में कैसे बँध गये? चाण्डाल के हाथों कैसे पड़े? और तुम्हारा यहाँ आना कैसे हुआ?

व्याकरणात्मक टिप्पणी– श्रुत्वा = श्रु+क्त्वा। सञ्जातविस्मयः = संजातः विस्मयः यस्मिन् सः। तमेवमब्रवीत् = तम्+एवम्+अब्रवीत्। आवेदयतु = लोट् लकार, अन्यपुरुष, एकवचन। कियद्वा = कियत्+वा । कस्ते = कः+ते। पञ्जरबंधः = पञ्जरे बंधः। चांडालहस्तगमनम् = चांडालस्य हस्तयोः गमनम्।

एवं सबहुमानम् अवनिपतिना पृष्टः वैशम्पायनः मुहूर्तमिव ध्यात्वा सादरम् अब्रवीत्-देव! महतीयं कथा। यदिकौतुकम्, आकर्ण्यताम्।

शब्दार्थ– एवं = इस प्रकार। सबहुमानम् = अत्यन्त आदर के साथ। अवनिपतिना = भूपति द्वारा। पृष्टः = पूछा गया। मुहूर्तमिव = थोड़ी देर। ध्यात्वा = ध्यान करके। सादरम् = आदर के साथ। अब्रवीत् = कहा। महतीयम् = यह बहुत बड़ी। कौतुकम् = उत्सुकता। आकर्ण्यताम् = सुनिए।

हिन्दी अनुवाद– इस प्रकार अत्यन्त आदर के साथ राजा के पूछने पर थोड़ी देर सोचकर वैशम्पायन नामक तोते ने आदर के साथ कहा, "राजन् यह बहुत बड़ी कथा है। यदि आप इस कथा को सुनने को उत्सुक हैं तो सुनिए–

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अवनिपतिना = अवनेः पतिः तेन। सादरम् = आदरेण सहितम्। महतीयम् = महती+इयम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. 'आवेदयतु भवानादितः प्रभृतिः कात्स्न्र्येन आत्मनो वृत्तम्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– आप आरम्भ से ही विस्तार के साथ अपना आत्मचरित्र सुनाइए।

प्रश्न 3. राज्ञा वैशम्पायनं प्रति कृतेषु प्रश्नेषु कांश्चित् त्रीन् प्रश्नान् लिख्?

उत्तर– राज्ञा वैशम्पायनं प्रति कृतेषु प्रश्नेषु त्रयः प्रश्नाः इमे सन्ति। तथाहि–1. जन्म कस्मिन् देशे? 2. का माता? 3. कस्ते पिता?

प्रश्न 4. चाण्डालहस्तगमनं कस्य?

उत्तर– चाण्डालहस्तगमनं वैशम्पायनस्य।

प्रश्न 5. अवनिपतिना पृष्टो वैशम्पायनो मुहूर्त्तमिव ध्यात्वा किमब्रवीत्?

उत्तर– अवनिपतिना पृष्टो वैशम्पायनो मुहूर्तमिव ध्यात्वा 'देव! महतीयं कथा, यदि कौतुकम् आकर्ण्यताम्' इत्यब्रवीत्।

3. अस्ति मध्यदेशालंकारभूता मेखलेव भुवः विन्ध्याटवी नाम। तस्यां च दण्डकारण्यान्तःपाति, गोदावर्या सरिता परिगतम् आश्रम-पदम् आसीत्। तस्य च नातिदूरे पम्पाभिधानस्य पद्मसरसः पश्चिमे तीरे महान् जीर्णः शाल्मलीवृक्षः। तत्र च शाखाग्रेषु कोटरोदरेषु विरचितकुलायानि नानादेशसमागतानि शुकशकुनिकुलानि प्रतिवसन्ति स्म। तत्रैकस्मिन् जीर्णकोटरे जायया सह निवसतः पश्चिमे वयसि वर्तमानस्य पितुः अहमेवैकः सूनुरभवम्। अतिप्रबलया ममैव जायमानस्य प्रसववेदनया जननी मे लोकान्तरमगमत्। तातस्तु मे सुतस्नेहात् अभिमतजायाविनाशशोकम् अन्तः निगृह्य, मत्संवर्धनपरः अभवत्।

शब्दार्थ– मध्यदेशालङ्कारभूता = मध्यदेश के अलंकार जैसी। मेखलेव = करधनी जैसी। भुवः = पृथ्वी की। तस्याम् = उसमें। दण्डकारण्यान्तः पातिः = दण्डकारण्य के बीच में। गोदावर्या सरिता = गोदावरी नदी से। परिगतम् = किनारे पर स्थित। आश्रम पदम् = आश्रम स्थान। नातिदूरे = समीप में। पंपाभिधानस्य = पंपा नामवाले। पद्मसरसः = कमलयुक्त तालाब के। पश्चिम तीरे = पश्चिमी तट पर। महान् जीर्णः = बड़ा और बहुत पुराना। शाल्मलीवृक्षः = सेमल का वृक्ष। शाखाग्रेषु = शाखाओं की चोटी पर। कोटरोदरेषु = खोखलों के भीतर। विरचितकुलायानि = घोंसला बनाने वाले। समागतानि = आये हुए। शकुनिकुलानि = पक्षियों के झुण्ड। प्रतिवसति स्म = रहते थे।। तत्रैकस्मिन् = वहाँ एक। जीर्णकोटरे = पुराने खोखले में। जायया = स्त्री। निवसतः = रहते हुए। पश्चिमे वयसि वर्तमानस्य = वृद्धावस्था में रहते हुए। पितुः अहमेवैकः = पिता का मैं ही एक। सुनुः अभवम् = पुत्र हुआ। अतिप्रबलया प्रसववेदनया = अत्यन्त तीव्र प्रसव वेदना से। ममैव जायमानस्य = मेरे जन्म लेते समय। लोकान्तरमगमत् = दूसरे लोक को चली गई। अभिमतजायविनाशशोकम् = प्रिय-पत्नी की मृत्यु का शोक। अन्तः निगृह्य = अन्दर ही दबाकर। मत्संवर्धनपरः = मेरे पालन-पोषण में तल्लीन।

हिन्दी अनुवाद– मध्य देश के आभूषण तथा पृथ्वी की मेखला के समान विन्ध्य पर्वत पर स्थित एक छोटा-सा जंगल है। उसमें दंडक नाम के वन के बीच गोदावरी नदी के किनारे एक आश्रम था। उसके समीप ही कमलों से युक्त पम्पा नाम के तालाब के पश्चिमी किनारे पर एक बहुत बड़ा पुराना सेमल का पेड़ था। वहाँ डालियों की चोटी तथा पुराने खोखलों में घोंसले

बनाकर विभिन्न देशों से आये हुए तोतों और पक्षियों के झुण्ड रहते थे। वहीं एक पुराने खोखले में मेरे पिता अपनी पत्नी के साथ रहते थे। उनकी अन्तिम अवस्था में मैं ही एकमात्र पुत्र उत्पन्न हुआ। मेरे जन्म लेते समय प्रसव की अत्यन्त पीड़ा के कारण मेरी माता का देहान्त हो गया। पुत्र-प्रेम के कारण मेरे पिता प्रिय पत्नी के मरने का शोक हृदय के भीतर ही दबाकर मेरे पालन-पोषण में तल्लीन हो गये।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– मध्यदेशालङ्कारभूता = मध्यदेशस्य अलङ्कारभूता। मेखलेव = मेखला+इव। दंडकारण्यान्तःपाति = दंडकारण्यस्य अन्तःपाति। शाखाग्रेषु = शाखयाः अग्रेषु। कोटरोदरेषु = कोटराणाम् उदरेषु। विरचितानि कुलायानि = विरचितकुलायानि = विरचितानि कुलायानि यैः तानि। नानादेशसमागतानि शुकशकुनिकुलानि = नानादेशेभ्यः समागतानि, शुकानाम् शकुनीनाम् च कुलानि। तत्रैकस्मिन् = तत्र+एकस्मिन्। अभिमतजायाविनाशशोकम् = अभिमतायाः जायायाः विनाशस्य शोकम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश के पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश के पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. 'अतिप्रबलया ममैव जायमानस्य प्रसववेदनया जननी मे लोकान्तरमगमत्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– मेरे जन्म लेते समय प्रसव की अत्यन्त पीड़ा के कारण मेरी माता का देहान्त हो गया।

प्रश्न 3. मध्यदेशालंकारभूता मेखलेव भुवः कः अस्ति?

उत्तर– मध्यदेशालंकारभूता मेखलेव भुवः विन्ध्याटवी अस्ति।

प्रश्न 4. आश्रम पदम् केन सरिता परिगतम् आसीत्?

उत्तर– गोदावर्या सरिता परिगतम् आश्रम पदम् आसीत्।

प्रश्न 5. पम्पाभिधानस्य पद्मसरः पश्चिमे तीरे कः वृक्षः आसीत्?

उत्तर– पम्पाभिधानस्य पद्मसरः पश्चिमे तीरे महान् जीर्णः शाल्मलीवृक्षः आसीत्।

5. एकदा तु प्रभाते सहसैव तस्मिन् महावने मृगयाकोलाहलध्वनिरुदचलत्। आकर्ण्य च तमहं समीपवर्तिनः पितुः पक्षपुटान्तरमविशम्। अथ च शैशवात् किमिदम् इति सञ्जातकुतूहलः पितुरुत्संगात् ईषदिव निष्क्रम्य, कोटरस्थ एव शिरोधरां प्रसार्य तामेव दिशं चक्षुः प्राहिणवम्। तस्मात् वनान्तरात् अभिमुखम् आपतत् अतिभयजनकम् शबरसैन्यमद्राक्षम्।

शब्दार्थ– एकदा = एक बार। प्रभाते = प्रातः काल। सहसैव = अचानक ही। तस्मिन् = उस। महावने = जंगल में। मृगया = शिकार। कोलाहलध्वनिः = हल्ले की ध्वनि। उद्चलत् = हुई, उठी। आकर्ण्य = सुनकर। तम् = उसको। समीपवर्तिनः = समीप में स्थित। पितुः = पिता के। पक्षपुटान्तरम् = पंखों के नीचे। अविशम् = घुस गया। शैशवात् = बचपन के कारण। किमिदम् इति = यह क्या है? संजातकुतूहलः = उत्कण्ठित होकर। पितुरुत्संगात् = पिता की गोद से। ईषदिव = थोड़ा-सा। निष्क्रम्य = निकलकर। कोटरस्थ एव = खोखले में बैठा हुआ ही। शिरोधरां = गर्दन को। प्रसार्य = फैलाकर। तामेव दिशं = उसी दिशा की ओर। चक्षुः प्राहिणवम् = निगाह भेजी (देखने लगा)। वनान्तरात् = वन के भीतर से। अभिमुखम् = अपनी ओर, सम्मुख। आपतत् = आते हुए। अतिभयजनकम् = अत्यन्त भयभीत करने वाले। शबरसैन्यम् = भीलों की सेना को। अद्राक्षम् = देखा।

हिन्दी अनुवाद– एक बार प्रातःकाल ही अचानक उस जंगल में शिकार खेलने का हल्ला होने लगा। उसे सुनकर मैं पास ही में स्थित पिता के पंखों में घुस गया। बचपन के कारण मुझमें यह कुतूहल उत्पन्न हुआ कि यह क्या हो रहा है? इसे देखने के लिए पिता के पंखों से थोड़ा-सा निकल कर खोखले में बैठे-बैठे गर्दन को फैलाकर उसी दिशा की ओर निगाहें दौड़ाने लगा और उस जंगल से अपनी ओर आती हुई अत्यन्त डरावनी भीलों की सेना को देखा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– सहसैव = सहसा+एव, वृद्धि सन्धिः। मृगयाकोलाहलध्वनिः = मृगयायाः कोलाहलः तस्य ध्वनि तत्पुरुष समास। सञ्जातकुतूहलः = संजातः कुतूहलः यस्मिन् सः। पितुरुत्संगात् = पितुः+उत्संगात्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. 'आकर्ण्य च तमहं समीपवर्तिनः पितुः पक्षपुटान्तरमविशम्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– उसे सुनकर मैं पास में ही स्थित पिता के पंखों में घुस गया।

प्रश्न 3. तस्मिन् महावने कस्य ध्वनिः उद्चलत्?

उत्तर– तस्मिन् महावने मृगयाकोलाहलध्वनिरुदचलत्।

प्रश्न 4. कोलाहल ध्वनिः आकर्ण्य कुत्र अविशम्?

उत्तर– कोलाहल ध्वनिः आकर्ण्य समीपवर्तिनः पितुः पक्षपुटान्तमविशम्।

प्रश्न 5. वनान्तरात् अभिमुखम् आपतत् केन अद्राक्षम्?

उत्तर– वनान्तरात् अभिमुखम् आपतत् शबरसैन्यमद्राक्षम्।

6. मध्ये च तस्य, प्रथमे वयसि वर्तमानम् आजानुलम्बेन भुजयुगलेन उपशोभितम्, अनेकवर्णैः श्वभिः अनुगम्यमानम्, मातङ्गकनामानं शबरसेनापतिमपश्यम्। सोऽयम् अटवीभ्रमणसमुद्भवं श्रमम् अपनिनीषुः आगत्य तस्यैव शाल्मलीतरोः अधः छायायाम् उपाविशत्। अथ तस्मात् सरसः सलिलम् अत्यच्छम् कमलिनीपत्रपुटेन आदाय, आपीय, धौतपङ्का निर्मलाः मृणालिकाश्च अदशत्। अपगतश्रमश्चोत्थाय, सकलेन तेन शबरसैन्येन अनुगम्यमानः शनैः शनैः अभिमतं दिगन्तरम् अयासीत्। एकमस्तु जरच्छबरः पिशितार्थी, तस्मिन्नेव तरुतले मुहूर्तमिव व्यलम्बत्।

शब्दार्थ– मध्ये = बीच में। तस्य = उसके। प्रथमे वयसि वर्तमानम् = नौजवान्। आजानुलम्बेन = घुटने तक लटकी हुई। भुजयुगलेन = दोनों भुजाओं से। उपशोभितम् = सुशोभित। अनेकवर्णैः = अनेक रंगों वाले। श्वभिः = कुत्तों से। अनुगम्यमानम् = पीछा किया जाने वाला। मातङ्गकनामानम् = मातङ्ग नाम वाले। शबरसेनापतिम् = भीलों के सेनापति को। अपश्यम् = देखा। अटवीभ्रमणसमुद्भवम् = जंगल में भ्रमण से उत्पन्न। श्रमम् = थकान को। अपनिनीषुः = दूर करने की इच्छावाला। आगत्य = आकर। अधः = नीचे। छायायाम् = छाया में। उपविशत् = बैठा। तस्मात् सरसः = उस तालाब से। सलिलम् = पानी। अत्यच्छम् = अत्यन्त निर्मल। कमलिनीपत्रपुटेन = कमल के पत्ते के दोने से। आदाय = लेकर। आपीय = पीकर। धौतपङ्का = धुली हुई कीचड़वाली। मृणालिका = कमल के डंठल को। अदशत् = खाया। अपगतश्रमश्चोत्थाय = थकान दूर होने पर उठकर। शनैः शनैः = धीरे-धीरे। अभिमतम् = इच्छित। दिगन्तरम् = दिशा की ओर। अयासीत् = चला गया। एकमस्तु = उसमें से एक। जरच्छबरः = बूढ़ा भील। पिशितार्थी = मांस का इच्छुक। तस्मिन्नेव = उसी। तरुतले = वृक्ष के नीचे। मुहूर्तमिव = थोड़ी देर। व्यलम्बत् = ठहर गया।

हिन्दी अनुवाद– उसके बीच में घुटनों तक लम्बी बाँहों वाले नौजवान भील सेनापति मातंग को भी देखा जिसके पीछे-पीछे कई रंगों के कुत्ते चले आ रहे थे। वह जंगल में घूमने की थकान दूर करने की इच्छा से उसी सेमल के पेड़ की छाया के नीचे आकर बैठ गया। उसने उस तालाब से कमल के पत्तों के दोने में स्वच्छ पानी लाकर पिया और कीचड़ धोकर साफ की गयी कमल की डंठल को खाया। थकान दूर हो जाने पर धीरे-धीरे वह अपनी इच्छित दिशा की ओर चल दिया। सारी सेना भी उसके पीछे-पीछे चल पड़ी। उनमें से एक मांस चाहने वाला बूढ़ा भील उसी वृक्ष के नीचे थोड़ी देर तक ठहर गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अटवीभ्रमणसमुद्भवम् = अटव्याम् भ्रमणेन समुद्भवम्। अपनिनीषुः = अपनेतुम् इच्छुः। कमलिनीपत्रपुटेन = कमलिन्याः पत्रम् तस्य पुटम् तेन। धौतपङ्का = धौतः पङ्कः येभ्यः ताः। अपगतश्रमश्चोत्थाय = अपगतश्रमः+च+उत्थाय। जरच्छबरः = जरत+शबरः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश के पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश के पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. 'अपगतश्रमश्चोत्थाय, सकलेन तेन शबरसैन्येन अनुगम्यमानः शनैः शनैः अभिमतं दिगन्तरम् अयासीत्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– थकान दूर हो जाने के बाद वह उठकर (अपनी) सम्पूर्ण शबर सेनाओं के द्वारा पीछा किया जाता हुआ धीरे-धीरे अपनी अभीष्ट दिशा की ओर चला गया।

प्रश्न 3. प्रथमे वयसि वर्तमानं कः आसीत्?

उत्तर– प्रथमे वयसि वर्तमानं शबरसेनापतिः आसीत्।

प्रश्न 4. शबरसेनापतिः कः नाम आसीत्?

उत्तर– शबरसेनापतिः मातङ्ग नाम आसीत्।

प्रश्न 5. शबरसेनापतिः केन पत्रपुटेन सलिलम् अपिबत्?

उत्तर– शबरसेनापतिः कमलिनीपत्रपुटेन सलिलम् अपिबत्।

7. अन्तरिते च शबरसेनापतौ स जीर्णशबरः पिबन्निव अस्माकम् आयूंषि तं वनस्पतिं सुचिरम् आमूलात् अपश्यत्। अथ तं पादपम् आरुह्य शाखान्तरेभ्यः कोटरेभ्यश्च शुकशावकान् गृहीत्वा अपगतासूंश्च कृत्वा क्षितौ अपातयत्। तातस्तु तं महान्तं प्राणहरम् उपप्लवम् आलोक्य, मरणभयात्, उद्भ्रान्ततारकां दृशम् इतस्ततो दिक्षु विक्षिपन् स्नेहपरवशः मद्रक्षणाकुलः पक्षसंपुटेन आच्छाद्य कोडविभागेन माम् अवष्टभ्य तस्थौ।

शब्दार्थ– अन्तरित = आँख से ओझल हो जाने पर। जीर्णशबरः = वृद्ध भील। पिबन्निव = पीता हुआ। अस्माकम् = हम लोगों के। आयूंषि = आयु को। वनस्पतिं = वृक्ष को। सुचिरम् = देर तक। अपश्यत् = देखा। आमूलात् = जड़ से। पादप = वृक्ष पर। आरुह्य = चढ़कर। शाखान्तरेभ्यः = डालियों से। कोटरेभ्यः = खोखलों से। शुकशावकान् =तोतों के बच्चों को। गृहीत्वा = पकड़कर। अपगतासून् = प्राण रहित। क्षितौ = पृथ्वी पर। अपातयत् = गिरा दिया। तातस्तु = और पिता ने। तं महान्तम् = उस बहुत बड़े। प्राण हरणम् = प्राणों का हरण करने वाले। उपप्लवम् = विपत्ति को। आलोक्य = देखकर। मरणभयात् = मृत्यु के भय से। उद्भ्रान्ततारकाम् = चंचल पुतलियोंवाली। दृशम् = आँखों को। इतस्ततः = इधर-उधर। विक्षिपन् = डालते हुए। मद्रक्षणाकुलः = मेरी रक्षा के लिए व्याकुल। पक्षसंपुटेन = दोनों पंखों से। आच्छाद्य = ढँक कर। क्रोडविभागेन = गोद से। अवेष्टभ्यः = चिपकाकर। तस्थौ = बैठ गये।

हिन्दी अनुवाद– उस भील सेनापत्ति के आँखों से ओझल हो जाने पर उस बूढ़े भील ने हम लोगों की आयु को पीता हुआ-सा बड़ी देर तक उस पेड़ को नीचे से ऊपर देखा। फिर पेड़ पर चढ़कर डालियों और घोंसलों से तोतों के बच्चों को पकड़-पकड़ मार-मार करके वह उन्हें पृथ्वी पर गिराने लगा। मेरे पिता ने उस प्राणों को नष्ट करने वाली भयंकर विपत्ति को देख मृत्यु के भय से चंचल पुतलियों वाली आँखें इधर-उधर दौड़ायीं और प्रेम के वशीभूत मेरी रक्षा के लिए व्याकुल होकर मुझे अपने पंखों के भीतर ढँककर गोद से चिपका कर वह बैठ गये।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– पिबन्निव = (पिबन्+इव) तातस्तु = (तातः+तु) मरणभयात् = (मरणस्य भयम् तस्मात्) तस्मिन्नेव = तस्मिन्+एव। मुहूर्तमिव = मुहूर्तम्+इव।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. 'स्नेहपरवशः मद्रक्षणाकुलः पक्षसंपुटेन आच्छाद्य कोडविभागेन माम् अवष्टभ्य तस्थौ।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– प्रेम के वशीभूत मेरी रक्षा के लिए व्याकुल होकर मुझे अपने पंखों के भीतर ढँककर गोद से चिपकाकर वह बैठ गये।

प्रश्न 3. जीर्णशबरः किम् अपश्यत्?

उत्तर– जीर्णशबरः तं वनस्पतिं सुचिरम् आमूलात् अपश्यत्।

प्रश्न 4. कोटरेभ्यः शुकशावकान् गृहीत्वा अपगतासूंश्च कृत्वा कुत्र अपातयत्?

उत्तर– क्षितौ अपातयत्।

प्रश्न 5. शुकशावकान् केन अग्रहीत्?
उत्तर– जीर्णशबरः शुकशावकान् अग्रहीत्।

8. असावपि पापः क्रमेण शाखान्तरैः सञ्चरमाणः कोटरद्वारमागत्य, भुजङ्गभोगभीषणं वामबाहुं प्रसार्य, तातम् आकृष्य अपगतासुम् अकरोत्। मां तु स्वल्पत्वात् भयसम्पिण्डिताङ्गत्वात् सावशेषत्वात् आयुषः पक्षसम्पुटान्तरगतं नालक्षयत्। उपरतं च तातम् अवनितले शिथिलशिरोधरम् अधोमुखम् अमुञ्चत्। अहमपि तच्चरणान्तराले निलीनः तेनैव सह अपतम्।

शब्दार्थ– असावपि = वह भी। पापः = पापी। क्रमेण = क्रमशः। शाखान्तरैः = एक डाल से दूसरी डाल पर। सञ्चरमाणः = घूमता हुआ। कोटरद्वारमागत्य = खोखले के दरवाजे पर आकर। भुजंगभोगभीषणम् = साँप के फन के समान भयंकर। वामबाहुं = बायीं भुजा। प्रसार्य = फैलाकर। तातम् = पिता को। आकृष्य = खींचकर। अपगतासुम् = प्राणरहित। अकरोत् = किया। माम् = मुझको। स्वल्पत्वात् = बहुत छोटा होने के कारण। भयसम्पिण्डिताङ्गत्वात् = भय से सिकुड़े हुए अंगों के कारण। सावशेषत्वात् = शेष होने के कारण। नालक्षयत् = नहीं देखा। उपरतं = मरे हुए। तातम् = पिता को। शिथिलशिरोधराम् = लटकी हुई गर्दन वाले। अधोमुखम् = नीचे मुख किये हुए। अमुञ्चत् = गिरा दिया। तच्चरणान्तराले = उसके पैरों के बीच में। विलीनः = छिपा हुआ। तनैव सह = उसी के साथ। अपतम् = गिर पड़ा।

हिन्दी अनुवाद– वह पापी क्रमशः एक डाल से दूसरी डाल पर घूमता हुआ खोखले के द्वार पर आ पहुँचा और साँप के फन के समान भयंकर अपनी बायीं भुजा को फैलाकर मेरे पिता को खींचकर मार डाला। बहुत छोटा होने व भय से सिकुड़ जाने तथा आयु बची रहने के कारण पंखों के बीच में चिपके हुए मुझको वह (निष्ठुर भील) देख न सका। उसने लटकी हुई गर्दन तथा नीचे की ओर मुख किये हुए मेरे मरे हुए पिता को पृथ्वी पर गिरा दिया। मैं भी उनके पैरों के बीच में छिपा हुआ उन्हीं के साथ नीचे गिर गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– असावपि = (असौ+अपि)। भुजंगभोगभीषणम् = भुजंगस्य भोग इव भीषणः तम्। अपगतासुम् = अपगताः असवः यस्य तत्। भयसम्पिण्डितांगत्वात् = भयेन सम्पिण्डितानि अंगानि यस्य सः तस्मात्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश के पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश के पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।
प्रश्न 2. 'अहमपि तच्चरणान्तराले निलीनः तेनैव सह अपतम्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– मैं भी उनके पैरों के बीच में छिपा हुआ उन्हीं के साथ नीचे गिर गया।
प्रश्न 3. जीर्णशबरः वामबाहुं कीदृशी आसीत्?
उत्तर– जीर्णशबरः वामबाहुं भुजङ्गभोगभीषणम् आसीत्।
प्रश्न 4. मम तातं केन अपगतासुम् अकरोत्?
उत्तर– मम तातं जीर्णशबरः अपगतासुम् अकरोत्।

9. अवशिष्टपुण्यतया तु महतः शुष्कपत्रराशेः उपरि पतितम् आत्मानम् अपश्यम्। अङ्गानि मे नाशीर्यन्त। यावदसौ तस्मात् तरुशिखरात् नावतरति तावत् अहं पितरम् उपरतम् उत्सृज्य, नातिदूरवर्तिनः तमालविटपिनः मूलदेशम् अविशम्। स तदानीम् अवतीर्य क्षितितलविप्रकीर्णान् संहृत्य तान् शुकशिशून एकलतापाशसंयतान् आदाय, सेनापतिगतेनैव वर्त्मना तामेव दिशम् अगच्छत्। अतिदूरपातात् आयासितशरीरं मां बलवती पिपासा परवशम् अकरोत्।

शब्दार्थ– अवशिष्टपुण्यतया = पुण्य शेष बचे रहने से। महतः = बहुत बड़े। शुष्कपत्रराशेः = सूखे पत्तों की ढेरी पर। पतितम् = गिरा हुआ। आत्मानम् = अपने को। अपश्यम् = देखा। अंगानि = अंग। नाशीर्यन्तः = नहीं टूटे। यावदसौ = जब तक वह। तरुशिखरात् = वृक्ष की चोटी से। नावतरति = नहीं उतरता है। तावत् = तब तक। पितरम् = पिता को। उपरतम् = मरे हुए। उत्सृज्य = छोड़कर। नातिदूरवर्तिनः = समीप ही के। तमालविटपिनः = तमालवृक्ष के। मूलदेशम् = जड़ में। अविशम्

= घुस गया। तदानीम् = उस समय। अवतीर्य = उतर कर। क्षितितलविप्रकीर्णान् = जमीन पर फैले हुए। संहृत्य = इकट्ठा करके। शुकशिशून् = शुकों के बच्चों को। एकलतापाशसंयतान् = एक लता के फन्दे में बँधे हुए। आदाय = लेकर। सेनापतिगतेनैव = जिस मार्ग से सेनापति गया था। वर्त्मना = मार्ग से। तामेव = उसी। दिशम् = दिशा (तरफ)। अगच्छत् = चला गया। अतिदूरपातात् = अधिक दूर से गिरने के कारण। आयासितशरीरम् = थके हुए शरीरवाले को। पिपासा = प्यास। परवशम् = विवश। अकरोत् = कर दिया।

हिन्दी अनुवाद– किसी बचे हुए अपने पुण्य के कारण मैंने अपने आपको एक सूखे पत्तों की ढेरी पर गिरा हुआ देखा। इसी से मेरे अंग टूटे नहीं। जब तक वह उस पेड़ की चोटी से उतरे तब तक मैं मरे हुए पिता को छोड़कर समीप ही में स्थित एक तमाल वृक्ष की जड़ में घुस गया। इसके बाद उसने पेड़ से उतरकर पृथ्वी पर बिखरे हुए उन सुग्गों के बच्चों को इकट्ठा करके उन्हें एक लता में बांधकर ले लिया और सेनापति जिस रास्ते से गया था उसी रास्ते से वह भी उसी ओर चला गया। बहुत दूर से गिरने के कारण मेरा शरीर अत्यन्त शिथिल हो गया और तेज प्यास ने मुझे विवश कर दिया था।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अवशिष्टपुण्यतया = अवशिष्टं च यत्पुण्यत् तस्य भावः तया। नाशीर्यन्तः = न+आशीर्यन्तः। यावदसौ = यावत्+असौ। तरुशिखरात् = तरोः शिखरात्। नावतरति = न+अवतरति। नातिदूरवर्तिनः = न+अति दूरवर्तिनः। क्षितितलविप्रकीर्णान् = क्षितितले विप्रकीर्णस्तान्। शुकशिशून् =शुकानाम् शिशून्। एकलतापाशसंयतान् = एकलतायाः पाशे संयतान्। आयासितशरीरम् = आयासितम् शरीरम् यस्य तम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. 'अवशिष्टपुण्यतया तु महतः शुष्कपत्रराशेः उपरि पतितम् आत्मानम् अपश्यम्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– कुछ बचे हुए अपने पुण्य के कारण मैंने अपने आपको एक सूखे पत्तों की ढेरी पर गिरा हुआ देखा।

प्रश्न 3. वैशम्पायनः कुत्र पतितम् आत्मानम् अपश्यत्?

उत्तर– वैशम्पायनः शुष्कपत्रराशेः उपरि पतितम् आत्मानम् अपश्यत्।

प्रश्न 4. वैशम्पायनः पितरम् उपरतम् उत्सृज्य कुत्र अविशत्?

उत्तर– वैशम्पायनः पितरम् उपरतम् उत्सृज्य नातिदूरवर्तिनः तमालविटपिनः मूलदेशम् अविशत्।

प्रश्न 5. जीर्णशबरः कुत्र अगच्छत्?

उत्तर– सेनापतिगतेनैव वर्त्मना तामेव दिशम् अगच्छत्।

10. तस्मात् सरसः नातिदूरवर्तिनि तपोवने जाबालिः नाम महातपाः मुनिः प्रतिवसति स्म। तत्तनयश्च हारीतनामा तदेव कमलसरः सिस्नासुः उपागमत्। स मां तदवस्थम् आलोक्य, समुपजातदयः, समीपम् उपसृत्य, सरस्तीरम् आनीय, स्वयं माम् उत्तानितमुखम् अङ्गुल्या कतिचित् सलिलबिन्दून् आपाययत्। अम्भःक्षोदकृतसेकम् समुपजातनवीनप्राणम् माम् उपतटप्ररूढस्य नलिनीपलाशस्य जलशिशिरायां छायायाम् निधाय, समुचितम् अकरोत् स्नानविधिम्। अभिषेकावसाने च भगवते सवित्रे दत्तवार्घ्यम्, उदतिष्ठत्। आगृहीतधौतधवलवल्कलश्च मां गृहीत्वा तपोवनाभिमुखम् अगच्छत्।

शब्दार्थ– तस्मात् सरसः = उस तालाब से। नातिदूरवर्तिनि = समीप में स्थित। तपोवने = तपोवन में। महातपाः = बहुत बड़े तपस्वी। प्रतिवसति स्म = रहते थे। तत्तनयः = उसके पुत्र। सिस्नासुः = स्नान के इच्छुक। उपागतम् = आये। तदवस्थम् = ऐसी दशा में। आलोक्य = देखकर। समुपजातदयः = दया आ जाने से। उपसृत्य = पास आकर। आनीय = लाकर। उत्तानितमुखम् = ऊपर मुँह किये हुए। कतिचित् = कुछ। सलिलबिन्दून् = पानी की बूँदें। अपाययत् = पिलायी। अम्भःक्षोदकृतसेकम् = पानी की बूँदों से सींचे हुए। समुपजातनवीनप्राणम् = नवीन प्राणवाले। उपतटप्ररूढस्य = किनारे के समीप उगे हुए। नलिनीपलाशस्य = कमल के पत्ते की। जल शिशिरायाम् = जल से शीतल। निधाय = रखकर। स्नानविधिम् = स्नान की विधि। अभिषेकावसाने = स्नान के बाद। सवित्रे = सूर्य को। दत्वार्घ्यम् = अर्घ्य देकर। उदतिष्ठत् = उठे। आगृहीतं धौतधवलवल्कलश्च = धुले हुए श्वेत वल्कलवस्त्र को धारण किये हुए। तपोवनाभिमुखम् = तपोवन की ओर। आगच्छत् = चल दिये।

हिन्दी अनुवाद– उस तालाब के समीप ही तपोवन में जाबालि नाम के महान् तपस्वी मुनि रहते थे। उनके पुत्र हारीत उसी कमलों से भरे तालाब में स्नान करने के लिए आये। मुझे उस दशा में देखकर उन्हें दया आ गयी और मेरे पास आकर उन्होंने मुझे उठा लिया तथा तालाब के किनारे लाकर अपनी उँगली से ऊपर मुख किये हुए मुझको पानी की कुछ बूँदें पिलायीं। जल की बूँदों से सींचने के कारण मुझमें नवीन प्राण आ गये। उन्होंने मुझे तालाब के किनारे उगे हुए कमल के पत्ते की जल से ठंडी छाया में रखकर भली-भाँति स्नान किया। स्नान के बाद सूर्य को अर्घ्य देकर धुले हुए स्वच्छ वल्कलवस्त्र को धारण करके उन्होंने मुझे उठा लिया और वे तपोवन की ओर चल पड़े।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– सिस्नासु = स्नातुं इच्छुः। समुपजातदयः = समुपजाता दवा यस्मिन् सः। अम्भःक्षोदकृतसेकम् अम्भसः क्षोदैः कृतसेकः यस्य तम्। समुपजातनवीनप्राणम् = समुपजाताः नवीनाः प्राणाः यस्मिन् तम्। उपतटप्ररूढस्य = तटस्य समीपे प्ररूढस्य। नलिनीपलाशस्य = नलिन्याः पलाशस्य। अभिषेकावसाने = अभिषेकस्य अवसाने। आगृहीतं धौतधवलवल्कलश्च = धौतं धवलं च यत् वल्कलम् धौतधवलवल्कलम्, आगृहीतं धौतधवलवल्कलम् येन सः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश के पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश के पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. 'आगृहीतधौतधवलवल्कलश्च मां गृहीत्वा तपोवनाभिमुखम् अगच्छत्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– धुले हुए स्वच्छ वल्कल (वस्त्र) को धारण करके मुझको साथ लेकर वे तपोवन की ओर चल दिए।

प्रश्न 3. तपोवने कः मुनिः प्रतिवसति स्म?

उत्तर– तपोवने जाबालिः नाम महातपाः मुनिः प्रतिवसति स्म।

प्रश्न 4. जाबालिमुनेः तनयस्य किं नाम आसीत्?

उत्तर– जाबालिमुनेः तनयस्य नाम हारीतः आसीत्।

प्रश्न 5. हारीतः कस्य तनयः आसीत्?

उत्तर– हारीतः जाबालिमुनेः तनयः आसीत्।

11. अनतिदूरमिव गत्वा सदासन्निहितकुसुमफलैः काननैः उपगूढम्, वेदाध्ययनमुखरवटुजनम्, उपचर्यमाणातिथिवर्गम्, व्याख्यायमानयज्ञविद्यम्, आलोच्यमानधर्मशास्त्रम्, वाच्यमानविविधपुस्तकम्, विचार्यमाणसकलशास्त्रार्थम् आश्रमम् अपश्यम्। तस्य च एवंविधस्य मध्यभागे रक्ताशोकतरोः अधः छायायाम् उपविष्टम् समन्तात् महनीयैः महर्षिभिः परिवृतम् आयामिनीभिः जटाभिः उपशोभितम्, आनाभिलम्बिकूर्चकलापम्, भगवन्तं जाबालिम् अपश्यम्। हारीतस्तु मां तस्यामेव अशोकतरोः अद्यः छायायां स्थापयित्वा, पितुः पादौ उपगृह्य, कृताभिवादनः, नातिसमीपवर्तिनि कुशासने समुपाविशत्।

शब्दार्थ– अनतिदूरम् = थोड़ी दूर। सदासन्निहितकुसुमफलैः = सदा फल-फूलों से युक्त। काननैः = जंगलों से। उपगूढम् = घिरे हुए। वेदाध्ययनेन = वेदाध्ययन से। मुखरः = वाचाल। वटुजनम् = ब्रह्मचारियोंवाले। उपचर्यमाणातिथिवर्गम् = जहाँ अतिथियों का सत्कार होता है। आलोच्यमानधर्मशास्त्रम् = जहाँ धर्मशास्त्रों की चर्चा होती है। वाच्यमानविधिपुस्तकम् = जहाँ तरह-तरह की पुस्तकें पढ़ी जाती हैं। अपश्यम् = देखा। मध्यभागे = बीच में। रक्ताशोकतरोः = लाल अशोक वृक्ष के। अधः = नीचे। छायायाम् = छाया में। उपविष्टम् = बैठे हुए। समन्तात् = चारों ओर। महनीयैः = पूज्य। परिवृतम् = घिरे हुए। आयामिनीभिः = लम्बी। जटाभिः = जटाओं से। उपशोभितम् = सुशोभित। आनाभिलम्बिकूर्चकलापम् = नाभि तक लटकी हुई दाढ़ी वाले। स्थापयित्वा = रखकर। पितुः पादौ = पिता के चरणों को। कृताभिवादनः प्रणाम करके। समुपाविशत् = बैठ गये।

हिन्दी अनुवाद– थोड़ी ही दूर जाने पर मैंने उस आश्रम को देखा जो सर्वदा फलफूलों से युक्त वनों से घिरा था। जहाँ ब्रह्मचारी जोर-जोर से बोलते हुए वेदपाठ कर रहे थे, जहाँ अतिथियों का सत्कार हो रहा था। यज्ञ विद्या का व्याख्यान हो रहा था। धर्मशास्त्रों की चर्चा हो रही थी। तरह-तरह की पुस्तकें पढ़ी जा रही थीं और शास्त्र के अर्थों पर विचार हो रहा था। इस प्रकार के आश्रम के बीच में लाल अशोक वृक्ष के नीचे छाया में चारों ओर पूज्य महर्षियों से घिरे हुए भगवान् जाबालि को देखा। वह नाभि तक लम्बी जटाओं से सुशोभित थे और उनकी दाढ़ी नाभि तक लटकी हुई थी। हारीत ने मुझे उसी अशोक की छाया

में रखकर पिता के चरणों को छूकर अभिवादन किया और समीप ही के कुशासन पर आसन ग्रहण किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– सदासन्निहितकुसुमफलैः सदा सन्निहितानि कुसुमफलानि यस्मिन् तत्। वेदाध्ययनमुखरवटुजनम् = वेदाध्ययनेन मुखरः वटुः जनः यस्मिन् तत्। उपचर्यमाणातिथिवर्गम् = उपचर्यमाणः अतिथिवर्गाः यस्मिन् तत्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. 'अनतिदूरमिव गत्वा सदासन्निहितकुसुमफलैः काननैः उपगूढम्, आश्रमम् अपश्यम्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– कुछ ही दूर जाने पर मैंने उस आश्रम को देखा जो सर्वदा फल और फूलों से युक्त वनों से घिरा था।

प्रश्न 3. आश्रमः कीदृशः आसीत्?

उत्तर– आश्रमः सदासन्निहित कुसुमफलैः काननैः उपगूढम् आसीत्।

प्रश्न 4. शुकः किम् अपश्यत्?

उत्तर– शुकः आश्रमम् अपश्यत्।

प्रश्न 5. जाबालि मुनिः कैः परिवृतः आसीत्?

उत्तर– जाबालि मुनिः महनीयैः महर्षिभिः परिवृतः आसीत्।

प्रश्न 6. जटाभिः उपशोभितं कः आसीत्?

उत्तर– जाबालि मुनिः जटाभिः उपशोभितम् आसीत्।

12. आलोक्य तु माम् ते सर्वे एव मुनयः कुतोऽयम् आसादितः शुकशिशुः इति तम् आसीनम् अपृच्छन्। असौ तु तान् अब्रवीत्– ''अयं मया स्नातुम् इतो गतेन कमलिनीसरस्तीरे तरुनीडात् पतितः दूरनिपतनविह्वलतनुः आसादितः। तपस्विदुरारोहतया तस्य वनस्पतेः न शक्यते स्वनीडम् आरोपयितुम् इति जातदयेन आनीतः। अयम् इदानीम् अप्ररूढपक्षतिः, अक्षमोऽन्तरिक्षम् उत्पतितुम्। तत् अत्रैव कस्मिंश्चित् आश्रमतरुकोटरे मुनिकुमारकैः अस्माभिश्च उपनीतेन नीवारकणनिकरेण फलरसेन च, संवर्ध्यमानः धारयतु जीवितम्। अनाथपरिपालनं हि धर्मः अस्मद्विधानाम्। उद्भिन्नपक्षतिस्तु–गगनतलसञ्चरणसमर्थः यास्यति यत्रास्मै रोचिष्यते– इहैव वा उपजातपरिचयः स्थास्यति'' इति।

शब्दार्थ– आलोक्य = देखकर। कुतः = कहाँ। अयम् = यह। आसादितः = प्राप्त किया गया। आसीनम् = बैठे हुए। अपृच्छत् = पूछा। अब्रवीत् = कहा। स्नातुम् = स्नान के लिए। इतः = यहाँ से। कमलिनीसरस्तीरे = कमल वाले तालाब के किनारे। तरुनीडात् (तरोः नीडात्) वृक्ष के घोंसले से। पतितः गिरा हुआ। दूरात् निपतेन = दूर से गिरने के कारण। विह्वलतनुः = व्याकुल शरीरवाले। आसादितः = प्राप्त किया गया। तपस्विदुरारोहतया = तपस्वियों के द्वारा चढ़ने योग्य न होने से। वनस्पतेः = वृक्ष के। आरोपयितुम् = रखने के लिए। जातदयेन = दया आने के कारण। आनीतः = लाया गया। इदानीम् = इस समय। अप्ररूढ़पक्षतिः = पंख न निकले हुए। अक्षमः = असमर्थ। अन्तरिक्षम् = आकाश। उत्पतितुम् = उड़ने के लिए। आश्रमतरुकोटरे = आश्रम के वृक्ष के खोखले में। उपनीतेन = लाये गये। नीवारकणनिकरेण = नीवार के दाने से। संवर्ध्यमानः = बड़ा होकर। अस्माद्विधानाम् = हमारे जैसे लोगों का। उद्भिन्नपक्षतिः = पंख निकलने पर। गगनतलसंचरणसमर्थः = आकाश में उड़ने योग्य। यास्यति = चला जायेगा। यत्र = जहाँ। अस्मै = इसे। रोचिष्यते = अच्छा लगेगा। इहैव = यहाँ ही। उपजात परिचयः = परिचय हो जाने से। स्थास्यति = रह जायेगा।

हिन्दी अनुवाद– वहाँ के वे मुनि मुझे देखकर उस बैठे हुए हारीत से पूछने लगे कि इस सुग्गे के बच्चे को कहाँ पाया? उन्होंने उनसे कहा– यहाँ से मैं जब स्नान करने के लिए गया था तो यह उस कमल वाले तालाब के किनारे वृक्ष के खोखले से गिरा हुआ था। दूर से गिरने के कारण बहुत बुरी दशा में मैंने इसे पाया। मुनियों के लिए उस पेड़ पर चढ़ना कठिन था, इसलिए इसको इसके घोसले में न रख सका और दया के वशीभूत हो इसे उठा लाया। यह इस समय पंख न निकलने के कारण

उड़ने में असमर्थ है। इसलिए यह यहीं आश्रम के किसी पेड़ के खोखले में मुनिकुमारों तथा हम लोगों द्वारा लाये गये निवार के दानों तथा फल के रसों से पोषित होकर जीवित रहे। हमारे जैसे लोगों का धर्म ही अनाथों का पालन करना है। जब इसे पंख निकल आयेंगे और आकाश में उड़ने योग्य हो जायेगा तो यह जहाँ चाहेगा चला जायेगा या परिचित हो जाने के कारण यहीं रह जायेगा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– दूरनिपतनविह्वलतनुः = दूरात् निपतनेन विह्वलं तनुः यस्य सः। अप्ररूढपक्षति = अप्ररूढा पक्षतिः यस्य सः। आश्रमतरुकोटरे = आश्रमस्य तरोः कोटरे। गगनतलसंचरणसमर्थः = गगनतले संचरणाय समर्थः। यत्रास्मै = यत्र+अस्मै। इहैव = इह+एव। उपजातपरिचयः = उपजातः परिचयः यस्य सः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश के पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश के पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. 'अनाथपरिपालनं हि धर्मः अस्मद्विधानाम्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– अनाथों का पालन करना ही हमारे जैसे लोगों का धर्म है।

प्रश्न 3. सर्वे मुनयः हारीतेन किम् अपृच्छन्।

उत्तर– सर्वे मुनयः हारीतेन अपृच्छन्–कुतोऽयम् आसादितः शुकशिशुः।

प्रश्न 4. हारीतेन किम् अब्रवीत्?

उत्तर– हारीतेन अब्रवीत्– ''अयं मया स्नातुम् इतो गतेन कमलिनीसरस्तीरे तरुनीडात् पतितः दूरनिपतनविह्वलतनुः आसादितः।''

प्रश्न 5. हारीतानुसारेण धर्मः कः?

उत्तर– हारीतानुसारेण 'अनाथपरिपालनं हि धर्मः।'

13. इत्यस्मत्संबद्धम् आलापम् आकर्ण्य, भगवान् जाबालिः माम् अतिप्रशान्तया दृष्ट्या दृष्ट्वा, ''स्वस्यैवाविनयस्य फलम् अनेनानुभूयते'' इत्यवोचत्। श्रुत्वैतत् सर्वैव सा तापसपरिषत् तं भगवन्तम् एवम् उपनाथितवती–आवेदय भगवन्! कीदृशस्य अविनयस्य फलम् अनेन अनुभूयते? कश्चायमासीत् जन्मान्तरे? विहगजातौ कथमस्य संभवः? किमभिधानो वा अयम्? अपनय नः कुतूहलम् इति। एवमुक्तस्तु सः महामुनिः अवादीत्–श्रूयतां यदि कुतूहलम्।

शब्दार्थ–इत्यस्मत्संबद्धम् = इस प्रकार मुझसे संबंधित। आलापम् = बातचीत। आकर्ण्य = सुनकर। अतिप्रशान्तया = अत्यन्त शान्त। दृष्ट्या = दृष्टि से। दृष्ट्वा = देखकर। स्वस्यैवाविनयस्य = अपने ही पापों का। अनेन = इसके द्वारा। अनुभूयते = भोगा जा रहा है। श्रुत्वा = सुनकर। एतत् = यह। तापस = तपस्वियों की। परिषत् = मंडली। उपनाथितवती = प्रार्थना करने लगी। आवेदय = बताइए। कश्चायमासीत् = यह कौन था। जन्मान्तरे = पूर्व जन्म में। विहगजातौ = पक्षी योनि में। सम्भवः = जन्म हुआ। किम् = क्या। अभिधानः = नाम। अपनय = दूर करो। नः = हम लोगों का। कुतूहलम् = उत्सुकता। आवादीत् = बोले।

हिन्दी अनुवाद– इस प्रकार मेरे सम्बन्ध की चर्चा सुनकर भगवान् जाबालि ने मुझे बड़ी शान्त दृष्टि से देखकर कहा कि ''यह अपने ही पापों का फल भोग रहा है।'' यह सुनकर तपस्वियों की मंडली ने भगवान् जाबालि से प्रार्थना की कि भगवान् यह बताइये–यह तोता किस प्रकार के पाप का फल भोग रहा है? यह पूर्वजन्म में कौन था? पक्षीयोनि में यह कैसे पैदा हुआ? इसका नाम क्या है? हम लोगों की उत्सुकता को दूर करें। ऐसा कहने पर उस महामुनि ने कहा–यदि उत्सुकता है तो सुनिए–

व्याकरणात्मक टिप्पणी– इत्यस्मत्सम्बद्धम् = इति+अस्मत्+संबद्धम्। स्वस्यैवाविनयस्य = स्वस्य+एव+अविनयस्य। अनेनानुभूयते = अनेन+अनुभूयते। श्रुत्वैतत् = श्रुत्वा+एतत्। कश्चायमासीत् = कः+च+अयम्+आसीत्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. 'स्वस्यैवाविनयस्य फलम् अनेनानुभूयते।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– अपनी ही अविनम्रता का फल इसके द्वारा भोगा जा रहा है।
प्रश्न 3. भगवान् जाबालिः केन अतिप्रशान्तया दृष्ट्या अपश्यत्?
उत्तर– भगवान् जाबालिः शुकशिशुम् अतिप्रशान्तया दृष्ट्या अपश्यत्।
प्रश्न 4. भगवान् जाबालिः किम् अवोचत्?
उत्तर– 'स्वस्यैवाविनयस्य फलम् अनेनानुभूयते' इत्यवोचत्।
प्रश्न 5. कः स्वस्यैवाविनयस्य फलम् अनेनानुभूयते?
उत्तर– शुकः स्वस्यैवाविनयस्य फलम् अनेनानुभूयते।

14. अस्ति सकलभुवनललामभूता विजितामरलोकद्युति; अवन्तिषु उज्जयिनी नाम नगरी। तस्यां च नलनहुषययातिप्रतिमः तारापीडो नाम राजा बभूव। तस्य च राज्ञः नीतिशास्त्रप्रयोगकुशलःमहत्स्वपि कार्यसङ्कटेषु अविषण्णधीः अमात्यः ब्राह्मणः शुकनासो नाम आसीत्। स राजा बाल एव राजलक्ष्मीलीलोपधानेन बाहुना सप्तद्वीपवलयां वसुन्धरां विजित्य, तस्मिन् शुकनासे राज्यभारम् आरोप्य सुस्थिताः प्रजाः कृत्वा, सुखम् उवास। शुकनासोऽपि महान्तं तं राज्यभारम् अनायासेनैव प्रज्ञाबलेन बभार। एवं मन्त्रिनिवेशितराज्यभारः यौवनसुखम् अनुभवन् स राजा महान्तं कालम् अयापयत्। भूयसापि कालेन सुतमुखदर्शनसुखं न लेभे।

शब्दार्थ– सकलभुवनललामभूता = सम्पूर्ण संसार में सबसे सुन्दर। विजितामरलोकद्युति = देवलोक की कांति को जीत लेने वाली। नलनहुषययातिप्रतिमः = नल, नहुष और ययाति के समान। राज्ञा = राजा का। नीतिशास्त्रप्रयोगकुशलः = नीतिशास्त्र में प्रवीण। महत्सु = बड़े से बड़े। अपि = भी। कार्यसंकटेषु = काम की कठिनाइयों में। अविषण्णधीः = तीव्रबुद्धिवाले। अमात्यः = मन्त्री। राजलक्ष्मीलीलोपधानेन = राज्यलक्ष्मी के तकिये के समान। सप्तद्वीपवलयाम् = सात द्वीपोंवाली। बसुन्धरां = पृथ्वी को। विजित्य = जीतकर। राज्यभारम् = राज्य का बोझ। आरोप्य = देकर। सुस्थिताः = निश्चिंत। उवास = रहने लगा। अनायासेनैव = सरलता से। बभार = धारण किया। मंत्रिनिवेशितराज्यभारः = मंत्रियों पर राज्य का भार डालकर। यौवनसुखम् = जवानी का सुख। अनुभवन् = भोगता हुआ। अयावयत् = बिता दिया। भूयसापिकालेन = बहुत समय बीत जाने पर भी। सुतमुख-दर्शनम् = पुत्र का मुख देखने का सुख। लेभे = प्राप्त किया।

हिन्दी अनुवाद– सारे संसार में सबसे सुन्दर तथा देवलोक की शोभा को भी जीत लेने वाली अवन्ति में उज्जयिनी नाम की जो नगरी है उसमें नल, नहुष और ययाति के समान तारापीड नाम का एक राजा हुआ था। उस राजा का शुकनास नाम का एक ब्राह्मण मंत्री था जिसकी बुद्धि बड़े-बड़े कार्यों के संकट में भी स्थिर रहती थी। उस राजा ने बचपन में राजलक्ष्मी के तकिये के समान अपनी बाहु से सातों द्वीपों वाली पृथ्वी को जीत लिया और प्रजा को निश्चिंत करके तथा राज्य का भार मंत्री के ऊपर डालकर सुख से रहने लगा। शुकनास ने अपनी बुद्धि के बल से उस महान् राज्य के भार को सरलता से धारण कर लिया। प्रधानमन्त्री के ऊपर राज्यभार रखकर उसने जवानी का आनन्द लेते हुए बहुत समय बिता दिया। लेकिन बहुत समय बीतने पर भी वह अपने पुत्र का मुख देखने का सुख न पा सका।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– सकलभुवनललामभूता = सकलस्य भुवनस्य ललामभूता। विजितामरलोकद्युति = विजितना अमर लोकस्य द्युतिः यया (सा) नलनहुषययातिप्रतिमः = नलश्च नहुषश्च ययातिश्च नलनहुषययातयः ते प्रतिमा यस्य सः। नीतिशास्त्रप्रयोगकुशलः = नीतिशास्त्रस्य प्रयोगकुशलः। महत्स्वपि = महत्सु+अपि। अविषण्णधीः = अविषण्णा धीः यस्य सः। राजलक्ष्मीलीलोपधानेन = राज्ञः लक्ष्मीः तस्याः लीलायाः उपधानम् तेन। उदास = वस् धातु का लिट्लकार, अन्य पुरुष, एकवचन। मंत्रिनिवेशितराज्यभारः = मंत्रिणि निवेशितः राज्यस्य भारः येन सः। यौवनसुखम् = यौवनस्य सुखम्। सुतमुख-दर्शनम् = सुतस्य मुखम् तस्य दर्शनम् तस्य सुखम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश के पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश के पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. **'शुकनासोऽपि महान्तं तं राज्यभारम् अनायासेनैव प्रज्ञाबलेन बभार।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**
उत्तर– शुकनास भी बुद्धि के बल से राज्य के उस महान कार्यभार को सरलता से धारण कर लिया।
प्रश्न 3. **तारापीडः कः आसीत्?**
उत्तर– तारापीडः उज्जयिनी नगरस्य राजा आसीत्।
प्रश्न 4. **उज्जयिनी नगरी कुत्र स्थितः?**
उत्तर– उज्जयिनी अवन्ति राज्ये स्थितः।
प्रश्न 5. **शुकनासः कः आसीत्?**
उत्तर– शुकनासः तारापीडस्य अमात्यः आसीत्।
प्रश्न 6. **नीतिशास्त्रप्रयोगकुशलः कः आसीत्?**
उत्तर– नीतिशास्त्रप्रयोगकुशलः शुकनासः आसीत्।
प्रश्न 7. **राजा तारापीडः कस्मिन् राज्यभारम् आरोप्य सुखम् उवास?**
उत्तर– राजा तारापीडः शुकनासे राज्यभारम् आरोप्य सुखम् उवास।

15. तस्य विलासवती नाम महिषी भगवन्तं महाकालम् अभ्यर्चितुं गता, तत्रमहाभारते वाच्यमाने ''अपुत्राणां न सन्ति लोकाः शुभाः'' इति श्रुत्वा, नितरां परितप्यमाना, ततः प्रभृति, देवताराधनेषु ब्राह्मणपूजासु गुरुजनसपर्यासु च सुतराम् आदरवती वभूव। एवं गच्छति काले कदाचित् राजा चरमे यामिनीयामे स्वप्ने विलासवत्याः वदने सकलकलापरिपूर्णमण्डलं शशिनं प्रविशन्तम् अद्राक्षीत्। प्रबुद्धश्चोत्थाय तस्मिन्नेव क्षणे समाहूय शुकनासाय तं स्वप्नम् अकथयत्। स च समुपजातहर्ष प्रत्युवाच, ''देव! संपन्नाः सुचिरात् अस्माकं प्रजानां च मनोरथाः। कतिपयैरेवाहोभिः असंदेहम् अनुभवति स्वामी सुतमुखकमलावलोकनसुखम्। अद्य खलु मयापि स्वप्ने दिव्याकृतिना शान्तमूर्तिना द्विजेन केनचित् विकचं पुण्डरीकम् उत्सङ्गे देव्याः मनोरमायाः निहितं दृष्टम्। अवितथफलाश्च प्रायः निशावसानसमयदृष्टाः भवन्ति स्वप्नाः'' इति।

शब्दार्थ– महिषी = प्रधान रानी। महाकालम् = शिव को। अभ्यर्चितुं = पूजने के लिए। गता = गयी। वाच्यमाने = पढ़े जाने पर। अपुत्राणाम् = पुत्रहीनों का। शुभाः लोकाः = शुभ लोक, स्वर्गादि। नितराम् = अत्यन्त। परितप्यमाना = दुःखी होती हुई। ततः प्रभृति = तब से। देवताराधनेषु = देवताओं की आराधना में। ब्राह्मणपूजासु = ब्राह्मणों की पूजा में। गुरुजनसपर्यासु = बड़े लोगों के आदर-सत्कार में। आदरवती बभूव = श्रद्धा वाली हो गयी। गच्छति काले = समय बीतने पर। चरमे = अन्तिम। यामिनीयामे = रात के पहर में। वदने = मुख में। सकलकलापरिपूर्णमंडलम् = सम्पूर्ण। कलाओं से परिपूर्ण। शशिनम् = चन्द्रमा को। प्रविशन्तम् = प्रवेश करते हुए। अद्राक्षीत् = देखा। प्रबुद्धः = जागकर। च उत्थाय = और उठकर। समाहूय = बुलाकर। समुपजातहर्षः = प्रसन्न होते हुए। प्रत्युवाच = उत्तर दिया। सम्पन्नाः = पूरा हो गया। सुचिरात् = बहुत दिनों का। अकस्मात् = हम लोगों का। कतिपयैरेवाहोभिः = कुछ दिनों में। असंदेहम् = निश्चय ही। सुतमुखकमलावलोकनसुखम् = पुत्र के मुखकमल को देखने का सुख। अद्य = आज। दिव्याकृतिना = दिव्य आकृतिवाले। द्विजेन = ब्राह्मण द्वारा। विकचम् = प्रफुल्लित। पुण्डरीकम् = श्वेत कमल को। उत्संगे = गोद में। निहितम् = रखा हुआ। अवितथफलाः = सच्चे फल देने वाले। निसावसानसमयदृष्टाः = रात के अन्त में देखे गये।

हिन्दी अनुवाद– विलासवती नाम की उसकी पटरानी एक बार भगवान महाकाल की पूजा के लिए गयी। वहाँ उसने महाभारत की कथा में सुना कि पुत्रहीन मनुष्य को गति (स्वर्गादि) की प्राप्ति नहीं होती। तभी से वह देवताओं की आराधना, ब्राह्मणों की पूजा और बड़े लोगों के सत्कार में अधिक श्रद्धा रखने लगी। इस प्रकार कुछ समय बीतने पर राजा ने स्वप्न में रात्रि के पिछले पहर में पूर्ण चन्द्रमा को विलासवती के मुँह में प्रवेश करते हुए देखा। जागकर और उठकर उसी समय शुकनास को बुलवाकर राजा ने उससे सपने को कह सुनाया। उसने प्रसन्न होकर कहा– राजन्, बहुत दिनों के बाद हम लोगों एवं प्रजा की अभिलाषा पूर्ण हुई। स्वामी थोड़े ही दिनों में निश्चय ही पुत्र के मुख-दर्शन का सुख पावेंगे। आज मैंने भी स्वप्न में एक दिव्य और शान्त मूर्ति वाले ब्राह्मण के द्वारा देवी मनोरमा की गोद में फूला हुआ श्वेत कमल रखते हुए देखा है। प्रायः रात के अन्त में देखे गये सपने अवश्य फल देने वाले होते हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– सकलकलापरिपूर्णमंडलम् = सकलाभिः कलाभिः परिपूर्ण मंडलम् यस्य तत्। समुपजातहर्षः =

समुपजात हर्षःयस्मिन् सः। प्रत्युवाच = प्रति+उवाच। कतिपयैरेवाहोभिः=कतिपय एव अहोभिः। सुतमुखकमलावलोकनसुखम् = सुतस्य मुखकमलम् (तस्यावलोकनस्यः सुखम्)। दिव्याकृतिना = दिव्या आकृतिः यस्य तेन।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. 'अपुत्राणां न सन्ति लोकाः शुभाः।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– पुत्रहीन मनुष्यों को शुभ लोक (स्वर्गादि) नहीं प्राप्त हो पाते हैं।

प्रश्न 3. विलासवती का आसीत्?

उत्तर– विलासवती राजा तारापीडस्य महिषी आसीत्।

प्रश्न 4. विलासवती कुत्र गता?

उत्तर– विलासवती भगवन्तं महाकालम् अभ्यर्चितुं गता।

प्रश्न 5. राजा स्वप्ने किम् अद्राक्षीत्?

उत्तर– राजा स्वप्ने विलासवत्याः वदने शशिनं प्रविशन्तम् अद्राक्षीत्।

16. कतिपयदिवसापगमे च देवताप्रसादात् विवेश गर्भो विलासवतीम्। शनैः शनैश्च प्रतिदिनम् उपचीयमानगर्भा सा पूर्णे प्रसवसमये प्रशस्तायां वेलायां सकललोकहृदयानन्दकारिणं सुतम् असूत। अथ पार्थिवः मौहूर्तिकगणोपदिष्टे प्रशस्ते मुहूर्ते शुकनासद्वितीयः मङ्गलकलशयुगलाशून्येन द्वारदेशेन विराजमानम्, अविच्छिन्नपठ्यमाननारायणनामसहस्रम्, सूतिकागृहं प्रविश्य विलासवत्याः प्रसवपरिक्षामपाण्डुमूर्तेः उत्सङ्गगतम् महापुरुषलक्षणोपेतम् आत्मजम् ददर्श। विगतनिमेषेण निश्चलपक्ष्मणा चक्षुषा पिबन् इव सस्पृहम् ईक्षमाणः तनयाननम् अतितराम् मुमुदे।

शब्दार्थ– कतिपय = कुछ। दिवसापगमे = दिन बीतने पर। विवेश = प्रवेश किये। शनैःशनैश्च = और धीरे-धीरे। उपचीयमानगर्भा = बढ़ते हुए गर्भवाली। पूर्णप्रसव समये = प्रसव का समय पूरा होने पर। प्रशस्तायाम् = श्रेष्ठ। वेलायाम् = समय में। सकललोक हृदयानन्दकारिणं = सारे संसार को आनन्दित करने वाले। सुतम् = पुत्र को। असूत् पैदा किया। पार्थिवः राजा। मौहूर्तिकगणोपदिष्टे = ज्योतिषियों द्वारा बताये गये। मुहूर्ते = शुभ लग्न में। शुकनाशद्वितीयः = शुकनास के साथ। मंगलकलशायुगलाशून्येन = दो मंगल घटों से युक्त। द्वारदेशेन = दरवाजे। अविच्छिन्नपठ्यमाननारायणनामसहस्रम् = जहाँ लगातार नारायण के सहस्रनाम का पाठ हो रहा था। सूतिकागृहम् = प्रसवगृह। प्रसवपरिक्षामपाण्डुमूर्तेः = सन्तानोत्पत्ति के कारण दुबली व पीली आकृतिवाली। उत्संगगतम् = गोद में स्थित। महापुरुषलक्षणोपेतम् = महापुरुषों के लक्षणों से युक्त। आत्मजम् = अपने पुत्र को। ददर्श = देखा। विगतनिमेषेण = बिना पलक गिराये। निश्चलपक्ष्मणा = निर्निमेष। चक्षुषा = नेत्र से। सस्पृहम् = रुचि के साथ। ईक्षमाणः = देखते हुए। तनयाननम् = पुत्रमुख को। अतितराम् = अत्यन्त। मुमुदे = आनन्दित हुआ।

हिन्दी अनुवाद– कुछ दिन बीतने पर देवताओं की कृपा से विलासवती ने गर्भ धारण किया। धीरे-धीरे बढ़ते हुए गर्भ वाली प्रसव का समय पूरा होने पर शुभदायक समय में उसने सारे संसार को आनन्दित करने वाले पुत्र को जन्म दिया। शुभदायक समय में उसने सारे संसार को आनन्दित करने वाले पुत्र को जन्म दिया। ज्योतिषियों द्वारा बताये गये शुभ मुहूर्त में शुकनास के साथ राजा प्रसवगृह में गये जिसके दरवाजे पर दो मंगल घट रखे हुए थे तथा निरन्तर विष्णुसहस्रनाम का पाठ हो रहा था। वहाँ उन्होंने प्रसव के कारण दुबली एवं पीली आकृतिवाली विलासवती की गोद में स्थित महापुरुषों के लक्षणों से युक्त अपने पुत्र को देखा। स्थिर एवं निर्निमेष नेत्रों से उसकी शोभा को पाते हुए राजा अत्यधिक तृषित होकर पुत्र का मुख देखते हुए अत्यन्त आनन्दित हुए।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– उपचीयमानगर्भा = उपचीयमानः गर्भः यस्याम् सा। सकललोकहृदयानन्दकारिणम् = सकललोकस्य हृदयाणाम् आनन्दकारिणम्। मौहूर्तिकगणोपदिष्टे = मौहूर्तिकगणे उपदिष्टे। प्रसवपरिक्षामपाण्डुमूर्तेः = प्रसवेन परिक्षामं पाण्डुः मूर्तिः यस्याः सा तस्याः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. 'विगतनिमेषेण निश्चलपक्ष्मणा चक्षुषा पिबन् इव सस्पृहम् ईक्षमाणः तनयाननम् अतितराम् मुमुदे।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– स्थिर और अपलक नेत्रों से उसकी शोभा को देखते हुए राजा अत्यधिक तृषित नेत्रों वाले पुत्र को देखते हुए आनन्दित हुए।

प्रश्न 3. कस्य प्रसादात् विवेश गर्भो विलासवतीम्?

उत्तर– देवताप्रसादात् विवेश गर्भो विलासवतीम्।

प्रश्न 4. विलासवती कदा सुतम् असूत्?

उत्तर– प्रशस्तायां वेलायां सुतम् असूत्।

प्रश्न 5. राजा तारापीड केन सह सूतिकागृहं प्रविशति स्म?

उत्तर– राजा तारापीड शुकनासेन सह सूतिकागृहं प्रविशति स्म।

17. तस्मिन्नेव समये शुकनासस्यापि जेष्ठायां ब्राह्मण्यां मनोरमायां तनयः जातः। अथ नृपतिः अमृतवृष्टिप्रतिमम् तज्जननवृत्तान्तम् आकर्ण्य, ''अहो कल्याणपरम्परा'' इत्यभिधाय, शुकनासभवनं गत्वा द्विगुणतरम् उत्सवम् अकारयत्। प्राप्ते च दशमेऽहनि पुण्ये मुहूर्ते स्वप्नानुरूपमेव राजा स्वसूनोः ''चन्द्रापीडः'' इति नाम चकार। अपरेद्युः शुकनासोऽपि ब्राह्मणोचिताः सकलाः क्रियाः कृत्वा, विप्रजनोचितम् आत्मजस्य 'वैशम्पायनः' इति नाम चक्रे। क्रमेण च कृतचूडाकरणादिबालक्रियाकलापस्य शैशवम् अतिचक्राम सवैशम्पायनस्य चन्द्रापीडस्य।

शब्दार्थ– तस्मिन् एव समये = उसी समय। जेष्ठायाम् = बड़ी। ब्राह्मण्याम् = ब्राह्मणी। तनयः जातः = पुत्र उत्पन्न हुआ। अमृतवृष्टि प्रतिमम् = अमृत की वर्षा के समान। तज्जननवृत्तान्तम् = उसके जन्म का समाचार। आकर्ण्य = सुनकर। कल्याणपरम्परा = एक कल्याण के बाद दूसरे कल्याण का आगमन। इत्यभिधाय = ऐसा कहकर। द्विगुणतरम् = पहले से दूना। अकारयत् = कराया। दशमेऽहनि = दसवें दिन। पुण्ये = पवित्र। स्वप्नानुरूपमेव = स्वप्न के अनुसार ही। स्वसूनोः = अपने पुत्र का। चकार = किया। अपरेद्युः = दूसरे दिन। ब्राह्मणोचिताः = ब्राह्मणों के योग्य। चक्रे = किया। कृतचूडाकरणादि बालक्रियाकलापस्य = जिसकी मुण्डन आदि बाल-क्रियाएँ की गई हों, उसका। सवैशम्पायनस्य = वैशम्पायन के साथ। शैशवम् = बचपन। अतिचक्राम = व्यतीत हुआ।

हिन्दी अनुवाद– उसी समय शुकनास की बड़ी पत्नी मनोरमा को भी पुत्र उत्पन्न हुआ। राजा ने अमृत वर्षा के समान उसके जन्म का समाचार सुनकर कहा– धन्य है। एक मंगल के बाद दूसरा मंगल आ गया। यह कहकर राजा ने शुकनास के महल में जाकर दूना उत्सव कराया। दसवें दिन पवित्र मुहूर्त में राजा ने स्वप्न के अनुसार ही अपने पुत्र का नाम चन्द्रापीड रखा। दूसरे दिन शुकनास ने भी ब्राह्मणोचित क्रियाओं को करके ब्राह्मणों के अनुकूल अपने पुत्र का नाम वैशम्पायन रखा। धीरे-धीरे वैशम्पायन के साथ ही चन्द्रापीड का मुण्डनादि बाल संस्कार हुए और उन दोनों का बचपन बीत गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अमृतवृष्टिप्रतिमम् = अमृतस्य वृष्टिः सा प्रतिमा यस्य तम्। तज्जननतृत्तान्तम् = तस्य जननस्य तृत्तान्तः तम्। कल्याणपरम्परा = कल्याणानाम् परम्परा। ब्राह्मणोचिताः = ब्राह्मणेभ्यः उचिताः। कृतचूडाकरणादि-बालक्रियाकलापस्य = कृतः चूडाकरणादि बालक्रियाकलापः यस्य तस्य।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश के पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश के पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. **'अहो कल्याणपरम्परा।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**
उत्तर– धन्य है, कल्याणों की यह परम्परा अर्थात् एक मङ्गल के बाद दूसरा मङ्गल आ गया।
प्रश्न 3. **मनोरमा का आसीत्?**
उत्तर– मनोरमा शुकनासस्य ज्येष्ठ पत्नी आसीत्।
प्रश्न 4. **स्वप्नानुरूपेण राजा स्वसूनोः किं नाम चकार?**
उत्तर– स्वप्नानुरूपेण राजा स्वसूनोः 'चन्द्रापीड' इति नामचकार।
प्रश्न 5. **चन्द्रापीडः कस्य पुत्रः आसीत्?**
उत्तर– चन्द्रापीडः राजा तारापीडस्य पुत्रः आसीत्।
प्रश्न 6. **शुकनासस्य पुत्रस्य किं नाम आसीत्?**
उत्तर– शुकनासस्य पुत्रस्य वैशम्पायनः नाम आसीत्।

18. अथ तारापीडो बहिर्नगरात् अनुशिप्रम् अतिमहता सुधाधवलेन प्राकारमण्डलेन परिवृतं विद्यामन्दिरम् अकारयत्। तत्र शोभने दिवसे चन्द्रापीडम् वैशम्पायनद्वितीयम् आचार्येभ्यः निखिलविद्योपादानार्थम् अर्पयाम्बभूव। प्रतिदिनम् सह विलासवत्या तत्रैव गत्वा एनम् आलोकयामास। चन्द्रापीडोऽपि अतिरेणैव कालेन, यथास्वम् आत्मकौशलं प्रकटयद्भिः पात्रवशात् उपजातोत्साहैः आचार्यैः उपदिश्यमानाः सर्वाः विद्याः जग्राह। तथा हि पदे, वाक्ये, प्रमाणे, धर्मशास्त्रे, राजनीतिशषु, व्यायामविद्यासु, सर्वेष्वायुधविशेषेषु, रथचर्यासु, गजपृष्ठेषु, तुरङ्गमेषु, वीणावेणुप्रभृतिषु, वाद्येषु, नृत्तशास्त्रेषु, गान्धर्वविद्यासु, शकुनिरुतज्ञाने, यन्त्रप्रयोगे, विषापहरणे, सर्वलिपिषु, सर्वदेशभाषासु, अन्येष्वषि कलाविशेषेषु परं कौशलम् अवाप। सहजा चास्य वृकोदरस्येव आविर्बभूव सर्वलोकविस्मयजननी महाप्राणता। एकैकेन कृपाणप्रहारेण बालतरून् मृणालदण्डानिव लुलाव। दशपुरुषसंवहनयोग्येन अयोदण्डेन श्रमम् अकरोत्। ऋते च महाप्राणतायाः सर्वाभिः अन्याभिः कलाभिः अनुचकार तं वैशम्पायनः। सः चन्द्रापीडस्य सर्वविस्रम्भस्थानम् द्वितीयमिव हृदयं परं मित्रम् आसीत्। निमेषमपि तेन विना स्थातुं न शशाक। वैशम्पायनोऽपि तं न क्षणमपि विरहायाञ्चकार।

शब्दार्थ– बहिर्नगरात् = नगर से बाहर। अनुशिप्रम् = शिप्रा नदी के किनारे। अतिमता = बहुत बड़ा। सुधाधवलेन = सुधया धवलं तेन, चूने से सफेद। प्राकारमण्डलेन = चहारदीवारी से। परिवृतम् = घिरे हुए। विद्यामन्दिरम् = पाठशाला को। अकारयत् = बनवाया। शोभने दिवसे = शुभ दिन। वैशम्पायन द्वितीयम् = वैशम्पायन के साथ। निखिलविद्योपादानार्थम् = सम्पूर्ण विद्या पढ़ने के लिए। अर्पयाम्बभूव = भेज दिया। आलोकयामास = देखा। अचिरेणैवकालेन = थोड़े ही समय में, यथास्वम् = अपनी शक्ति के अनुसार। आत्मकौशलम् = अपनी चतुराई। प्रकटयद्भिः = प्रकट करने वाले। पात्रवशात् = योग्य शिष्य होने के कारण। उपजातोत्साहैः = बढ़े हुए उत्साहवाले। उपदिश्यमानाः = बतलायी गयी। जग्राह = ग्रहण किया। पदे = व्याकरण में। वाक्ये = मीमांसा में। प्रमाणे = तर्कशास्त्र में। सर्वेष्वायुधविशेषेषु = सभी शस्त्र-विशेषों में। रथचर्यासु = रथ हाँकने में। गजपृष्ठेषु = हाथी की सवारी में। तुरङ्गमेषु = घुड़सवारी में। वीणावेणुप्रभृतिषु = वीणा बाँसुरी आदि में। गान्धर्वविद्यासु = संगीत विद्या में। शकुनिरुतज्ञाने = पक्षियों की भाषा के ज्ञान में। विषापहरणे = विष दूर करने में। सर्वलिपिसु = सभी लिपियों में। कौशलम् = निपुणता। अवाप = प्राप्त की। सहजा = स्वाभाविक। वृकोदरस्येव = भीम के समान। आविर्बभूव = उत्पन्न हुई। सर्वलोकविस्मयजननी = सारे संसार को चकित करने वाली। महाप्राणता = बलवता। कृपाणप्रहारेण = तलवार के प्रहार से। बालतरून् = छोटे-छोटे पेड़ों को। मृणालदंडानिव = कमल के समान। लुलाव = काट दिया। दशपुरुषसंवहनयोग्येन = दस पुरुषों से उठाये जा सकने वाले। अयोदण्डेन = लोहे के डण्डे से। श्रमम् = व्यायाम। ऋते च = छोड़कर। अनुचकार = अनुसरण किया। सर्वविश्रम्भस्थानम् = सभी प्रकार का विश्वासपात्र। निमेषमपि = पलमात्र भी। शशाक = सका। न विरहाञ्चकार = अलग नहीं करता था, नहीं छोड़ता था।

हिन्दी अनुवाद– तारापीड ने नगर के बाहर शिप्रा नदी के किनारे चूने से उजले चहारदीवारी से घिरी हुई एक बहुत बड़ी पाठशाला बनवायी। उसने एक शुभ दिन वैशम्पायन के साथ चन्द्रापीड को आचार्यों से सम्पूर्ण विद्या सीखने के लिए भेज दिया। राजा प्रतिदिन विलासवती के साथ वहाँ जाकर उसे देख लिया करते थे। चन्द्रापीड ने भी थोड़े ही समय में योग्य शिष्य होने के कारण अपनी कुशलता प्रकट करने वाले उत्साह से भरे आचार्यों द्वारा बतायी गयी सभी विद्याएँ ग्रहण कर लीं। वह व्याकरण,

मीमांसा, न्याय, धर्मशास्त्र, राजनीति, व्यायाम-विद्या, सभी हथियारों की विद्या, रथ हाँकने, घुड़सवारी करने, वीणा-बाँसुरी आदि बाजों के बजाने, नृत्य विद्या, संगीत विद्या, पक्षियों की भाषा के ज्ञान, यन्त्रों के प्रयोग, विष को दूर करने, सभी लिपियों एवं सभी देश की भाषाओं तथा दूसरी कलाओं में भी निपुणता प्राप्त कर ली। उसमें सारे संसार को चकित करने वाली भीम जैसी स्वाभाविक बलवत्ता (शारीरिक शक्ति) भी उत्पन्न हो गई। वह तलवार के एक ही वार से छोटे-छोटे पेड़ों को काट गिराता था। शारीरिक शक्ति को छोड़कर अन्य सभी कलाओं में वैशम्पायन ने उसका अनुसरण किया। वह चन्द्रापीड का सभी प्रकार से विश्वासपात्र अभिन्न-हृदय मित्र था। चन्द्रापीड उसके बिना क्षणमात्र भी नहीं रह सकता था। वैशम्पायन भी उसे क्षणमात्र के लिए भी नहीं छोड़ता था।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– वैशम्पायनद्वितीयम् = वैशम्पायनः द्वितीयः यस्य तम्। उपजातोत्साहैः = उपजातः उत्साहः येषां तैः। कृपाणप्रहारेण = कृपाणस्य प्रहारः तेन। दशपुरुषसंवहनयोग्येन = दशपुरुषैः संवहनयोग्यः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश के पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश के पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. 'सहजा चास्य वृकोदरस्येव आविर्बभूव सर्वलोकविस्मयजननी महाप्राणता।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– उस (चन्द्रापीड) की भीम के समान सम्पूर्ण संसार को आश्चर्यचकित करने वाली स्वाभाविक बलवत्ता भी उत्पन्न हो गई।

प्रश्न 3. बहिर्नगरात् विद्यामन्दिरं केन अकारयत्?

उत्तर– राजा तारापीडः बहिर्नगरात् विद्यामन्दिरम् अकारयत्।

प्रश्न 4. विद्यामन्दिरः कस्या नद्या परिगता आसीत्?

उत्तर– विद्यामन्दिरः शिप्रा नद्या परिगता आसीत्।

प्रश्न 5. चन्द्रापीडः कस्येव महाप्राणता आविर्बभूव?

उत्तर– चन्द्रापीडः बृकोदरस्येव महाप्राणता आविर्बभूव।

प्रश्न 6. चन्द्रापीडस्य परं मित्रं कः आसीत्?

उत्तर– चन्द्रापीडस्य परं मित्रं वैशम्पायनः आसीत्।

19. अथ तस्य चन्द्रापीडस्य यौवनारम्भः प्रादुर्भवन् द्विगुणां रमणीयतां पुपोष। वक्षः स्थलं वितस्तार। ऊरुदण्डद्वयम् अपूर्यत। मध्यभागः तनिमानम् अभजत्। नितम्बागः प्रथिमानम् आतताम। भुजयुगलं प्रलम्बताम् उपययौ। भुजशिखरदेशः गुरुः बभूव। स्वरश्च गम्भीरताम् आजगाम। एवं च क्रमेण समारूढयौवनारम्भम् अधीताशेषविद्यम् अनुमोदितम् आचार्यैः चन्द्रापीडम् आनेतुं राजा बलाधिकृतं वलाहकनामानं प्राहिणोत्। स गत्वा विद्यागृहम्, द्वाःस्थैः समावेदितः प्रविश्य प्रणम्य व्यजिज्ञपत्– ''कुमार! महाराजःसमाज्ञापयति–पूर्णाः नः मनोरथाः। अधीतानि शास्त्राणि अनुमतोऽसि निर्गमाय सर्वाचार्यैः। अयम् अत्र भवतो दशमः वत्सरः विद्यागृहम् अधिवसतः। प्रविष्टोऽसि षष्ठे वर्षेः। एवं संपिण्डितेन षोडशेन प्रवर्धसे। तत् अद्य निर्गत्य यथासुखम् अनुभव राज्यसुखानि।

शब्दार्थ– तस्य = उसके। चन्द्रापीडस्य = चन्द्रापीड के। यौवनारम्भः = युवावस्था में पहुँचने पर। प्रादुर्भवन् = प्रकट होते ही। द्विगुणाम् = दूनी। रमणीयताम् = सुन्दरता। पुपोष = बढ़ी। वक्षस्थलम् = छाती। वितस्तार = फैल गई, चौड़ी हो गई। उरुदण्डद्वयम् = दोनों जाँघें। अपूर्यत् = भर गईं। मध्यभागः = कमर। तनिमानम् = क्षीणता को। अभजत् = प्राप्त हुई। प्रथिमानम् = मोटाई को। आतताम् = फैल गये। भुजयुगलम् = दोनों भुजाएँ। प्रलम्बताम् = लम्बाई को। उपययौ = पहुँच गई। भुजशिखरदेशः = भुजाओं के सिरे का भाग। गुरुः = भारी। समारूढयौवनारम्भः = युवावस्था में पहुँच जाने वाले। अधीता शेषविद्यम् = सम्पूर्ण विद्याओं को सीख लेने वाले। अनुमोदितम् = स्वीकृत किये गये। आनेतुम् = लाने के लिए। बलाधिकृतम् = सेनापति को। प्राहिणोत् = भेजा। विद्यागृहम् = पाठशाला। द्वास्थैः = द्वारपालों द्वारा। समावेदितः = निवेदित होकर। व्यजिज्ञपत् = सूचना दी। समाज्ञापयति = आदेश दिया है। नः = हम लोगों का। पूर्णः = पूरे हो गये। अधीतानि = पढ़ लिये गये। अनुमतोऽसि = अनुमति मिल गई

है। निर्गमाय = जाने के लिए। वत्सरः = वर्ष। अधिवसतः = रहते हुए। संपिडितेन = मिलाने से। निर्गम्य = यहाँ से चलकर। अद्य = आज। अनुभव = भोग करो। राज्यसुखानि = राज्य के सुखों को।

हिन्दी अनुवाद– युवावस्था में पहुँचते ही चन्द्रापीड की सुन्दरता दूनी होकर बढ़ने लगी। छाती चौड़ी हो गई। दोनों जाँघें भर गईं (सुगठित हो गईं) कमर पतली हो गई, नितम्ब के हिस्से मोटे होकर फैल गये, दोनों भुजाएँ लम्बी हो गयीं, भुजाओं के सिरे भारी हो गये और स्वर में गम्भीरता आ गई। इस प्रकार क्रमशः युवावस्था में पहुँचते हुए, सम्पूर्ण विद्याओं को सीखने वाले तथा आचार्यों से अनुमति प्राप्त कर चन्द्रापीड को लाने के लिए राजा ने बलाहक नाम के सेनापति को भेजा। वह पाठशाला में जाकर तथा द्वारपालों से सूचना भेजकर भीतर पहुँचा और प्रणाम करके बोला– कुमार, राजा ने आदेश दिया है कि हम लोगों की अभिलाषाएँ पूरी हो गयीं। आपने सभी शास्त्रों को पढ़ लिया। आचार्यों ने आपको यहाँ से जाने की अनुमति दे दी है। इस विद्याभवन में रहते हुए दसवाँ साल है और छः वर्ष की आयु में आप यहाँ आये हुए थे। इस प्रकार मिलाकर आप 16 वर्ष के हो गये। इसलिए आप यहाँ से चलकर राज्यसुख का उपभोग करें।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– यौवनारम्भः = यौवनस्य आरम्भः। समारूढयौवनारम्भम् = समारूढः यौवनस्य आरम्भः यस्य तम्। अधीताशेषविद्यम् = अधीता अशेषा विद्या येन तम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. 'कुमार! महाराजःसमाज्ञापयति–पूर्णाः नः मनोरथाः।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– कुमार! राजा ने आदेश दिया है कि हम लोगों की अभिलाषा पूरी हो गई।

प्रश्न 3. चन्द्रापीडस्य भुजशिखरदेशः कीदृशी बभूव?

उत्तर– चन्द्रापीडस्य भुजशिखरदेशः गुरुः बभूव।

प्रश्न 4. चन्द्रापीडम् आनेतुं राजा केन प्राहिणोत्?

उत्तर– चन्द्रापीडम् आनेतुं राजा बलाधिकृतं वलाहकनामानं प्राहिणोत्।

प्रश्न 5. चन्द्रापीडः कति वर्षाणि विद्यागृहम् अधिवसति?

उत्तर– चन्द्रापीडः दशवर्षाणि विद्यागृहम् अधिवसति।

20. अयं च ते त्रिभुनैकरत्नम् इन्द्रायुधनामा तुरङ्गमः महाराजेन प्रेषितः द्वारि तिष्ठति। एष खलु देवस्य पारसीकाधिपतिना 'जलनिधिजलात् उत्थितम् अयोनिजम् अश्वरत्नम् आसादितं मया महाराजाधिरोहणयोग्यम्' इति संदिश्य प्रहितः। तदयम् अनुगृह्यताम् अधिरोहणेन'' इत्यभिधाय विरतवचसि वलाहके चन्द्रापीडः पितुः आज्ञां शिरसि कृत्वा, निर्जिगमिषुः अखिललक्षणोपेतम् अतिप्रमाणम् इन्द्रायुधम् अद्राक्षीत। दृष्ट्वा च तम् अदृष्टपूर्वम् अश्वरूपातिशयं नितरां चन्द्रापीडः विस्मितः बभूव। आसीच्चास्य मनसि– अतितेजस्वितया महाप्राणतया च सदैवतेव इयम् अस्य आकृतिः। यत् सत्यम् आरोहणे शङ्कामिव मे जनयति। देवतान्यपि हि शापवशात् शरीरान्तराणि अध्यासत एव। असंशयम् अनेनापि केनापि महात्मना शापभाजा भवितव्यम्। आवेदयतीव मदन्तःकरणम् अस्य दिव्यताम्।

शब्दार्थ– अयं = यह। ते = तुम्हारा। त्रिभुवनैकरत्नम् = तीनों लोकों में एक मात्र रत्न। तुरङ्गमः = घोड़ा। महाराजेन = महाराजा द्वारा। प्रेषित = भेजा गया। द्वारि = दरवाजे पर। तिष्ठति = खड़ा है। पारसीकाधिपतिना = फारस देश के राजा द्वारा। जलनिधि-जलात् = समुद्र के जल से। उत्पतितम् = निकले हुए। अयोनिजम् = योनि से पैदा न होने वाले। महाराजाधिरोहण-योग्यम् = महाराज की सवारी के योग्य। आसादितम् = पाया है। संदिश्य = संदेश देकर। प्रहित = भेजा है। अनुगृह्यताम् = कृपा करें। इत्यभिधाय = ऐसा कहकर। विरतवचसि = चुप हो जाने पर। शिरसि कृत्वा = सिर पर धारण करके। निर्जिगमिषुः = जाने की इच्छा वाला। अखिललक्षणोपेतम् = सभी लक्ष्णों से युक्त। अतिप्रमाणाम् = बड़ी अकृति वाले। अद्राक्षीत् = देखा। अदृष्टपूर्वम् = पहले न देखे हुए। अश्वरूपातिशम् = घोड़े के रूप का अतिक्रमण करने वाले। नितराम् = अत्यन्त। आसीच्चास्य = हुआ, उसके। तेजस्वितया = तेजस्वी होने के कारण। महाप्राणतया = बहुत बलवान होने के कारण। सदैवतेव = देवता से युक्त। आरोहणे

= सवारी करने में। देवतान्यपि = देवता लोग भी। शापवशात् = शाप के कारण। शरीरान्तराणि = दूसरा शरीर। अध्यासत = धारण करते हैं। असंशयम् = निः संदेह। शापभाजा = शाप ग्रहण करने वाला। आवेदयतीव = बोलता रहा है। मदन्तःकरणम् = मेरा अन्तःकरण। दिव्यताम् = देवत्व।

हिन्दी अनुवाद– तुम्हारे लिए महाराजा द्वारा भेजा हुआ तीनों लोक में एक रत्न के समान इन्द्रायुध नाम का एक घोड़ा द्वार पर खड़ा है। महाराज ने यह संदेश भेजा है कि समुद्र के जल से उत्पन्न, अयोनिज (जिसका जन्म योनि से न हुआ हो) एवं महाराज की सवारी के योग्य इस श्रेष्ठ घोड़े को मैंने पारस (फारस) देश के राजा से प्राप्त किया है। इसलिए इस पर सवारी करके हमें अनुगृहीत करें। ऐसा कहकर वलाहक के चुप हो जाने पर चन्द्रापीड ने पिता की आज्ञा सिर पर धारण करके जाने की इच्छा से सभी लक्षणों से युक्त बहुत बड़ी आकृति वाले इन्द्रायुध को देखा। सामान्य घोड़ों की आकृति से विशेष आकृति रखने वाले तथा पहले कभी न देखे हुए उस घोड़े को देखकर चन्द्रापीड को बहुत ही आश्चर्य हुआ। उसके मन में ऐसा विचार उत्पन्न हुआ कि अत्यन्त तेजस्विता एवं शक्ति के कारण इसकी आकृति देवताधिष्ठित-सी प्रतीत हो रही है जो सचमुच इस पर सवारी करने में मुझे शंकित कर रही है। देवता लोग भी शाप के कारण अन्य शरीर धारण करते ही हैं। निश्चय ही यह महात्मा किसी शाप में ग्रस्त हुआ है। मेरा मन इसकी दिव्यता को बतला रहा है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– त्रिभुवनैकरत्नम् = त्रिभुवनेषु एक एव रत्नम्। पारसीकाधिपतिना = पारसीकस्य अधिपतिः तेन। अखिललक्षणोपेतम् = अखिल लक्षणैः उपेतम्। आसीच्चास्य आसीत्+च+अस्य। सदैवतैव = सदेवता+इव। देवतान्यपि = देवतानि+अपि। आवेदयतीव = आवेदयति+इव।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश के पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश के पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।
प्रश्न 2. 'आवेदयतीव मदन्तःकरणम् अस्य दिव्यताम्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– मेरा अन्तःकरण (मन) इसकी दिव्यता (देवत्व भाव) को सूचित कर रहा है।
प्रश्न 3. महाराजेन प्रेषितः तुरङ्गस्य किं नाम आसीत्?
उत्तर– महाराजेन प्रेषितः तुरङ्गस्य इन्द्रायुध नाम आसीत्।
प्रश्न 4. इन्द्रायुध कीदृशीव आसीत्?
उत्तर– त्रिभुवनैकरत्नम् इव आसीत्।
प्रश्न 5. इन्द्रायुध नाम्नः तुरङ्गं केन अधिपतिना प्राप्नोति?
उत्तर– पारसीकाधिपतिना प्राप्नोति।

21. इति विचिन्तयन्नेव आरुरुक्षुः तं तुरङ्गमम् उपसृज्य, महात्मन्! अर्वन्! योऽसि सोऽसि। नमोऽस्तु ते। मर्षणीयोऽयम् आरोहणातिक्रमः इति आमन्त्रयांबभूव। विदिताभिप्राय इव सः इन्द्रायुधः तम् तिर्यक् चक्षुषा विलोक्य, हेषारवम् अकरोत्। अथानेन मधुरहेषितेन दत्ताभ्यनुज्ञ इव इन्द्रायुधम् आरुह्य चन्द्रापीडः तुरगान्तरारूढेन वैशम्पायनेन अनुगम्यमानः, प्रस्थाय सकुतूहलैः नागरलोकैः प्रणम्यमानः, राजगृहद्वारम् आसाद्य तुरगात् अवततार। अवतीर्य च करतले करे वैशम्पायनम् अवलम्ब्य, सविनयं पुरः प्रतिस्थतेन वलाहकेन उपदिश्यमानमार्गः, सप्तकक्षान्तराणि अतिक्रम्य, हंसधवले शयनतले निषण्णम् पितरम् अपश्यत्।

शब्दार्थ– विचिन्तयन्नेयेव = सोचते हुए। आरुरुक्षुः = चढ़ने की इच्छा वाला। उपसृत्य = पास में जाकर। अर्वन् = घोड़े। योऽसि सोऽसि = जो हो सो हो। नमोऽस्तु = नमस्कार है। मर्षणीयः = क्षमा के योग्य। आरोहणातिक्रमः = चढ़ने का अपराध। आमंत्रयाम्बभूव = आमन्त्रित किया। विदिताभिप्रायः = अभिप्राय समझ जाने वाले। तिर्यक् चक्षुषा = तिरछी निगाहों से। विलोक्य = देखकर। हेषारवम् = हिनहिनाने का शब्द। दत्ताभ्यनुज्ञः = आज्ञा दिया हुआ। तुरगान्तरारूढेन = दूसरे घोड़े पर सवार। अनुगम्यमानः = अनुसरण करने पर। प्रस्थाय = प्रस्थान करके। सकुतूहलैः = उत्सुकतापूर्ण। नागरलोकैः = नागरिक लोगों द्वारा। प्रणम्यमानः = प्रणाम किया जाने वाला। राजगृहद्वारम् = राजमहल के द्वारा पर। आसाद्य = पहुँचकर। तुरगात् = घोड़े से। अवततार = उतर

पड़ा। अवलम्ब्य = सहारा लेकर। सविनयम् = विनम्रता के साथ। पुनः = आगे। प्रस्थितेन = चलने वाले। उपदिश्यमानमार्ग = बताये गये मार्ग वाला। सप्तकक्षान्तराणि = सात ड्योढ़ियों को। अतिक्रम्य = पार करके। हंसधवले = हंस के समान उजले। शयनतले = शैया पर। निषण्णम् = बैठे हुए।

हिन्दी अनुवाद– ऐसा विचार करता हुआ वह उस (घोड़े) पर सवार होने की इच्छा से उसके पास जाकर बोला– हे महात्मा घोड़े! आप चाहे जो हों, आपको नमस्कार है। सवारी करने के मेरे इस दोष को क्षमा करें। ऐसा कहकर उसे सवारी के लिए निमंत्रित किया। उसके अभिप्राय को समझ जाने वाले इन्द्रायुध ने उसे तिरछी निगाहों से देखा और हिनहिनाने की आवाज की। इस मधुर हिनहिनाहट से मानो उसने सवारी करने की आज्ञा दे दी। चन्द्रापीड ने इन्द्रायुध पर सवार होकर प्रस्थान किया। दूसरे घोड़े पर सवार वैशम्पायन भी उसके पीछे-पीछे चला। उत्सुकता से पूर्ण नागरिकों के प्रणाम को स्वीकार करता हुआ वह राजमहल के द्वार पर पहुँचकर घोड़े से उतर पड़ा और वैशम्पायन का हाथ पकड़े हुए विनम्रता के साथ आगे-आगे चलने वाले वलाहक द्वारा बताये गये मार्ग से सात ड्योढ़ियों को पार करके उसने हंस के समान उजली शैया पर बैठे हुए अपने पिता को देखा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– विदिताभिप्रायः = विदित अभिप्रायः। उपदिश्यमानमार्ग = उपदिश्यमानः मार्गः यस्य सः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत्।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. 'मर्षणीयोऽयम् आरोहणातिक्रमः इति आमन्त्रयांबभूव।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– सवारी करने के मेरे इस अपराध को क्षमा करें। ऐसा कहकर उसे सवारी के लिए निमंत्रित किया।

प्रश्न 3. चन्द्रापीडः केन अनुगम्यमानः?

उत्तर– चन्द्रापीडः वैशम्पायनेन अनुगम्यमानः।

प्रश्न 4. केन उपदिश्यमानमार्गः?

उत्तर– वलाहकेन उपदिश्यमानमार्गः।

प्रश्न 5. हंसधवले शयनतले किम् अपश्यत्?

उत्तर– हंसधवले शयनतले पितरम् अपश्यत्।

22. दृष्ट्वा च तम् अतिदूरावनतेन शिरसा प्रणनाम्। तारापीडस्तु तम् 'एहि एहि' इत्यभिदधानः दूरादेव प्रसारितभुजयुगलः सुदृढम् आलिलिङ्ग। आलिङ्गितोन्मुक्तश्च चन्द्रापीडः पितुः चरणसमीपे क्षितितल एव निषसाद। मुहूर्तमिव स्थित्वा पिता विसर्जितः मातरम् उपसृत्य प्रणम्य वैशम्पायनद्वितीयः शुकनासं द्रष्टुम् अयासीत्। द्वारदेश एवं अवस्थाप्य तुरङ्गमम् उपदर्शितविनयः प्रविश्य भवनं दूरावनतेन मौलिना शुकनासं ववन्दे। शुकनासः ससम्भ्रमम् उत्थाय गाढम् आलिलिङ्ग। अथ तेन सबहुमानम् आशीर्भिः अभिनन्द्य विसर्जितः स्वभवनम् आजगाम। तत्र स्नानादिकाः क्रियाः कृत्वा तं दिवसम् अत्यवाहयत्।

शब्दार्थ– अतिदूरावनतेन = अत्यन्त दूर से झुके हुए। शिरसा = सिर से। प्रणनाम = प्रणाम किया। एहि एहि = आओ आओ। इत्यभिदधानः = ऐसा कहते हुए। प्रसारितभुजयुगलः = दोनों भुजाएँ फैलाकर। सुदृढ़म् = मजबूती से। आलिलिंग = आलिंगन किया। आलिंगितोन्मुक्तश्च = आलिंगन से छूटे हुए। क्षितितले = पृथ्वी पर। निषसाद = बैठ गया। मुहूर्तमिव = थोड़ी देर। स्थित्वा = ठहरकर। विसर्जितः = विदा पाकर। अपसृत्य = जाकर। अयासीत् = चला गया। अवस्थाप्य = खड़ा करके। उपदर्शितविनयः = विनय दिखाते हुए। दूरावनतेन = दूर ही से झुके हुए। मौलिना = सिर से। वन्दे = प्रणाम किया। ससम्भ्रमम् = सहसा। उत्थाय = उठकर। गाढम् = दृढ़ता के साथ। सबहुमानम् = आदर के साथ। आशीर्भिः = आशीर्वादों से। अभिनन्द्य = सत्कार करके। विसर्जित = विदा पाकर। आजगाम = आया। अत्यवाहयत् = बिताया।

हिन्दी अनुवाद– उसे देखकर दूर ही से झुके हुए सिर से प्रणाम किया। तारापीड ने आओ-आओ कहते हुए दूर ही से अपनी भुजाएँ फैलाकर उसे दृढ़ता के साथ हृदय से लगा लिया। आलिंगन से छूटा हुआ चन्द्रापीड पिता के चरणों के पास पृथ्वी

पर ही बैठ गया। थोड़ी देर ठहरकर और पिता से विदा पाकर वह माँ के पास गया और प्रणाम करके वैशम्पायन के साथ शुकनास को देखने के लिए चल दिया। दरवाजे पर ही घोड़े को रोककर बड़ी विनम्रता के साथ महल में जाकर उसने दूर से झुके हुए सिर से शुकनास को प्रणाम किया। शुकनास ने झटके से उठकर उसे गले से लगा लिया। चन्द्रापीड आदर के साथ दिये गये आशीर्वादों से सत्कृत होकर अपने महल में चला आया और स्नानादि कार्य करके उस दिन को व्यतीत किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– इत्यभिदधान = इति+अभिदधानः। प्रसारितभुजयुगलः = प्रसारितम् भुजयुगलम् येन सः। उपदर्शितविनयः = उपदर्शितः विनयः येन सः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश के पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश के पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. 'मुहूर्तमिव स्थित्वा पिता विसर्जितः मातरम् उपसृत्य प्रणम्य वैशम्पायनद्वितीयः शुकनासं द्रष्टुम् अयासीत्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– थोड़ी देर ठहरकर और पिता से विदा पाकर वह माँ के पास गया और प्रणाम करके वैशम्पायन के साथ शुकनास को देखने चल दिया।

प्रश्न 3. तारापीडः कस्य आलिंगम् अकरोत्?

उत्तर– तारापीडः चन्द्रापीडस्य आलिङ्गम् अकरोत्।

प्रश्न 4. चन्द्रापीडः कुत्र निषसाद?

उत्तर– चन्द्रापीडः पितुः चरणंसमीपे क्षिततले निषसाद।

प्रश्न 5. चन्द्रापीडः केन द्रष्टुम् अयासीत्?

उत्तर– चन्द्रापीडः वैशम्पायेन सह शुकनासं द्रष्टुम् अयासीत्।

23. अपरेद्युश्च प्रभाते सर्वान्तः पुराधिकृतिः कैलासनामा कञ्चुकी रक्तांशुकेन रचितावगुण्ठनया महानुभावाकारया कन्यकया अनुगम्यमानः समुपसृत्य चन्द्रापीड विज्ञापयामास। कुमार, महादेवी विलासवती समाज्ञापयति–इयं खलु कन्यका, महाराजेन पूर्वं कुलूतराजधानीम् अवजित्य, कुलूतेश्वरदुहिता पत्रलेखाभिधाना बालिका सती बन्दीजनेन सह आनीय अन्तःपुरपरिचारिकामध्यम् उपनीता। सा मया 'विगतनाथा राजदुहिता' इति समुपजातस्नेहया दुहितृनिर्विशेषम् उपलालिता संवर्धिता च। तदियम् इदानीम् 'उचिता भवतः ताम्बूलकरङ्कवाहिनी' इति कृत्वा मया प्रेषिता। न चास्याम् आयुष्मता परिजनसामान्यदृष्टिना भक्तिवयम्। स्वचित्तवृत्तिरिव सा चापलेभयः निवारणीया। शिष्येव द्रष्टव्या। अविदितशीलश्चास्याः कुमारः इति संदिश्यते। सर्वथा तथा प्रयतितव्यम् यथेयम् अतिचिरम् उचिता परिचारिका ते भवति। इत्यभिधाय विरतवचसि कैलासे, चन्द्रापीडः 'यथाज्ञापयत्यम्बा' इत्युक्त्वा तं प्रेषयामास। पत्रलेखा तु, ततः प्रभृति समुपजातसेवारसा, सर्वदा राजसूनोः पार्श्वं न मुमोच।

शब्दार्थ– अपरेद्युः = दूसरे दिन। प्रभाते = प्रातः समय। सर्वान्तः पुराधिकृतः = सारे रनिवास का अधिकारी। रक्तांशुकेन = लाल कपड़े से। रचितावगुण्ठनया = घूँघट डाले हुए। महानुभावाकारया = गम्भीर आकृति वाली। समुपसृत्य = पास में आकर। विज्ञापयामास = निवेदन किया। अवजित्य = जीतकर। कुलूतेश्वरदुहित = कुलूत के राजा की पुत्री। बन्दीजनेन सह = कैदियों के साथ। आनीय = लाकर। अन्तःपुरपरिचारिकामध्यम् = रनिवास की सेविकाओं के बीच। उपनीता = नियुक्त किया। विगतनाथाः = अनाथ। समुपजातस्नेहया = प्रेम उत्पन्न होने के कारण। दुहितृनिर्विशेषम् = पुत्री के समान। उपलालिता = लाड़ प्यार की गई। संवर्धिता = बड़ी की गई। उचिता = योग्य। भवतः = आपकी। ताम्बूलकरङ्कवाहिनी = पानदान लेकर चलने वाली। कृत्वा = ऐसा नियुक्त करके। प्रेषितः = भेजी गई है। परिजनसामान्यदृष्टिना = साधारण सेविका जैसी दृष्टि से। स्वचित्तवृत्तिरिव = अपनी भावनाओं के समान। चापलेभयः = चंचलता से। निवारणीया = रोकना। अविदितशीलश्चास्याः = इसके शील को नहीं जानते। प्रयतितव्यम् = प्रयत्न करें। यथेयम् = जिससे यह। उचिता परिचारिका = योग्य सेविका। इत्थभिधाय = ऐसा कहकर। यथाज्ञापयत्यम्बा = माँ की जैसी आज्ञा। इत्युक्त्वा = ऐसा कहकर। ततः प्रभृति = उसी समय से। समुपजातसेवारसा = सेवा का आनन्द प्राप्त करने वाली। राजसूनोः = राजपुत्र का। पार्श्वम् = साथ। मुमोच = छोड़ा।

हिन्दी अनुवाद– दूसरे दिन प्रातःकाल कैलाश नाम का रनिवास का एक अधिकारी लाल कपड़े का घूँघट डाले हुए अपने पीछे-पीछे आने वाली अत्यन्त गम्भीर आकृति की कन्या के साथ चन्द्रापीड के पास आकर बोला– कुमार, महादेवी ने आज्ञा दी है कि महाराज ने कुलूत देश को जीतकर उस देश के राजा की पुत्री पत्रलेखा को कैदियों के साथ यहाँ लाकर रनिवास की सेविकाओं के बीच नियुक्त कर दिया था। उसे अनाथ राजपुत्री जानकर मेरे मन में उसके प्रति प्रेम हो गया। मैंने उसे अपनी पुत्री के समान पाल-पोस कर बड़ा किया है। 'अब यह पानदान का डिब्बा लेकर चलने वाली तुम्हारी योग्य सेविका बने' ऐसा सोचकर भेजा है। आयुष्मान् उसके प्रति साधारण सेविका की दृष्टि न रखें और अपनी भावनाओं के समान ही इसे भी चंचलता से रोकें। इसे अपनी शिष्या के समान देखें। राजकुमार इसके शील स्वभाव को नहीं जानते इसलिए संदेश भेजा जा रहा है। सर्वदा ऐसा प्रत्यन करें जिससे बहुत दिनों तक यह आपकी योग्य सेविका बनी रहे। ऐसा कहकर कैलाश के चुप हो जाने पर चंद्रापीड ने कहा कि माँ की जैसी आज्ञा यह कहकर उसने कैलाश को भेज दिया। उसी समय से सेवा का आनन्द प्राप्त कर लेने वाली पत्रलेखा ने राजपुत्र का साथ कभी नहीं छोड़ा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– रचितावगुण्ठनया = रचितम् अवगुण्ठनम् यया तया। समुपजातस्नेहया = समुपजातः स्नेहः यस्यां तया। ताम्बूलकरङ्कवाहिनी = ताम्बूलस्य करङ्कं या वहति सा। यथेयम् = यथा + इयम्। यथाज्ञापयत्यम्बा = यथा+आज्ञापयति+अम्बा। इत्युक्त्वा = इति+उक्त्वा।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. ''सा मया 'विगतनाथा राजदुहिता' इति समुपजातस्नेहया दुहितृनिर्विशेषम् उपलालिता संवर्धिता च।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– उसे अनाथ राजपुत्री जानकर मेरे मन में उसके प्रति सहज स्नेह उत्पन्न होने के कारण मैंने उसे अपनी पुत्री के समान पाल-पोसकर बड़ा किया।

प्रश्न 3. पुराधिकृतिः किम् नाम आसीत्?

उत्तर– पुराधिकृतिः कैलास नाम आसीत्।

प्रश्न 4. कुलूतराजधानीं कः अविजित्?

उत्तर– महाराज तारापीडेन कुलूतराधानीम् अविजित्।

प्रश्न 5. पत्रलेखा का आसीत्?

उत्तर– कुलूतेश्वर दुहिता आसीत्।

प्रश्न 6. चन्द्रापीडस्य ताम्बूलकरङ्कवाहिनी का आसीत्?

उत्तर– चन्द्रापीडस्य ताम्बूलकरङ्कवाहिनी पत्रलेखा आसीत्।

24. एवं समतिक्रामस्तु केषुचित् दिवसेषु, राजा चन्द्रापीडस्य यौवराज्याभिषेकं चिकीर्षुः, प्रतीहारान् उपकरणसम्भारसंग्रहार्थम् आदिदेश। अथ सम्पादितेषु सर्वोपकरणेषु, पुरोधसा राज्याभिषेकमङ्गलानि अशेषाणि निर्वर्त्य नरपतिः शुकनासेन हंस स्वयम् उत्क्षिप्तमङ्गलकलशः, सर्वेभ्यः तीर्थेभ्यः समाहृतेन मन्त्रपूतेन वारिणा सुतम् अभिषिषेच। अभिषेकसलिलार्द्रदेहः चन्द्रापीडः सभामण्डपम् उपगम्य, सर्वतः 'जय जय' इति समुद्घुष्यमाणजयशब्दः सिंहासनम् आरुरोह।

शब्दार्थ– समतिक्रामत्सु = बीतने पर। केषुचित् = कुछ। यौवराज्याभिषेकम् = युवराज पद पर अभिषेक। चिकीर्षुः = करने की इच्छा से। प्रतीहारान् = प्रतिहारियों को। उपकरणसम्भारसंग्रहार्थम् = (पुरोहित द्वारा) आवश्यक सामग्री एकत्र कर लेने हेतु। सर्वोपकरणेषु = सारी सामग्री। अशेषाणि = सम्पूर्ण। निवर्त्य = पूरा करके। उत्क्षिप्तमंगलकलशः = मंगलकलश उठाकर। समाहृतेन = लाये गये। मन्त्रपूतेन = मंत्रों से पावन। वारिणा = जल से। अभिषिषेच = अभिषिक्त किया। अभिषेक- सलिलार्द्रदेहः = अभिषेक के जल से भीगे शरीरवाले। उपगम्य = जाकर। समुद्घुष्यमाणः जयशब्द; = जिसकी जयकार की गई हो। आरुरोह = बैठा।

हिन्दी अनुवाद– इस प्रकार कुछ दिन बीतने पर राजा चन्द्रापीड को युवराज पद पर अभिषेक करने की इच्छा से प्रतिहारियों को बुलाकर आवश्यक सामग्री जुटाने का आदेश दिया। इसके पश्चात् सभी सामग्री इकट्ठा हो जाने पर पुरोहित ने राज्याभिषेक के सभी मंगल कार्यों को पूरा किया। तब राजा ने शुकनास के साथ स्वयम् मंगलघट को उठाकर सभी तीर्थों से लाये गये मंत्रों से पवित्र जल से पुत्र का अभिषेक किया। अभिषेक के जल से भीगे शरीर वाला चन्द्रापीड सभामंडप में आकर सिंहासन पर बैठा, जहाँ चारों ओर से उसके जयकार की घोषणा हो रही थी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– उपकरणसम्भारसंग्रहार्थम् = उपकरणस्य संभारः तस्य संग्रहार्थम्। उत्क्षिप्तमंगलकलशः = उत्क्षिप्तः मंगलस्य कलशः येन सः। मंत्रपूतेन = मंत्रैः पूतं तेन। अभिषेकसलिलार्द्रदेहः = अभिषेकस्य सलिलेन आर्द्रः यस्य देहः सः। समुद्घुष्यमाणः जयशब्दः = समदुघुष्यमाणः जयशब्द यस्य सः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश के पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश के पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. 'अभिषेकसलिलार्द्रदेहः चन्द्रापीडः सभामण्डपम् उपगम्य, सर्वतः 'जय जय' इति समुद्घुष्यमाणजयशब्दः सिंहासनम् आरुरोह।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– अभिषेक के जल से भीगे शरीर वाला चन्द्रापीड सभा मण्डप के पास आकर बैठा, जहाँ सभी दिशाओं से उसके जयकार की घोषणा हो रही थी।

प्रश्न 3. राजा कस्य यौवराज्याभिषेकम् आदिदेश?

उत्तर– चन्द्रापीडस्य यौवराज्याभिषेकम् आदिदेश।

प्रश्न 4. राजा कान् उपकरणसम्भार संग्रहार्थम् आदिदेश?

उत्तर– राजा प्रतीहारान् उपकरणसम्भार संग्रहार्थम् आदिदेश।

प्रश्न 5. राजा केन सह मन्त्रपूतेन वारिणा सुतम् अभिषिषेच?

उत्तर– राजा शुकनासेन सह मन्त्रपूतेन वारिणा सुतम् अभिषिषेच।

25. अथ दिग्विजयाय प्रस्थितः चन्द्रापीडः महता बलसमूहेन वैशम्पायनेन च अनुगम्यमानः प्रदक्षिणीकृत्य वसुधां परिभ्रमन् प्रथमं प्राचीम्, ततः त्रिशङ्कुतिलकाम्, ततो वरुणलाञ्छनां, अनन्तरं सप्तर्षिताराशबलां दिशं विजिग्ये। तत्र तत्र शरणागतान् रक्षन्, उपायनानि प्रतीच्छन्, देशव्यवस्थाः स्थापयन्, अग्रजन्मनः पूजयन्, यशः विस्तारयन्, पृथिवीं विचचार। एवं क्रमेण अवजितसकलभुवनतलः कदाचित् किरातानां निवासस्थानं सुवर्णपुरं पूर्वजलनिधेः नातिविप्रकृष्ट जित्वा जग्राह। तत्र च निजबलस्य विश्रामहेतोः कतिपयान् दिवसान् अतिष्ठत्।

शब्दार्थ– दिग्विजयाय = दिग्विजय के लिए। प्रस्थितः = प्रस्थान करने वाला। बलसमूहेन = सेनाओं से। प्रदक्षिणीकृत्य = प्रदक्षिणा करके। वसुधाम् = पृथ्वी की। परिभ्रमन् = भ्रमण करते हुए। प्राचीम् = पूर्व दिशा। त्रिशङ्कुतिलकाम् = त्रिशाङ्कु (दक्षिण दिशा) से सुशोभित। वरुणलाञ्छनान् = वरुण से चिह्नित अर्थात् पश्चिम दिशा। सप्तर्षिताराशबलाम् = सप्तर्षि तारों से सुशोभित अर्थात् उत्तर दिशा। विंजिग्ये = जीत लिया। शरणागतान् = शरण में आये हुए को। रक्षन् = रक्षा करते हुए। उपायनानि प्रतीच्छन् = भेंट स्वीकार करते हुए। विचचार = विचरण किया। अवजितसकलभुवनतलः = सारी पृथ्वी को जीतने वाला। कदाचित् = किसी समय। किरातानाम् = किरातों के। पूर्वजलनिधेः = पूर्व समुद्र से। नातिविप्रकृष्टम् = अत्यन्त दूर नहीं, अर्थात् समीप। जित्वा = जीतकर। जग्राह = अधिकार में कर लिया। निजवलस्य = अपनी सेना के। विश्रामहेतोः = विश्राम के लिए। कतिपयान् = कुछ। अतिष्ठत् = ठहरा।

हिन्दी अनुवाद– इसके बाद बहुत बड़ी सेना तथा वैशम्पायन के साथ दिग्विजय के लिए प्रस्थान करने वाले चन्द्रापीड ने सारी पृथ्वी की प्रदक्षिणा करते हुए पहले पूर्व दिशा फिर दक्षिण दिशा, फिर पश्चिम दिशा, फिर उत्तर दिशा को जीत लिया। वहाँ शरणागतों की रक्षा करते हुए, भेंट स्वीकार करते हुए, देशों में व्यवस्था स्थापित करते हुए, ब्राह्मणों की पूजा करते हुए,

कीर्ति का विस्तार करते हुए उसने सारी पृथ्वी का भ्रमण किया। इस प्रकार सारी पृथ्वी को जीतकर किसी समय उसने पूर्व समुद्र के समीप किरातों की निवास भूमि सुवर्णपुर को जीत कर अपने अधिकार में कर लिया। वहाँ वह अपनी सेना के विश्राम के लिए कुछ दिन ठहरा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– त्रिशङ्कुतिलकाम् = त्रिशङ्कुः तिलकः यस्यास्ताम्। वरुणलाञ्छनाम् = वरुणः लाञ्छनः यस्याः ताम्। सप्तर्षिताराशबलाम् = सप्तर्षिभिः ताराभिः शबला या ताम्। अवजितसकलभुवनतलः = अवजितम् सकलभुवनतलम् येन सः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. **प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत्।**

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. **'एवं क्रमेण अविजितसकलभुवनतलः कदाचित् किरातानां निवासस्थानं सुवर्णपुरं पूर्वजलनिधेः नातिविप्रकृष्टं जित्वा जग्राह।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**

उत्तर– इस प्रकार सम्पूर्ण पृथ्वी को जीतने वाला (वह चन्द्रापीड) किसी समय पूर्व समुद्र के समीप में स्थित किरातों की निवास भूमि सुवर्णपुर को भी जीतकर अपने अधीन कर लिया।

प्रश्न 3. **चन्द्रापीडः केन सह अनुगम्यमानः दिशं विजिग्ये?**

उत्तर– चन्द्रापीडः बलसमूहेन वैशम्पायनेन च अनुगम्यमानः दिशं विजिग्ये।

प्रश्न 4. **चन्द्रापीडः कस्य रक्षाम् अकरोत्?**

उत्तर– चन्द्रापीडः शरणागतान् रक्षाम् अकरोत्।

प्रश्न 5. **किरातानां निवासस्थानं सुवर्णपुरं कः जित्वा जग्राह?**

उत्तर– चन्द्रापीडः किरातानां निवासस्थानं सुवर्णपुरं जित्वा जग्राह।

26. एकदा तु तत्रस्थ एव इन्द्रायुधम् आरुह्य, मृगयानिर्गतः विचरन् काननम् शैलशिखरात् यदृच्छया अवतीर्णम् किन्नरमिथुनम् अद्राक्षीत्। अपूर्वदर्शनतया तु समुपजातकुतूहलः कृतग्रहणाभिलाषः तत्समीपम् उपसर्पन् अदृष्टपूर्वपुरुषदर्शनत्रासात् पलायमानं तत् सुदूरम् अनुससार। इदं गृहीतम्, इदं गृहीतम् इति अतिरभसाकृष्टचेताः महाजवतया तुरङ्गस्य तस्मात् प्रदेशात् असहायः पञ्चदशयोजनमात्रम् संमुखापतितम् अत्युच्छ्रितम् अचलशिखरम् आरुरोह।

शब्दार्थ– तत्रस्थ एव = वहीं रहते हुए। आरुह्य = सवार होकर। मृगयानिर्गतः = शिकार के लिए निकला हुआ। विचरन् = घूमता हुआ। काननम् = जंगल। शैलशिखरात् = पर्वत की चोटी से। यदृच्छया = स्वेच्छा से। अवतीर्णम् = उतरे हुए। किन्नरमिथुनम् = किन्नरों के जोड़े को। अद्राक्षीत् = देखा। अपूर्वदर्शनतया = पहले न देखने के कारण। समुपजातकुतूहलः = उत्पन्न कौतूहल वाला। कृतग्रहणाभिलाषः = पकड़ने की इच्छा रखनेवाला। उपसर्पन् = जाते हुए। अदृष्ट पूर्व पुरुषदर्शनत्रासात् = पहले न देखे हुए पुरुष को देखने के भय से। पलायमानम् = भाग जाने वाले। अनुससार = पीछा किया। इदं गृहीतम् = यह पकड़ा। अतिरभसाकृष्टचेताः = बहुत वेग से आकृष्ट चित्तवाला। महाजवतया = बहुत वेग के कारण। तुरंगस्य = घोड़े के। असहायः = अकेला। पंचदशयोजनामात्रम् = पन्द्रह योजना। सम्मुखापतितं = सामने दिखाई देने वाले। अत्युच्छ्रितम् = अत्यन्त ऊँचे। अचलशिखरम् = पहाड़ की चोटी पर। आरुरोह = चढ़ गया।

हिन्दी अनुवाद– वहीं रहते हुए एक बार इन्द्रायुध पर चढ़कर, शिकार के लिए निकलकर वन में घूमते हुए राजकुमार ने पर्वत की चोटी से अपनी इच्छा से उतरे हुए एक किन्नर के जोड़े को देखा। पहले कभी न देखने के कारण अत्यन्त उत्सुक होकर वह उसे पकड़ने की इच्छा से उसके पास गया और पहले कभी न देखे गये पुरुष को देखकर भागने वाले उस जोड़े का बहुत दूर तक पीछा किया। यह पकड़ा, यह पकड़ा इस प्रकार शीघ्रता में मग्न हुआ चन्द्रापीड घोड़े की अत्यन्त तेज चाल के कारण अकेले ही उस स्थान से पन्द्रह योजन की दूरी पर सामने पड़ने वाले बहुत ऊँचे पहाड़ की चोटी पर चढ़ गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– समुपजातकुतूहलः = समुपजातं कुतूहलम् यस्य सः। कृतग्रहणाभिलाषः = कृता ग्रहणस्य अभिलाषा येन सः। अदृष्टपूर्वपुरुषदर्शनत्रासात् =अदृष्टपूर्वस्य पुरुषस्य दर्शनेन त्रासः तस्मात्। अतिरभसाकृष्टचेताः = अतिरभसा आकृष्टन् चेतः यस्य सः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश के पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश के पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. 'अपूर्वदर्शनतया तु समुपजातकुतूहलः कृतग्रहणाभिलाषः तत्समीपम् उपसर्पन् अदृष्टपूर्वपुरुषदर्शनत्रासात् पलायमानं तत् सुदूरम् अनुससार।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– पहले कभी न देखने के कारण अत्यन्त उत्सुक होकर वह उसे पकड़ने की इच्छा से उसके पास गया और पहले कभी न देखे गये पुरुष को देखकर भागने वाले उस जोड़ों का बहुत दूर तक पीछा किया।

प्रश्न 3. चन्द्रापीडः किम् अद्राक्षीत्?

उत्तर– चन्द्रापीडः किन्नरमिथुनम् अद्राक्षीत्।

प्रश्न 4. अपूर्व दर्शनतया कः समुपजातकुतूहलः?

उत्तर– चन्द्रापीडः अपूर्वदर्शनतया समुपजातकुतूहलः।

प्रश्न 5. चन्द्रापीडः कुतः आरुरोह?

उत्तर– चन्द्रापीडः अचलशिखरम् आरुरोह।

27. आरूढे च तस्मिन् शनैः शनैः ततः दृष्टिं निवर्त्य, प्रस्तरप्रतिहतगतिप्रसरः, श्रमस्वेदार्द्रशरीरम् इन्द्रायुधम् आत्मानं च अवलोक्य, स्वयमेव विहस्य अचिन्तयत्–अहो मे निरर्थकव्यापारेषु अभिनिवेशः, अहो मे मूर्खतायाः प्रकारः, अहो मे बालिशचरितेषु आसक्तिः, किमनेन गृहीतेन किन्नरयुगलेन प्रयोजनम्? कस्मात् अहम् आविष्ट इव निजपरिवारान् उत्सृज्य, भूमिम् एतावतीम् आयातः। न जाने कियताध्वना विच्छिन्नम् इतः बलम् अनुयायि मे। न चागच्छता मया किन्नरमिथुने बद्धदृष्टिना महावनेऽस्मिन् पन्थाः निरूपितः, येन प्रतिनिवृत्य यास्यामि। न चास्मिन् प्रदेशे परिभ्रमता मया मर्त्यः कश्चित् आसाद्यते, यः सुवर्णपुरगामिनं पन्थानम् उपदेक्ष्यति। श्रुतं च मया बहुशः कथ्यमानम्–'उत्तरेण सुवर्णपुरं निर्मानुषम् अरण्य, तच्चातिक्रम्य कैलासगिरिः इति' अयं च कैलास।

शब्दार्थ– आरूढे च तस्मिन् = उसके चढ़ जाने पर। शनैः शनैः = धीरे-धीरे। ततः = वहाँ से। दृष्टिं निवर्त्य = निगाहें हटाकर। प्रस्तरप्रतिहतगतिप्रसरः = पत्थरों के कारण रुकी हुई गतिवाला। श्रमस्वेदार्द्रशरीरम् = पसीने से भीगे शरीरवाले। आत्मानम् = अपने को। अवलोक्य = देखकर। विहस्य = हँसकर। अचिन्तयत् = विचार किया। निरर्थकव्यापारेषु = व्यर्थ के कार्यों में। अभिनिवेशः = हठ बालिशचरितेषु = मूर्खों जैसे कार्य में। गृहीतेन = पकड़ने से। आविष्ट इव = भूतप्रेत से वशीभूत जैसा। निजपरिवारान् = अपने परिवार के लोगों को। उत्सृज्य छोड़कर। एतावतीम् = इतनी। आयातः = आया हूँ। कियताध्वना = कितने मार्ग से, कितनी दूर विच्छिन्नम् = छूट गये हैं। आगच्छता = आते हुए। बद्धदृष्टिना = नजर बाँधे हुए। निरूपितः = देखा। प्रतिनिवृत्य = लौटकर। यास्यामि = जाऊँगा। मर्त्यः = मनुष्य। आसाद्यते = मिलेगा। उपदेक्ष्यति = दिखायेगा। बहुशः = बहुत लोगों के। कथ्यमानम् = कहते हुए। निर्मानुषम् = मनुष्य रहित। अरण्यम् = जंगल। तच्चातिक्रम्य = उसे पार करके।

हिन्दी अनुवाद– उसके (किन्नर जोड़े के) चोटी पर चढ़ जाने पर उधर से अपनी निगाहें हटाकर पत्थरों के कारण आगे बढ़ने में असमर्थ चन्द्रापीड पसीने से लथपथ घोड़े तथा अपने को देखकर स्वयं ही हँसते हुए विचार करने लगा– इस प्रकार के व्यर्थ के काम में मेरे हठ, मेरी इस मूर्खता पर और मूर्खों के कार्य में मेरे इस प्रकार आसक्त हो जाने पर मुझे स्वयं आश्चर्य हो रहा है। इस किन्नर जोड़े को पकड़ने से मेरा कौन-सा प्रयोजन सिद्ध होता है? मैं कैसे भूतप्रेतों के वश में पड़ा हुआ-सा अपने परिवार वालों को छोड़कर इतनी दूर चला आया। पता नहीं यहाँ से कितनी दूर मेरे अनुयायी और मेरे सैनिक छूट गये हैं। आते समय किन्नर जोड़े पर निगाहें लगाये रहने के कारण इस घने जंगल में मैंने मार्ग का भी ध्यान नहीं रखा जिससे लौट चलूँ। इस प्रान्त में मुझे कोई मनुष्य भी नहीं मिलेगा जो मुझे सुवर्णपुर का रास्ता बतायेगा। मैंने बहुत से लोगों को कहते हुए सुना है कि– सुवर्णपुर के उत्तर में मनुष्य-रहित जंगल है और उसको पार करने के बाद कैलास पहाड़ है। तो क्या यह कैलास है?

व्याकरणात्मक टिप्पणी– प्रस्तरप्रतिहतगतिप्रसरः = प्रस्तरेण प्रतिहतः गतिप्रसरः यस्य सः। श्रमस्वेदार्द्रशरीरम् = श्रमस्य स्वेदैः आर्द्रशरीरम् यस्य तम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. **प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।**

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. **'अहो मे निरर्थकव्यापारेषु अभिनिवेशः, अहो मे मूर्खतायाः प्रकारः।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**

उत्तर– इस प्रकार के व्यर्थ के कार्यों में मेरा (यह) आग्रह, अहो मेरी मूर्खता का यह कैसा प्रकार है।

प्रश्न 3. **श्रमस्वेदार्द्रशरीरम् कः?**

उत्तर– श्रमस्वेदार्द्रशरीरम् चन्द्रापीडः।

प्रश्न 4. **कः अचिन्तयत्?**

उत्तर– चन्द्रापीडः अचिन्तयत्।

प्रश्न 5. **चन्द्रापीडः विहस्य किम् अचिन्तयत्?**

उत्तर– अहो मे निरर्थक व्यापारेषु अभिनिवेशः।

28. तदिदानीं प्रतिनिवृत्य एकाकिना स्वयम् उत्प्रेक्ष्योत्प्रेक्ष्य दक्षिणाम् आशां केवलम् अङ्गीकृत्य गन्तव्यम्। आत्मकृतनां हि दोषाणां नियतम् अनुभवितव्यं फलम् आत्मनैव। अयम् अधुना भगवान् भानुः नभोमध्यम् अलङ्करोति। परिश्रान्तश्चायम् इन्द्रायुधः। तदेनम् आगृहीतकतिपयदूर्वाप्रवालकवलम् कस्मिंश्चित् सरसि स्नातपीतोदकम् अपनीतश्रमं कृत्वा, स्वयं च सलिलं पीत्वा, कस्यचित् तरोः अधः छायायां मुहूर्तमात्रं विश्रम्य ततः गमिष्यामि– इति चिन्तयित्वा सलिलम् अन्वेषमाणः, मुहुर्मुहुः इतस्ततः दत्तदृष्टिः पर्यटन्, जलावगाहोत्थितस्य अचिरात् अपक्रान्तस्य महतः गिरिवरस्य वनगजयूथस्य चरणोत्थापितः पङ्कपटलैः आर्द्रीकृतं मार्गम् अद्राक्षीत्। उपजातजलाशयशङ्कश्च तं प्रतीपम् अनुसरन् कैलासतलेन कञ्चित् अध्वानं गत्वा, तस्यैव कैलासशिखरिणः पूर्वोत्तरे दिग्भागे, तरुषण्डमेकम् अत्यायतं प्रविश्य, तस्य मध्यभागे, स्वच्छसलिलतया, आपूर्णपर्यन्तमपि रिक्तमिव उपलक्ष्यमाणम् अतिमनोहरम् अखिलेन्द्रियाह्लादनसमर्थम् अच्छोदं नाम सरो दृष्टवान्।

शब्दार्थ– तदिदानीम् = तो अब। एकाकिना = अकेले। उत्प्रेक्ष्योत्प्रेक्ष्य = अनुमान करके। आशाम् = दिशा को। अंगीकृत्य = स्वीकार करके। आत्मकृतानाम् = अपने किये हुए। नियतम् = निश्चय ही। अनुभवितव्यम् = भोगना होगा। अधुना = इस समय। भानुः = सूर्य। नभोमध्यम् = आकाश के बीच। अलंकरोति = सुशोभित हो रहे हैं। परिश्रान्तः = थका हुआ है। आगृहीत-कतिपयदूर्वाप्रवालकवलम् = दूब के कुछ नरम-नरम कवल को ग्रहण करने वाले। कस्मिंश्चित् = किसी। सरसि = तालाब में। स्नातपीतोदकम् = स्नान करने वाले, पानी पीये हुए। अपनीतश्रमम् = थकान रहित। अधः = नीचे। चिन्तयित्वा = सोचकर। अन्वेषमाणः = खोजते हुए। मुहुर्मुहुः = बार-बार। इतस्ततः = इधर-उधर। दत्तदृष्टिः = दृष्टि डालते हुए। पर्यटन = घूमते हुए। जलावगाहोत्थितस्य = जल में स्नान करके निकले हुए। अचिरात् = शीघ्र ही। अपक्रान्तस्य = गए हुए। गिरिवरस्य = पहाड़ के समान। वनगजयूथस्य = जंगली हाथियों के झुण्ड के। चरणोत्थापितैः = चरणों से उठाई गई। पङ्कपटलैः = कीचड़ के समूह से। आर्द्रीकृतम् = गीले किये गये। मार्गम् = रास्ते को। अद्राक्षीत् = देखा। उपजातजलाशयशङ्कश्च = जिसे जलाशय की शंका उत्पन्न हो गई है। प्रतीयम् = विरुद्ध। अनुसरन् = जाते हुए। कञ्चित् = कुछ। अध्वानम् = मार्ग। कैलाशशिखरिणः = कैलाश के। पूर्वोत्तरे दिग्भागे = पूर्व उत्तर की ओर। तरुषण्डमेकम् = एक वृक्षों के समूह। अत्यायतम् = बहुत बड़े। प्रविश्य = प्रवेश करके। मध्यभागे = बीच में। स्वच्छसलिलतया = स्वच्छजल के कारण। आपूर्णपर्यन्तमपि = ऊपर तक भरे होने पर भी। रिक्तमिव = खाली जैसा। उपलक्ष्यमाणम् = दिखाई पड़ने वाले। अखिलेन्द्रियाह्लादनसमर्थम् = सभी इन्द्रियों को आनन्दित करने में समर्थ। सरो = तालाब। दृष्टवान् = देखा।

हिन्दी अनुवाद– इसलिए अब अकेले लौटकर अनुमान करके दक्षिण दिशा की ओर चलना चाहिए। अपने किये गये दोषों का फल स्वयं निश्चय ही भोगना पड़ता है। इस समय भगवान सूर्य भी आकाश के बीच में सुशोभित हो रहे हैं। यह इन्द्रायुध भी थक चुका है। अतः इसे कोमल-कोमल दूबों के कुछ ग्रास खा लेने पर इसे स्नान कराकर तथा जल पिलाकर थकान रहित करके और स्वयं भी जल पीकर किसी पेड़ के नीचे छाया में थोड़ी देर विश्राम करके तब चलूँगा। चन्द्रापीड इस प्रकार सोचकर जल की खोज में बार-बार इधर-उधर निगाहें दौड़ाते हुए घूमने लगा कि इसी बीच उसने जल में डुबकी लगाकर निकले तथा शीघ्र

ही गये हुए पर्वत जैसा जंगली हाथियों के झुण्ड के पैरों से उठे हुए कीचड़ से भीगे रास्ते को देखा। उसे देखकर (समीप में ही) जल मिलने का सन्देह होने पर उसके विपरीत दिशा में चलते-चलते कैलाश पहाड़ के उत्तर-पूर्व की ओर एक बहुत बड़े वृक्षों के समूह में प्रवेश करके उसके बीच अच्छोद नाम के तालाब को देखा, जो जल की स्वच्छता के कारण भरा होने पर भी खाली दिखाई पड़ता था और सभी इन्द्रियों को आनन्दित कर रहा था।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– आगृहीतकतिपयदूर्वाप्रवालकवलम् = आगृहीतानि। कतिपयानि दूर्वाणाम् प्रवालस्य कवलानि येन तम्। जलावगाहोत्थितस्य = जलावगाहात् उत्थितस्य। चरणोत्थापितैः = चरणैः उत्थापितैः। उपजातजलाशयशङ्कश्च = उपजाता जलाशयस्य शङ्का यस्मिन् सः। स्वच्छ सलिलतया = स्वच्छ यत्सलिलम् तस्य भावः तथा।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश के पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश के पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. 'आत्मकृतनां हि दोषाणां नियतम् अनुभवितव्यं फलम् आत्मनैव।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– अपने किये गये दोषों का फल निश्चित रूप से स्वयं ही भोगना पड़ता है।

प्रश्न 3. केन दिशां केवलम् अङ्गीकृत्य गन्तव्यम्?

उत्तर– दक्षिणां दिशां केवलम् अङ्गीकृत्य गन्तव्यम्।

प्रश्न 4. नभोमध्यम् कः अलङ्करोति?

उत्तर– भगवान् भानुः नभोमध्यम् अलङ्करोति।

प्रश्न 5. सरोवरस्य किं नाम आसीत्?

उत्तर– सरोवरस्य अच्छोद नाम आसीत्।

29. तदावलोकनमात्रेणैव अपगतश्रमः तस्य दक्षिणं तीरमासाद्य तुरगात् अवततार। अवतीर्य च व्यपनीतपर्याणम् इन्द्रायुधं क्षितितललुठितोत्थितं गृहीतकतिपययवसग्रासम् सरोऽवतार्य पीतसलिलम् इच्छया स्नातं च उत्थाप्य समीपवर्तिनः तरोः मूलशाखायां कनकमय्या शृङ्खलया चरणौ बद्ध्वा स्वयमपि सलिलम् अवततार। प्रक्षालितकरयुगलः जलमयम् आहारं कृत्वा, सरः सलिलात् उदगात्। प्रत्यग्रभग्नैः अतिशिशिरैः कमलिनीपलार्शैः लतामण्डपपरिक्षिप्ते शिलातले स्वस्तरम् आस्तीर्य निषसाद।

शब्दार्थ– तदावलोकनमात्रेणैव = उसको देखने मात्र से ही। अपगतश्रमः = थकान रहित होकर। दक्षिणतीरम् = दाहिने किनारे। आसाद्य = पहुँचकर। तुरगात् = घोड़े से। अवततार = उतरा। अवतीर्य = उतरकर। व्यपनीतपर्याणम् = जिसकी जीन उतार दी गई हो उसको। क्षितितललुठितोत्थितं = पृथ्वी पर लोटकर उठे हुए। गृहीतकतिपययवसग्रासम् = घास के कुछ ग्रास लेने वाले। सरोऽवतार्य = तालाब में उतरकर। पीतसलिलम् = जिसने पानी पी लिया हो। स्नातम् = स्नान किये हुए। उत्थाप्य = जल से बाहर लाकर। समीपवर्तिनः = पास के ही। कनकमय्या = सोने से बनी। शृङ्खलया = साँकल से। प्रक्षालितकर युगल = दोनों हाथ धोने वाले। जलमयम् आहारम् कृत्वा = पानी पीकर। उदगात् = निकला। प्रत्यग्रभग्नैः = तुरन्त के तोड़े गए। अतिशिशिरैः = अत्यन्त ठण्डे। कमलिनीपलाशैः = कमल के पत्तों से। लतामण्डपपरिक्षिप्ते = लता मण्डप में पड़े हुए। शिलातले = पत्थर की चट्टान पर। स्वस्तरम् = बिछौना। आस्तीर्य = बिछाकर। निषसाद = बैठा।

हिन्दी अनुवाद– उस तालाब को देखने मात्र से ही थकान रहित होकर चन्द्रापीड उसके दाहिने किनारे पर पहुँचकर घोड़े से उतर पड़ा और उसने घोड़े की पीठ से जीन उतार दी। इन्द्रायुध पृथ्वी पर लोटकर खड़ा हुआ और घास के कुछ ग्रास खाये। तब उसे तालाब में उतारकर उसके पानी पीने और इच्छानुसार स्नान कर लेने पर चन्द्रापीड उसे पानी से बाहर करके समीप के ही पेड़ की शाखा में सोने की साँकल से उसके पैरों को बाँधकर स्वयम् पानी में उतर गया और दोनों हाथों को धोकर पानी पीकर जल से बाहर आया। फिर ताजे तोड़े गये कमल के पत्तों को लता मण्डप में पड़े हुए पत्थर पर बिछाकर बैठ गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– तदवलोकनमात्रेणैव = तद्+अवलोकनमात्रेण+ एव। अपगतश्रमः = अपगतः श्रमः यस्य सः। व्यपनीतपर्याणम् = व्यपनीतम् पर्याणम् यस्य तम्। गृहीतकतिपयवसग्रासम् = गृहीतानि कतिपयानि यवसग्रासानि यस्मै तम्। पीतसलिलम् = पीतम् सलिलम् येन तम्। प्रक्षालितकरयुगलः = प्रक्षालितं करयुगलम् येन सः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. **प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।**

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. **'तदावलोकनमात्रेणैव अपगतश्रमः तस्य दक्षिणं तीरमासाद्य तुरगात् अवततार।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**

उत्तर– उसको देखने मात्र से ही थकान रहित होकर उसके दक्षिणी तट पर पहुँचकर घोड़े से उतर गये।

प्रश्न 3. **कस्य अवलोकनमात्रेणैव अपगतश्रमः बभूव?**

उत्तर– आच्छोद सरोवरस्य अवलोकनमात्रेणैव अपगतश्रमः बभूव।

प्रश्न 4. **क्षितितललुठितोत्थितम् कः?**

उत्तर– इन्द्रायुधं क्षितितललुठितोत्थितम्।

प्रश्न 5. **इन्द्रायुधस्य चरणौ केन अबध्नात्?**

उत्तर– कनकमय्या शृङ्खलया चरणौ अबध्नात्।

प्रश्न 6. **चन्द्रापीडः कस्मिन् स्रस्तरम् आस्तीर्य निषसाद?**

उत्तर– चन्द्रापीडः शिलातले स्रस्तरम् आस्तीर्य निषसाद।

30. मुहूर्तं विश्रान्तश्च तस्य सरसः उत्तरे तीरे समुच्चरन्तं श्रुतिसुभगं वीणातन्त्रीझङ्कारमिश्रम्, गीतशब्दम् अशृणोत्। श्रुत्वा च 'कुतोऽत्र गीतसंभूतिः' इति समुपजातकुतूहलः दत्तपर्याणम् इन्द्रायुधम् आरुह्य पश्चिमया सरस्तीरसरण्या संप्रतस्थे। तत्र च शून्ये सिद्धायतने चतुःस्तम्भस्फटिकमण्डपिकातलप्रतिष्ठितस्य भगवतः चराचरगुरोः त्र्यम्बकस्य दक्षिणां मूर्तिम् आश्रित्य अभिमुखीम् आसीनाम् उपरचितब्रह्मासनाम् दक्षिणेन करेण वीणाम्। उत्सङ्गगताम् उत्सङ्गगताम् आस्फालयन्तीम् अनेकभावनानुविद्धया गीत्या देवं विरूपाक्षम् उपवीणयन्तीम्, प्रतिपन्नपाशुपतव्रताम् अष्टादशवर्षदेशीयाम् कन्यकां ददर्श। ततोऽवतीर्य तरुशाखायां तुरङ्गमं बद्ध्वा, उपसृत्य भगवते भक्त्या प्रणम्य त्रिलोचनाय, तामेव दिव्ययोषितम् अनिमेषपक्ष्मणा चक्षुषा निरूपयन्, तस्यामेव स्फटिकमण्डपिकायाम् अन्यतमं स्तम्भम् आश्रित्य, गीतंसमाप्त्यवसरं प्रतीक्षमाणः तस्थौ।

शब्दार्थ– मुहूर्तम् = थोड़ी देर। विश्रान्तश्च = आराम करके। सरस = तालाब के। उत्तरे तीरे = उत्तरी किनारे पर। समुच्चरन्तरम् = उच्चरित होने वाले। श्रुतिसुभगम् = कानों को मधुर लगने वाले। वीणतन्त्रीझङ्कारमिश्रम् = वीणा के तारों की झनकार से मिले हुए। गीमतशब्दम् = गाने की ध्वनि को। अशृणोत = सुना। कुतोऽत्र = यहाँ कहाँ। गीतसम्भूतिः = गीत की उत्पत्ति। समुपजातकुतूहलः = उत्सुकतापूर्ण होकर। दत्तपर्याणम् = जीन कसकर। सरस्तीरसरण्या = तालाब के किनारे के रास्ते से। संप्रतस्थे = प्रस्थान किया। सिद्धायतने = देवमन्दिर में। चतुः स्तम्भस्फटिकमण्डपिकातलप्रतिष्ठितस्य = चार खम्भों वाले स्फटिक (विल्लौरी पत्थर) के छोटे से मण्डप में स्थित। चराचरागुरोः = चर और अचर के गुरु। त्र्यम्बकस्य = शंकरजी की। दक्षिणाम् = दक्षिम की ओर मुँह वाली मूर्ति। आश्रित्य = आश्रय लेकर। अभिमुखीम् = सामने। आसीनाम् = बैठी हुई। उपरचितब्रह्मासनाम् = ब्रह्मासन लगाने वाली। दक्षिणेन करेण = दाहिने हाथ में। उत्संगगताम् = गोद में पड़ी हुई। आस्फालयन्तीम् = बजाने वाली। अनेकभावनानुविद्धया = अनेक भावनाओं से भरी हुई। गीत्या = गीत से। विरूपाक्षम् = शिवजी को। उपवीणयन्तीम् = वीणा बजाकर स्तुति करती हुई। प्रतिपन्नपाशुपतव्रताम् = शिवजीका व्रत धारण करनेवाली। अष्टादशवर्षदेशीयाम् = अठारह वर्ष की अवस्थावाली। ददर्श = देखा। अवतीर्य = उतरकर। तरुशाखायाम् = पेड़ की डाल में। अपसृत्य = पास जाकर। भक्त्या = भक्ति के साथ। त्रिलोचनाय = शंकर जी के लिए। दिव्ययोषितम् = दिव्य स्त्री को। अनिमेषपक्ष्मणा = निर्निमेष। चक्षुषा = नेत्रों से। निरूपयन् = देखते हुए। अन्यतमम् = दूसरे। गीतसमाप्त्यवसरम् = गीत समाप्त होने का समय। प्रतीक्षा करता हुआ। तस्थौ = रुका रहा।

हिन्दी अनुवाद– थोड़ी देर विश्राम करने के बाद उसने तालाब के उत्तर किनारे पर उच्चरित होने वाले तथा वीणा के तारों की झनकार से मिले हुए कानों को अत्यन्त प्रिय लगने वाले गीत को सुना। उसे सुनकर उसे अत्यन्त कुतूहल हुआ कि यहाँ इस गीत की उत्पत्ति कहाँ से हो रही है? इसी उत्कंठा में जीन कसकर इन्द्रायुध पर सवार होकर वह तालाब के पश्चिमी किनारे

के रास्ते से चल दिया। वहाँ उसने एक सुनसान देवमंदिर में चार खम्भों वाले स्फटिक से बने छोटे मण्डप में स्थित चराचर के गुरु भगवान शंकर की दक्षिण मूर्ति का आश्रय लेकर ब्रह्मासन लगाकर बैठने वाली, दाहिने हाथ से गोद में पड़ी हुई वीणा को झंकृत करके अनेक भावों से पूर्ण गीत द्वारा भगवान् शंकर की स्तुति करने वाली पाशुपत व्रत में संलग्न अठारह वर्ष की अवस्था वाली एक कन्या को देखा। इसके पश्चात् घोड़े से उतरकर तथा उसे पेड़ की डाली से बाँधकर उसने समीप में जाकर भगवान् शिव को भक्ति के साथ प्रणाम किया और वह निर्निमेष नेत्रों से उसी दिव्य युवती को देखते हुए उसी मण्डप के एक दूसरे खम्भे का सहारा लेकर गीत के समाप्त होने के अवसर की प्रतीक्षा करते हुए ठहरा रहा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– श्रुतिसुभगम् = श्रुतिम् सुभगम्। कुतोऽत्र = कुतः+अत्र। सरस्तीरसरण्या = सरः+तीरसरण्या। प्रतिपन्नपाशुपतव्रताम् = प्रतिपन्नं पाशुपतव्रतं यया ताम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।

प्रश्न 2. 'समुपजातकुतूहलः दत्तपर्याणम् इन्द्रायुधम् आरुह्य पश्चिमया सरस्तीरसरण्या संप्रतस्थे।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– इसी उत्कण्ठा में जीन कसकर इन्द्रायुध पर सवार होकर वह तालाब के पश्चिमी किनारे के रास्ते से चल दिया।

प्रश्न 3. चन्द्रापीडः किम् अशृणोत्?

उत्तर– वीणातन्त्रीझङ्कारमिश्रम् शीतशब्दम् अशृणोत्।

प्रश्न 4. चतुःस्तम्भस्फटिकमण्डपिकातलप्रतिष्ठतस्य कस्य मूर्तिम् आसीत्?

उत्तर– भगवतः चराचरगुरोः त्रयम्बकस्य मूर्तिम् आसीत्।

प्रश्न 5. चन्द्रापीडः केन ददर्श?

उत्तर– चन्द्रापीडः प्रतिपन्नपाशुपतव्रताम् अष्टदशवर्षदेशीयां कन्यकां ददर्श।

31. अथ गीतावसाने मूकीभूतवीणा सा कन्यका समुत्थाय प्रदक्षिणीकृत्य कृतहरप्रणामा परिवृत्य चन्द्रापीडम् आवभाषे–''स्वागतम् अतिथये। कथम् इमां भूमिम् अनुप्राप्तो महाभागः? उत्थाय आगम्यताम्। अनुभूयताम्। अतिथिसत्कारः'' इति। एवम् उक्तस्तु तया संभाषणमात्रेणैव अनुगृहीतम् आत्मानं मन्यमानः उत्थाय भक्त्या कृतप्रणामः–'भगवति यथाज्ञापयसि' इत्यभिधाय शिष्य इव तां व्रजनतीम् अनुवव्राज।

शब्दार्थ– गीतावसाने = गीतगायन की समाप्ति पर। मूकीभूतवीणा = वीणा वादन के रुक जाने पर (मौन हो जाने पर) समुत्थाय = उठकर। प्रदक्षिणीकृत्य = प्रदक्षिणा करके। कृतहरप्रणामा = शंकर जी को प्रणाम करने वाली। परिवृत्य = घूमकर। आबभाषे = बोली। अतिथये = अतिथि के लिए। अनुप्राप्तो = पहुँचे। आगम्यताम् = आइये। अनुभूयताम् = अनुभव कीजिए। सम्भाषणमात्रेणैव = केवल बोलने से ही। मन्यमान = मानते हुए। आत्मानम् = अपने को। कृतप्रणामः = प्रमाण करके। इत्यभिधाय = ऐसा कहकर। व्रजन्तीम् = जाती हुई का। अनुवव्राज = पीछे चला।

हिन्दी अनुवाद– इसके बाद गीत समाप्त हो जाने और वीणा के मौन हो जाने पर वह कन्या उठी और प्रदक्षिणा करके शिव को प्रणाम करने के बाद घूमकर बोली। अतिथि का स्वागत है। आप इस स्थान पर कैसे आ गये? उठिये, आइये और अतिथि-सत्कार ग्रहण कीजिए। उसके ऐसा कहने पर उसके सम्भाषण मात्र से ही अपने को अनुगृहीत मानते हुए उसने उठकर भक्तिपूर्वक प्रणाम किया और 'देवी की जैसी आज्ञा' ऐसा कहकर उस जाती हुई कन्या के पीछे-पीछे शिष्य के समान (चन्द्रापीड) चल पड़ा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– मूकीभूतवीणा = मूकीभूता वीणा यस्याः सा। सम्भाषणमात्रेणैव = सम्भाषणमात्रेण+एव। इत्याभिधाय = इति+अभिधाय।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः?

उत्तर– अस्य गद्यांशस्य प्रणेता 'बाणभट्टः'।

प्रश्न 2. ''स्वागतम् अतिथये। कथम् इमां भूमिम् अनुप्राप्तो महाभागः?'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– अतिथि का स्वागत है। आप इस स्थान पर कैसे आ गये?

प्रश्न 3. गीतावसाने मूकीभूतवीणा का उत्तिष्ठतः?

उत्तर– गीतावसाने मूकीभूतवीणा सा कन्यका (महाश्वेता) उत्तिष्ठतः।

प्रश्न 4. कया प्रदक्षिणाम् अकरोत्?

उत्तर– महाश्वेता प्रदक्षिणाम् अकरोत्।

प्रश्न 5. महाश्वेता का आवभाषे?

उत्तर– ''स्वागतम् अतिथये। कथम् इमां भूमिम् अनुप्राप्तो महाभागः? उत्थाय आगम्यताम्। अनुभूयताम् अतिथिसत्कारः'' इति।

32. पदशतमात्रमिव गत्वा, निरन्तरैः तमालतरुभिः अन्धकारितपुरोभागम्, अन्तःस्थापितमणिकमण्डलुमण्डलाम्, एकान्तावलम्बितयोगपट्टिकाम्, विशाखिकाशिखरनिबद्धेन नारिकेलफलवल्कलमयेन उपानद्युगेन उपेताम्, वल्कलशयनीयसनाथैकदेशाम्, शङ्खमयेन भिक्षाकलापेन अधिष्ठिताम्, सन्निहितभस्मालाबुकाम् गुहाम् अद्राक्षीत्। तस्याश्च द्वारि शिलातले समुपविष्टः वल्कलशयनशिरोभागविन्यस्तवीणया तया विरचिताम् अतिथिसपर्यां सप्रश्रयं प्रतिजग्राह। कृतातिथ्यया तया द्वितीयशिलातलोपविष्टया क्रमेण परिपृष्टः दिग्विजयादारभ्य, किन्नरमिथुनानुसरणप्रसङ्गेन आगममनम् आत्मनः सर्वम् आचचक्षे।

शब्दार्थ– पद्शतमात्रम् = केवल सौ कदम। निरन्तरैः = एक में सटे हुए, घने। तमालतरुभिः = तमाल के पेड़ों से। अन्धकारितपुरोभागम् = जिसके सामने का भाग अंधकार से भरा है। अन्तःस्थापितमणिकमण्डलुमण्डलाम् = जिसके भीतर मणियों के कमण्डलु रखे हुए हैं। एकान्तावलम्बितयोगपट्टिकाम् = जिसके एक कोने में योगपट्टिका लटकी हुई है। विशाखिकाशिखरनिबद्धेन = लोहे की खूँटी में बँधी। नारिकेलफलवल्कलमयेन = नारियल के छिलके से बने हुए। उपानद्युगेन = एक जोड़े जूते से। उपेताम् = युक्त। वल्कलशयनीयसनाथैकदेशाम् = वल्कल की शैया से युक्त एक भागवाली। शङ्खमयेन = शङ्ख से बने हुए। भिक्षाकपालेन = भिक्षापात्र से। अधिष्ठिताम् = युक्त। सन्निहितभस्मालाबुकाम् = भस्म की तुम्बी से युक्त। गुहाम् = गुफा को। अद्राक्षीत् = देखा। द्वारि = दरवाजे पर । समुपविष्टः = बैठे हुए। वल्कलशयनशिरोभागविन्यस्तवीणया = वल्कल के बिछौने के सिरहाने वीणा रख देने वाली। विरचिताम् = बनाई गई। अतिथिसपर्याम् = अतिथि की पूजा। प्रतिजग्राह = ग्रहण किया। कृतातिथ्यया = अतिथि सत्कार कर लेने वाली। द्वितीय शिलातलोपविष्टया = दूसरी चट्टान पर बैठी हुई। परिपृष्टः = पूछे जाने पर। दिग्विजयादारभ्य = दिग्विजय से लेकर। किन्नरमिथुनानुसरणप्रसंगेन = (किन्नरमिथुनस्य अनुसरणम् तस्य प्रसंगेन किन्नर जोड़े के पीछा करने के प्रसंग से। आगमन = आना। आत्मनः = अपना। आचचक्षे = बताया।

हिन्दी अनुवाद– केवल सौ कदम चलकर चन्द्रापीड ने एक गुफा देखी जिसके सामने का भाग घने तमाल वृक्षों के कारण अन्धकारपूर्ण था, जिसके भीतर मणियों के कमंडल रखे हुये थे, एक कोने में योगपट्टिका लटक रही थी, एक लोहे की कील पर बँधा हुआ नारियल की जटा से बना हुआ एक जोड़ा जूता रखा था, एक किनारे वल्कल का बिस्तर लगा हुआ था और शंख का बना हुआ भिक्षापात्र तथा भस्म की तुम्बी रखी हुई थी। वह गुफा के द्वार पर चट्टान के ऊपर बैठ गया। उस कन्या ने वल्कल के बिछौने के सिरहाने वीणा रखकर अतिथि-सत्कार की सामग्री उसके सामने रख दी, जिसे उसने अत्यन्त विनय के साथ ग्रहण किया। अतिथि-सत्कार करने के पश्चात् दूसरी चट्टान पर बैठकर उसके पूछने पर चन्द्रापीड ने दिग्विजय से लेकर किन्नर जोड़े का पीछा करने के प्रसंग में अपने वहाँ तक आने का सारा समाचार कह सुनाया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अन्धकारितपुरोभागम् = अन्धकारितपुरोभागः यस्याः सा ताम्। एकान्तावलम्बितयोगन-पट्टिकाम् = एकान्ते अवलम्बिता योगपट्टिका यस्याः ताम्। अन्तःस्थापितमणिकमण्डलुमण्डलाम् = अन्तःस्थापितम् मणिकमण्डलुमंडलाम् यस्याः ताम्। वल्कलशयनीय सनाथैकदेशाम् = वल्कलस्य शयनीयेन सनाथः एकदेशः यस्याः सा ताम्। सन्निहितभस्मालाबुकाम् = सन्निहिता भस्मस्य अलाबुका यस्याम् ताम्। वल्कलशयनशिरोभागविन्यस्तवीणया = वल्कलस्य शयनीयस्य शिरोभागे विन्यस्ता वीणा यया सा तया। द्वितीयशिलातलोपविष्टया = द्वितीये शिलातले उपविष्टा या तया।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।

प्रश्न 2. 'दिग्विजयादारभ्य, किन्नरमिथुनानुसरणप्रसङ्गेन आगममनम् आत्मनः सर्वम् आचचक्षे।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– (चन्द्रापीड ने) दिग्विजय से लेकर किन्नर जोड़े का पीछा करने के प्रसंग में अपने वहाँ तक आने का सारा समाचार कह सुनाया।

प्रश्न 3. चन्द्रापीडः पदशतमात्रमिव गत्वा किम् अद्राक्षीत्?

उत्तर– चन्द्रापीडः पदशतमात्रमिव गत्वा गुहाम् अद्राक्षीत्।

प्रश्न 4. गुहाः पुरोभागं कैः तरुभिः परिवृतम्?

उत्तर– गुहाः पुरोभागं तमालतरुभिः परिवृतम्।

प्रश्न 5. केन अतिथिसपर्यां सप्रश्रयं प्रतिजग्राह।

उत्तर– चन्द्रापीडेन अतिथिसपर्यां सप्रश्रयं प्रतिजग्राह।

33. अथ सा कन्यका समुत्थाय शङ्खमयं भिक्षाकपालम् अदाय, तरुतलेषु विचचार। अचिरेण तस्याः स्वयं पतितैः फलैः अपूर्यत, भिक्षाभाजनम्। आगत्य च तेषाम् उपयोगाय नियुक्तवती चन्द्रापीडम्। चन्द्रापीडस्तु ''चित्रमिदम् आलोकितम् अस्माभिः अदृष्टपूर्वम्, यत् व्यपगतचेतना अपि वनस्पतयः सचेतना इव अस्यै भगवत्यै प्रयच्छन्ति फलानि'' इति अधिकतरोपजातविस्मयः उत्थाय तमेव प्रदेशम् इन्द्रायुधम् आनीय, व्यपनीतपर्याणं नातिदूरे संयम्य, निर्झरजलनिर्वर्तितस्नानविधिः, तान्यमृतरसस्वादून्युपभुज्य फलानि, पीत्वा च तुषारशिशिरं प्रस्रवणजलम् उपस्पृश्य एकान्ते तावत् अवतस्थे।

शब्दार्थ– समुत्थाय = उठकर। तरुतले = वृक्ष के नीचे। विचचार = घूमने लगी। अचिरेण = शीघ्र ही। तस्याः = उसका। स्वयं पतितैः = अपने आप गिरे हुए। अपूर्यत् = भर गया। भिक्षाभाजनम् = भिक्षापात्र। आगत्य = आकर। उपयोगाय = उपयोग करने के लिए। चित्रमिदम् = यह आश्चर्य। अवलोकितम् = देखा। व्यपगतचेतना = अचेतन। वनस्पतयः = वृक्ष। प्रयच्छन्ति = देते हैं। अधिकतरोपजातविस्मयः = और भी अधिक आश्चर्य वाला। आनीय = लाकर। व्यपनीतपर्याणम् = जीन से उतरे हुए। संयम्य = बाँधकर। निर्झरजलनिर्वर्तितस्नानविधिः = झरने के जल से स्नान करने वाले। तान्यमृतरसस्वादून्युपभुज्य = उन अमृत रस जैसे स्वादिष्ट फलों को खाकर। तुषारशिशिरम् = तुषार जैसे ठंडे। प्रस्रवणजलम् = झरने का पानी। उपस्पृश्य = हाथ-मुँह धोकर। अवतस्थे = बैठ गया।

हिन्दी अनुवाद– इसके बाद वह कन्या शंख से बने भिक्षापात्र को लेकर वृक्षों के नीचे घूमने लगी। शीघ्र ही अपने-आप गिरे हुए फलों से उसका पात्र भर गया। लौटकर उसने चन्द्रापीड को उन्हें खाने के लिए कहा– ''मैंने आज यह अपूर्व आश्चर्यजनक बात देखी कि अचेतन होते हुए भी ये पेड़ सचेतन के समान इस देवी को फल दे रहे हैं'' इस प्रकार और भी अधिक आश्चर्यचकित हो चन्द्रापीड ने इन्द्रायुध को उसी जगह लाकर बाँध दिया और झरने के जल से स्नान करके उन अमृतरस जैसे फलों का भोजन किया तथा झरने का शीतल जल पिया। फिर वह मुँह धोकर निश्चिन्त होकर एकान्त में बैठ गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– निर्झरजलनिर्वर्तितस्नानविधिः = निर्झरजलेन निर्वर्तितास्नानविधिः येन सः। तान्यमृतरसस्वादून्युपभुज्य = तानि+अमृतरसस्वादूनि+ उपभुज्य।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांशः केन विरचित पुस्तकात् उद्धृतः?

उत्तर– उपरोक्त गद्यांश बाणभट्टेन विरचित पुस्तकात् उद्धृतः।

प्रश्न 2. **''चित्रमिदम् आलोकितम् अस्माभिः अदृष्टपूर्वम्, यत् व्यपगतचेतना अपि वनस्पतयः सचेतना इव अस्यै भगवत्यै प्रयच्छन्ति फलानि।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**

उत्तर– मैंने आज यह अपूर्व आश्चर्यजनक बात देखी कि अचेतन होते हुए भी ये पेड़ सचेतन के समान इस देवी को फल दे रहे हैं।

प्रश्न 3. **तरुतलेषु विचचार का?**

उत्तर– सा कन्यका तरुतलेषु विचचार।

प्रश्न 4. **सा कन्यका केन आदाय तरुतलेषु विचचार?**

उत्तर– भिक्षाकपालम् आदाय तरुतलेषु विचचार।

प्रश्न 5. **'तरुतलेषु' में कौन-सी विभक्ति है?**

उत्तर– 'तरुतलेषु' में सप्तमी विभक्ति है।

34. अथ च निर्वर्तितसन्ध्योचिताचाराम् परिसमापिताहारां शिलातले विस्रब्धम् उपविष्टाम् तां कन्यकां सप्रश्रयम् उपसृत्य, नातिदूरे समुपविश्य, अवादीत्–''भगवति! भवद्दर्शनात् प्रभृति मम महतम् कौतुकम् अस्मिन् विषये। कतरत् मरुताम्, ऋषीणां, गन्धर्वाणाम्, अप्सरसां वा कुलम् अनुगृहीतम् भगवत्या जन्मना? किमर्थं वास्मिन् कुसुमसुकुमारे नवे वयसि व्रतग्रहणम्? किं निमित्तं वा वनम् अमानुषम् एकाकिनी अधिवससि? क्वेदं वयः, क्वेयम् इन्द्रियाणाम् उपशान्तिः? अद्भुतमिव मे प्रतिभाति। तत् यदि नातिखेदकरमिव, ततः कथनेन आत्मानम् अनुगृह्यमाणम् इच्छामि। आवेदयतु भवती सर्वम्'' इति।

शब्दार्थ– निर्वर्तितसन्ध्योचिताचाराम् = सन्ध्याकालीन उचित क्रियाओं से निवृत्त होकर। परिसमापिताहाराम् = भोजन कर चुकने वाली। विस्रब्धम् = निश्चिन्त होकर। उपविष्टाम् = बैठी हुई। सप्रश्रयम् = विनयपूर्वक। उपसृत्य = पास में जाकर। समुपविश्य = बैठकर। अवादीत् = कहा। भवद्दर्शनात् = आप के दर्शन से। कौतुकम् = उत्कण्ठा। कतरत् = किस। मरुताम् = देवता का। अप्सरसाम् = अप्सरा के। कुलम् = वंश को। जन्मना = जन्म से। कुसुमसुकुमारे = फूल जैसे कोमल। नववयसि = नई उम्र में। अमानुषम् = मनुष्य रहित। एकाकिनी = अकेली। अधिवससि = निवास करती हो। क्वेदम् = कहाँ यह। वयः = अवस्था। इन्द्रियाणाम् उपशान्तिः = इन्द्रियों की शान्ति। अद्भुतमिव = आश्चर्यपूर्ण जैसा। प्रतिभाति = प्रतीत होता है। नातिखेदकरमिव = अत्यन्त कष्टदायक-सा नहीं। कथनेन = कहने से। आत्मानम् = अपने को। अनुगृह्यमाणम् = अनुग्रह किया हुआ। आवेदयतु = बताइए।

हिन्दी अनुवाद– इसके पश्चात् सन्ध्यावन्दनादि करके भोजन कर चुकने के बाद निश्चिन्त होकर शिला के ऊपर बैठने वाली उस कन्या के पास विनम्रता के साथ जाकर समीप ही में बैठकर चन्द्रापीड ने कहा–देवि, आपके दर्शन होने के समय से ही मुझे इस विषय में बड़ी उत्कण्ठा है कि आपने किस देवता, ऋषि, गन्धर्व या अप्सरा के कुल को अपने जन्म से अनुगृहीत किया है? इस फूल जैसी कोमल नयी उम्र में ही किसलिए यह व्रत ग्रहण किया है। मनुष्य रहित इस वन में अकेली क्यों रहती हैं? कहाँ आपकी यह अवस्था और कहाँ इस प्रकार इन्द्रियों का दमन? यह बड़ा अद्भुत-सा लग रहा है? अत्यधिक कष्टकर न हो तो मैं चाहता हूँ कि आप अपना वृत्तान्त कहकर मुझे अनुगृहीत करें।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– निर्वर्तितसन्ध्योचिताचाराम् = निर्वर्तिताः सन्ध्योचिताः आचाराः यया ताम्। किमर्थं = किम्+अर्थं।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. **उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?**

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।

प्रश्न 2. **'भगवति! भवद्दर्शनात् प्रभृति मम महतम् कौतुकम् अस्मिन् विषये।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**

उत्तर– देवि, आपके दर्शन होने के समय से ही मुझे इस विषय में बड़ी उत्कण्ठा है।

प्रश्न 3. **चन्द्रापीडः कस्याः समीपम् अगच्छत्?**

उत्तर– चन्द्रापीडः महाश्वेतायाः समीपम् अगच्छत्।

प्रश्न 4. काः शिलातले विस्रब्धम् उपविष्टाम् आसीत्?
उत्तर– महाश्वेता शिलातले विस्रब्धम् उपविष्टाम् आसीत्?
प्रश्न 5. ''भवद्दर्शनात् प्रभृति मम महतम् कौतुकम् अस्मिन् विषये'' कस्योक्तिः?
उत्तर– चन्द्रापीडस्योक्तिः।

35. एवम् अभिहिता सा किमप्यन्तः ध्यायन्ती, दीर्घम् उष्णं च निःश्वस्य, प्रत्यवादीत्–राजपुत्र! किमनेन मम मन्दभाग्यायाः जन्मनः प्रभृति वृत्तन्तेन श्रुतेन? तथापि यदि महत् कुतूहलम् तत् कथयामि श्रूयताम्। एतत् प्रायेण भवतः श्रुतिविषयम् आपतितमेव–यथा दक्षस्य प्रजापतेः अतिप्रभूतानां कन्यकानां मध्ये द्वे सुते मुनिः अरिष्टा च बभूवतुः। तत्र अरिष्टायाः पुत्र हंसो नाम् गन्धर्वराजः सोममयूखसंभवात् अप्सरःकुलात् समुद्भूताम् हिमकरकिरणावदातवर्णाम् गौरी नाम कन्यकां प्रणयिनीम् अकरोत। तयोरहम् ईदृशी विगतलक्षणा दुःखसहस्रभाजनम् एकेव सुता समुत्पन्ना। तातस्तु मे अनपत्यतया सुतजन्मातिरिक्तेन महोत्सवेन मज्जन्म अभिनन्दितवान्। प्राप्ते च दशमेऽहनि 'महाश्वेता' इति यथार्थमेव नाम कृतवान्।

शब्दार्थ– अभिहिता = कही हुई। किमप्यन्तः = कुछ मन ही मन। ध्यायन्ती = सोचती हुई। दीर्घम् उष्णं च = लम्बी और गरम। निःश्वस्य = सांस लेकर। प्रत्यवादीत् = बोली। मन्दाभाग्यायाः = अभागिनी का। जन्मनः प्रभृति = जन्म से अब तक। वृत्तान्तेन श्रुतेन = वृत्तान्त सुनने से। श्रूयताम् = सुनिए। भवतः = आपके। श्रुतिविषयम् = सुनने में। आपतितम् = पड़ा होगा, आया होगा। अतिप्रभूताम् = बहुत अधिक। द्वे सुते = दो पुत्रियाँ। बभूवतुः = हुईं। सोममयूखसम्भवात् = चन्द्रमा की किरणों से उत्पन्न। समुद्भूताम् = उत्पन्न होने वाली। हिमकरकिरणावदातवर्णाम् = चन्द्रकिरणों के समान उज्ज्वल रंगवाली। प्रणयिनीम् अकरोत् = पत्नी बना लिया। तयोरहम् = मैं उन्हीं दोनों से। ईदृशी = इस प्रकार की। विगतलक्षणा = लक्षणों से रहित। दुखसहस्रभाजनम् = हजारों प्रकार के दुःखपूर्ण वाली। समुत्पन्ना = उत्पन्न हुई। अनपत्यतया = सन्तान न होने के कारण। सुतजन्मातिरिक्तेन = पुत्र-जन्म से भी अधिक। महोत्सवेन = महान् उत्सव द्वारा। अभिनन्दितवान् = अभिनन्दन किया। प्राप्ते च दशमेऽहनि = दसवाँ दिन आने पर यथार्थमेव = सत्य ही, विशेषता के अनुरूप ही। नाम कृतवान् = नाम रखा।

हिन्दी अनुवाद– ऐसा पूछे जाने पर उसने मन ही मन कुछ सोचकर लम्बी-लम्बी गरम साँसें लेकर उत्तर दिया– राजकुमार! मुझ अभागिनी की जन्म से लेकर अब तक की कथा सुनने में आपको क्या लाभ होगा? फिर भी यदि आप की इस विषय में बड़ी उत्कण्ठा है तो सुनिए। यह तो आपके कानों में पड़ा होगा कि प्रजापति दक्ष की बहुत-सी कन्याओं में मुनि और अरिष्टा नाम की दो पुत्रियाँ थीं। उनमें से अरिष्टा के पुत्र गन्धर्वों के राजा हंस ने चन्द्रकिरणों से उत्पन्न अप्सरा के कुल में उत्पन्न होने वाली तथा चन्द्रमा की किरणों के समान श्वेत वर्णवाली गौरी नाम की कन्या से विवाह किया। उन्हीं दोनों से इस प्रकार शुभ लक्षणों से हीन और हजारों दुःखों से पूर्ण केवल मैं ही उत्पन्न हुई। सन्तान न होने के कारण मेरे पिता ने पुत्रजन्म से भी अधिक उत्सव द्वारा मेरे जन्म का स्वागत किया और दसवाँ दिन आने पर मेरी विशेषता के अनुसार ही मेरा नाम महाश्वेता रखा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– किमप्यन्तः = किम्+अपि+अन्तः। प्रत्यवादीत् = प्रति+अवादीत्। हिमकरकिरणावदातवर्णाम् = हिमकरकिरणस्य इव अवदातवर्णा या सा ताम्। तयोरहम् = तयोः+अहम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः?
उत्तर– अस्य गद्यांशस्य प्रणेतां 'बाणभट्टः' अस्ति।
प्रश्न 2. 'राजपुत्र! किमनेन मम मन्दभाग्यायाः जन्मनः प्रभृति वृत्तन्तेन श्रुतेन?' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– राजकुमार! मुझ अभागिनी की जन्म से लेकर अब तक की कथा सुनने में आपको क्या लाभ होगा?
प्रश्न 3. दीर्घम् उष्णं च निःश्वस्य का प्रत्यवादीत्?
उत्तर– दीर्घम् उष्णं च निःश्वस्य कन्यका प्रत्यवादीत्।
प्रश्न 4. मुनिः अरिष्ट च का आसीत्?
उत्तर– दक्षस्य प्रजापतेः पुत्री आसीत्।

प्रश्न 5. किं नाम कन्यकां प्रणयिनीम् अकरोत्?
उत्तर– गौरी नाम कन्यकां प्रणयिनीम् अकरोत्।
प्रश्न 6. महाश्वेता मातुः का नाम आसीत्?
उत्तर– महाश्वेता मातुः गौरी नाम आसीत्।

36. साहं पितृभवने बालतया कलमधुरप्रलापिनी वीणेव गन्धर्वाणाम् अङ्कादङ्कं सञ्चरन्ती शैशवम् अतिनीतवती। क्रमेण च कृतं मे वपुषि नवयौवनेन पदम्। अथ सकलजीवलोकहृदयानन्ददायकेषु मधुमासदिवसेषु एकदा अहम् अम्बया समम् इदम् अच्छोदं सरः स्नातुम् अभ्यागमम्। अत्र च रमणीये तीरतरुतले सखी जनेन सह विचरन्ती झटिति वनानिलेन उपनीतम् अभिभूतान्यकुसुमपरिमलम् अनाघ्रातपूर्वम् कुसुमगन्धम् अभ्यजिघ्रम। कुतोऽयम्? इत्युपारूढकुतूहला चाहं कतिचित् पदानि गत्वा काममिवापरम् अतिमनोहराकृतिम्। तापसकुमारेण सवयसा सह स्नानार्थम् आगतं मुनिकुमारकम् अपश्यम्। तेन च कर्णावतसीकृतां कुसुममञ्जरीम् अद्राक्षम्।

शब्दार्थ– साहम् = वह मैं। पितृभवने = पिता के घर में। बालतया = बचपन के कारण। कलमधुरप्रलापिनी = सुन्दर और मधुर भाषिणी। वीणेव = वीणा के समान। गन्धर्वाणाम् = गन्धर्वों के। अङ्कादङ्कम् = एक गोद से दूसरी गोद में। सञ्चरन्ती = जाती हुई। शैशवम् = बचपन। अतिनीतवती = बितायी। वपुषि = शरीर में। पदम् = स्थान। सकलजीवलोकहृदयानन्ददायकेषु = सम्पूर्ण प्राणियों को आनन्द देने वाले। मधुमासदिवसेषु = बसन्त के दिनों में। एकदा = एक बार। अम्बया समम् = माता के साथ। स्नातुम् = स्नान करने के लिए। अभ्यागमम् = आयी। तीरतरुतले = किनारे के वृक्षों के नीचे। झटिति = सहसा। वनानिलेन = जंगल की वायु द्वारा। उपनीतम् = लायी गयी। अभिभूतान्यकुसुमपरिमल् = दूसरे फूलों की गन्ध को ढक लेने वाली। अनाघ्रातपूर्वम् = पहले कभी न सूँघी हुई। कुसुमगन्धम् = फूल की गन्ध को। अभ्यजिघ्रम् = मैंने सूँघा। उपारूढकुतूहला = उत्कंठित होकर। काममिवापरम् = दूसरे कामदेव के समान। अतिमनोहराकृतिम् = अत्यन्त मनोहर आकृति वाले। मुनिकुमारकम् = मुनि कुमार को। अपश्यम् = देखा। कर्णावतंसीकृताम् = कान पर आभूषणों के समान रखी हुई। कुसुममञ्जरीम् = फूल की मञ्जरी को। अद्राक्षम् = देखा।

हिन्दी अनुवाद– वह मैंने पिता के घर में बचपन के कारण सुन्दर और मधुर ढंग से बातचीत करती हुई तथा वीणा के समान एक गन्धर्व की गोद से दूसरे गन्धर्व की गोद में घूमती हुई अपने बचपन को बिताया। धीरे-धीरे मेरे शरीर में यौवन ने अपना स्थान बना लिया। इसके बाद एक बार सभी प्राणियों को आनन्दित करने वाले बसन्त के दिनों में मैं अपनी माता के साथ इसी अच्छोद तालाब में स्नान करने के लिए आयी। यहाँ किनारों के सुन्दर वृक्षों के नीचे सखियों के साथ घूम रही थी कि सहसा मुझे जंगल की वायु द्वारा लायी गयी एक ऐसी गन्ध सूंघने को मिली जो सभी फूलों की गन्ध को मात कर रही थी और वैसी गन्ध मैंने कभी नहीं सूँघी थी। यह कहाँ से आ रही है? इस उत्कंठा में पड़ी हुई मैं कुछ ही कदम चली थी कि मैंने दूसरे कामदेव के समान, अत्यन्त सुन्दर आकृति वाले तथा अपनी उम्र के एक तपस्वी कुमार के साथ स्नान के लिए आये हुए एक मुनिकुमार को देखा और उसके कान पर आभूषण की तरह रखी हुई फूल की मञ्जरी को भी देखा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अङ्कादङ्कम् = अङ्कात्+अङ्कम्। सकलजीवलोकहृदयानन्ददायकेषु = सकलजीवलोकस्य हृदयानन्ददायकः तेषु। अभिभूतान्यकुसुमपरिमल् = अभिभूतानि अन्यकुसुमानाम् परिमालानि येन तत्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।
प्रश्न 2. 'तापसकुमारेण सवयसा सह स्नानार्थम् आगतं मुनिकुमारकम् अपश्यम्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– तपस्वी कुमार के साथ स्नान के लिए आये हुए एक मुनिकुमार को देखा।
प्रश्न 3. महाश्वेता केन समं स्नातुम् अभ्यागमम्?
उत्तर– महाश्वेता अम्बया समं स्नातुम् अभ्यागमम्।
प्रश्न 4. महाश्वेता कुतः स्नातुम् अभ्यागमम्?
उत्तर– अच्छोदं सरः स्नातुम् अभ्यागमम्।

प्रश्न 5. महाश्वेता कम् अपश्यत्?
उत्तर– महाश्वेता मुनिकुमारकम् अपश्यत्।

37. 'अस्याः नन्वयं परिमलः' इति मनसा निश्चित्य, विस्मृतनिमेषेण चक्षुषा तं तपोधनयुवानम् अतिचिरं विलोकयन्ती रूपैकपक्षपातिना नवयौवनसुलभेन कुसुमायुधेन परवशीकृता अभवम्। 'अशेषजनपूजनीया चेयं जातिः' इति कृत्वा तस्मै प्रणामम् अकरवम्। कृतप्रणामायां मयि मद्विकारदर्शनापहृतधैर्यं तमपि कुमारं तरलताम् अनयत् अनङ्गः। अथ च उपसृत्य तं द्वितीयम् अस्य सहचरम् मुनिबालकं प्रणामपूर्वकम् अपृच्छम्–भगवन्! किभिधानः? कस्य वा अयं तोधनयुवा? किं नाम्नः तरोः इयम् अनेन अवतसीकृता कुसुममञ्जरी? इति। स तु माम् ईषत् विहस्य अब्रवीत्–बाले! किम् अनेन पृष्टेन प्रयोजनम्? अथ कौतुकं चेत् आवेदयामि, श्रूयताम्।

शब्दार्थ– अस्याः = इसी का। परिमलः = गन्ध। विस्मृतनिमेषेण = पलक गिराना भूली हुई। तपोधनयुवानम् = तपस्वी युवक को। अतिचिरम् = बहुत देर तक। विलोकयन्ती = देखती हुई। रूपैकपक्षपातिना = केवल सौन्दर्य के पक्षपाती। नवयौवनसुलभेन = जवानी में सहज ही मिलने वाले। कुसुमायुधेन = काम के द्वारा। परवशीकृता अभवम् = विवश कर दी गयी। अशेषजनपूजनीया = सभी के लिए पूज्य है। इयं जातिः = यह जाति अर्थात् मुनियों की जाति। अकरवम् = किया कृतप्रणामायाम् = प्रणाम करने वाली। मद्विकारदर्शनापहृतधैर्यं = मेरे विकार को देखकर धैर्य खो देने वाले तरलताम् = चंचलता को। अनयत् पहुँचा दिया। अनङ्गः = कामदेव। सहचरम् = साथी। अपृच्छम् = पूछा। किमभिधानः = क्या नाम है। ईषत् = कुछ। विहस्य = हँसकर। चेत् = यदि। आवेदयामि = बता रहा हूँ।

हिन्दी अनुवाद– यह गन्ध निश्चय ही इसी की है। ऐसा मन में निश्चय करके मैं पलक गिराना भूलकर निर्निमेष नेत्रों से बहुत देर तक उस तपस्वी कुमार को देखती रही। केवल सौन्दर्य की ओर आकृष्ट होने वाले नवजवानी में स्वभावतः सुलभ कामदेव ने मुझे परवश बना दिया। मुनियों की जाति सभी के लिए पूज्य है इसलिए मैंने उन्हें प्रणाम किया। मेरे प्रणाम करने पर मेरे काम-जन्य विकार को देखकर धैर्यहीन हो जानेवाले मुनिकुमार को भी काम ने चंचल बना दिया। इसके बाद मैंने उसके साथी दूसरे मुनिकुमार के पास जाकर प्रणाम करके पूछा– भगवन् इनका नाम क्या है? और यह किसके लड़के हैं? इन्होंने किस वृक्ष की पुष्पमंजरी को अपने कान पर आभूषण के समान लगा लिया है। उसने कुछ-कुछ हँसते हुए मुझसे कहा– हे बाले! इसे पूछने से तुम्हारा क्या मतलब है? यदि तुम्हें उत्कंठा है तो बताता हूँ सुनो–

व्याकरणात्मक टिप्पणी– कुसुमायुधेन = कुसुम+आयुधेन। मद्विकारदर्शनापहृत धैर्यम् = मत् विकारस्य दर्शनेन अपहृत धैर्य यस्य तम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः?
उत्तर– अस्य गद्यांशस्य प्रणेता 'बाणभट्टः' अस्ति।
प्रश्न 2. 'अशेषजनपूजनीया चेयं जातिः' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– मुनियों की जाति सभी के लिए पूजनीय है।
प्रश्न 3. महाश्वेता कं विलोकयन्ती?
उत्तर– तपोधनयुवानं विलोकयन्ती।
प्रश्न 4. महाश्वेता केन परवशीकृता अभवम्?
उत्तर– कुसुमायुधेन परवशीकृता अभवम्।
प्रश्न 5. मुनिकुमारः किम् अब्रवीत्?
उत्तर– मुनि कुमारः अब्रवीत्–किम् अनेन पृष्टेन प्रयोजनम्।

38. अस्ति सकलभुवनप्रख्यातकीर्तिः महामुनिः दिव्यलोकनिवासी श्वेतकेतुः नाम। तस्य च भगवतः सकललोकहृदयानन्दकरम् अतिशयितनलकूबरं रूपम् आसीत्। तस्यायम् आत्मजः पुण्डरीको नाम। सोऽयम् अद्य 'चतुर्दशी' इति भगवन्तम् अम्बिकापतिं कैलासगतम् उपासितुम् नन्दनवनसमीपेन गच्छन् वनदेवतया

समर्पिताम् इमाम् पारिजातकुसुममञ्जरीम् कर्णपूरीकृतवान् इति। इत्युक्तवति तस्मिन् सः तपोधनयुवा, 'अयि! कुतूहलिनि! किनेन प्रश्नायासेन? यदि रुचितसुरभिपरिमला गृह्यताम् इयम्।

शब्दार्थ– सकलभुवनप्रख्यातकीर्तिः = सारे संसार में प्रसिद्ध कीर्तिवाले। दिव्यलोकनिवासी = दिव्यलोक में रहने वाले। सकललोकहृदयानन्दकरम् = सारे संसार को आनन्दित करने वाला। अतिशयितनलकूबरम् = नलकूबर से भी अधिक। रूपम् = सौन्दर्य। आत्मजः = पुत्रः। अम्बिकापतिम् उपासितुम् = शिव की पूजा करने के लिये। गच्छन् = जाते हुए। वनदेवतया = वनदेवता द्वारा। समर्पिताम् = दी गयी। कर्णपूरीकृतवान् = कान में लगा लिया। प्रश्नायासेन = प्रश्न के परिश्रम से। रुचितसुरभिपरिमला = यदि इसकी सुगन्ध अच्छी लगती हो।

हिन्दी अनुवाद– सारे संसार में प्रसिद्ध कीर्ति वाले दिव्यलोक के निवासी श्वेतकेतु नाम के एक मुनि हैं। भगवान् श्वेतकेतु का सौन्दर्य नलकूबर की सुन्दरता से भी श्रेष्ठ और सम्पूर्ण संसार को आनन्दित करने वाला था। यह उन्हीं के पुत्र पुण्डरीक हैं। आज यह चतुर्दशी के दिन भगवान शंकर की पूजा के लिए कैलास गये थे। जाते समय नन्दन वन के समीप वनदेवता ने इन्हें पारिजात पुष्प की मंजरी दी जिसे इन्होंने अपने कान में लगा लिया। उसके ऐसा कहने पर उस मुनिकुमार ने कहा– अरी उत्कंठिते! इस प्रकार के प्रश्न का कष्ट क्यों झेल रही हो? यदि इसकी गंध तुम्हें प्रिय है तो इसे ले लो।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– सकलभुवनप्रख्यातकीर्तिः = सकलभुवनेषु पुख्यातः कीर्तिः यस्य सः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. **उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?**

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।

प्रश्न 2. **'तस्य च भगवतः सकललोकहृदयानन्दकरम् अतिशयितनलकूबरं रूपम् आसीत्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**

उत्तर– और उस भगवान (श्वेतकेतु) का सौन्दर्य नलकूबर की सुन्दरता से भी श्रेष्ठ और सम्पूर्ण संसार को आनंदित करने वाला था।

प्रश्न 3. **श्वेतकेतुः कः आसीत्?**

उत्तर– सकलभुवनप्रख्यातकीर्तिः महामुनिः आसीत्।

प्रश्न 4. **श्वेतकेतुः आत्मजः किं नाम आसीत्।**

उत्तर– श्वेतकेतुः आत्मजः पुण्डरीको नाम आसीत्।

प्रश्न 5. **श्वेतकेतुः रूपम् कीदृशी आसीत्?**

उत्तर– भगवतः श्वेतकेतुः सकललोकहृदयानन्दकरम् अतिशयितनलकुबेरं रूपम् आसीत्।

प्रश्न 6. **पारिजातपुष्पमञ्जरीम् केन समर्पिता?**

उत्तर– पारिजातपुष्पमञ्जरीम् वनदेवतया समर्पिता।

39. इत्युक्त्वा समुपसृत्य श्रवणात् आत्मीयात् अपनीय, मदीये श्रवणपुटे नाम् अकरोत्। तदानीं मत्कपोलस्पर्शसुखेन तरलीकृताङ्गुलिः करतलात् गलिताम् अक्षमालां नाज्ञासीत्। अथाह ताम् असम्प्राप्तामेव भूतलम् गृहीत्वा सलीलं कण्ठाभरणताम् अनयम्। इत्यभूते च व्यतिकरे छत्रग्राहिणी माम् अवोचत्–''भर्तृदारिके! स्नाता देवी। प्रत्यासीदति गृहगमनकालः। तत् क्रियतां मज्जनविधिः'' इति। ततः अहं तन्मुखात् अतिकृच्छ्रेण दृष्टिम् आकृष्य, स्नातुम् उदयलम्।

शब्दार्थ– श्रवणात् = कान से। आत्मीयात् = अपने। अपनीय = उतारकर। मदीये = मेरे। मत्कपोलस्पर्शसुखेन = मेरे कपोल के स्पर्श सुख से। तरलीकृतांगुलिः = जिसकी उँगली काँप गयी हो। करतलात् = हाथ से। गलिताम् = गिरी हुई। अक्षमालाम् = रुद्राक्ष की माला को। नाज्ञासीत् = न जान सका। असम्प्राप्तामेव भूतलम् = पृथ्वी पर पहुँचने के पहले ही। गृहीत्वा = पड़कर। सलीलम् = खुशी के साथ। कण्ठाभरणताम् अनयत् = गले का आभूषण बना लिया। इत्थं भूते = इस प्रकार के। व्यतिकरे = घटना होने पर। छत्रग्राहिणी = छाता लेकर चलने वाली सेविका ने। अवोचत् = बोली। भर्तृदारिके = स्वामिपुत्री। स्नाता = स्नानकर

चुकी। प्रत्यासीदति = देर हो रही है। गृहगमनकालः = घर जाने का समय। मज्जनविधिः = स्नानक्रिया। तन्मुखात् = उसकी ओर से। अतिकृच्छ्रेण = बड़ी कठिनाई से। दृष्टिम् = निगाहों को। आकृष्ण = हटाकर। उदचलम् = चल पड़ी।

हिन्दी अनुवाद– ऐसा कहकर और मेरे पास आकर इन्होंने उस मंजरी को अपने कान से उतारकर मेरे कान पर रख दिया। उस समय मेरे कपोल के स्पर्शसुख से उनकी अँगुलियों के काँप जाने के कारण उनकी अक्षमाला हाथ से नीचे गिर पड़ी किन्तु उन्हें इसका पता भी न चल सका। मैंने भूमि पर पहुँचने के पहले ही उसे लेकर आनन्द के साथ गले में डाल लिया। इस प्रकार की घटना होने पर मेरा छाता लेकर चलने वाली सेविका ने कहा– स्वामिपुत्री, देवी स्नान कर चुकीं। घर जाने का समय हो रहा है। इसलिए आप भी स्नान कर लें। मैं बड़ी कठिनाई से उसकी ओर से निगाहों को हटाकर स्नान के लिए चल पड़ी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– मत्कपोलस्पर्शसुखेन = मत्कपोलस्य स्पर्शस्य सुखेन। असम्प्राप्तामेव = असम्प्राप्तम्+एव। तन्मुखत् = तत्+मुखात्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. **अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः?**

उत्तर– अस्य गद्यांशस्य प्रणेता 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. **''भर्तृदारिके! स्नाता देवी। प्रत्यासीदति गृहगमनकालः। तत् क्रियतां मज्जनविधिः।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**

उत्तर– स्वामिपुत्री, देवी स्नान कर चुकी है। घर जाने का समय हो रहा है। इसलिए आप भी स्नान कर लें।

प्रश्न 3. **श्वेतकेतुः पारिजातपुष्पमञ्जरीम् कस्य कर्णपुटे अकरोत्?**

उत्तर– महाश्वेतायाः कर्णपुटे अकरोत्।

प्रश्न 4. **कस्य कपोलस्पर्शसुखेन तरलीकृताङ्गुलिः?**

उत्तर– महाश्वेतायाः कपोलस्पर्शसुखेन तरलीकृताङ्गुलिः।

प्रश्न 5. **करतलात् गलिताम् अक्षमालां कः नाज्ञासीत्?**

उत्तर– श्वेतकेतुः करतलात् गलिताम् अक्षमालां नाज्ञासीत्।

40. उच्चलितायां च मयि सः द्वितीयः मुनिदारकः तथाविधं तस्य धैर्यस्खलितम् आलोक्य, किंचित् प्रकटितप्रणयकोपः प्रोवाच– ''सखे पुण्डरीक! नैतदनुरूपं भवतः। क्षुद्रजनक्षुण्ण एष मार्गः। धैर्यधना हि साधवः। कथं करतलात् गलिताम् अक्षमालामपि न लक्षयसि? अहो विगतचेतनः त्वम्'' इति। इत्येवम् अभिधीयमानश्च तेन, किंचित् उपजातलज्ज इव प्रत्यवादीत्–''सखे कपिञ्जल! किं माम् अन्यथा संभावयसि? नाहम् अस्याः दुर्विनीतायाः मर्षयामि अक्षमालाग्रहणापराधन् इमम्'' इति उक्त्वा, अलीककोपकान्तेन मुखेन्दुना माम् अवदत्–''चपले! अक्षमालाम् इमाम् अदत्त्वा, पदात् पदमपि न गन्तव्यम्'' इति। तच्च श्रुत्वा अहम् आत्मकण्ठात् उन्मुच्य एकावलीम् ''भगवन्! गृहयताम् अक्षमाला'' इति मन्मुखासक्तदृष्टेः तस्य प्रसारिते पाणौ निधाय स्नातुं सरः अवातरम्।

शब्दार्थ– उच्चलितायाम् = चलने पर। द्वितीयः = दूसरा। मुनिदारकः = मुनिकुमार। तथाविधम् = उस प्रकार। धैर्यस्खलितं = धैर्य का नष्ट होना। प्रकटितप्रणयकोपः = प्रेम का क्रोध प्रकट करने वाले। आलोक्य = देखकर। किञ्चित् = कुछ। प्रोवाच = बोला। नैतदनुरूपम् = यह योग्य नहीं। भवतः = आपके। क्षुद्रजनक्षुण्ण = छोटे लोगों द्वारा अपनाया गया। एषः = यह। धैर्यधना = धैर्यशाली। लक्ष्यसि = देखते हो। विगतचेतनः = चेतनाहीन। इत्येवम् = इस प्रकार। अभिधीयमानश्च = कहे जाने पर। उपजातलज्जा = लज्जा आने से। प्रत्यवादीत् = उत्तर दिया। अन्यथा = अन्य प्रकार से। संभावयसि = समझते हो। नाहम् = मैं नहीं। अस्याः = इस। दुर्विनीतायाः = धृष्टा का। अक्षमालाग्रहणापराधम् = अक्षमाला ले लेने के अपराध को। मर्षयामि = क्षमा करूँगा। अलीककोपकान्तेन = झूठे क्रोध से सुन्दर। मुखेन्दुना = मुखचन्द्र से। अवदत् = कहा। अदत्वा = बिना दिये। पदात् पदमपि = एक कदम भी। न गन्तव्यम् = नहीं जाता है। आत्मकंठात् = अपने कंठ से। उन्मुच्य = निकालकर। एकावलीम्

= एक लड़ी की माला। गृह्यताम् = लीजिए। मन्मुखात्तदृष्टेः = मेरे मुख पर दृष्टि गड़ानेवाले। प्रसारिते पाणौ = फैलाये हुए हाथ पर। विधाय = रखकर। स्नातुम् = स्नान के लिए। सरः = तालाब में। अवातरम् = उतर गयी।

हिन्दी अनुवाद– मेरे चल पड़ने पर उस द्वितीय मुनिकुमार ने इस प्रकार उसके धैर्य का नाश देखकर कुछ प्रेमपूर्ण क्रोध को दिखाते हुए कहा– मित्र पुंडरीक, तुम्हें ऐसा करना उचित नहीं है। यह तो छोटे लोगों के चलने का रास्ता है। सज्जन लोगों का धन तो धैर्य ही होता है। तुम अपने हाथ से गिरती हुई अक्षमाला को भी न देख सके। तुम इतने चेतनाहीन हो गये हो? इस प्रकार कहने पर कुछ लज्जित-सा होकर उसने कहा–मित्र कपिंजल, तुम मुझसे दूसरी बात की कल्पना क्यों कर रहे हो (मुझे गलत क्यों समझ रहे हो)? मैं इस धृष्टा के अक्षमाला ले लेने के अपराध को क्षमा नहीं करूँगा, इस प्रकार कहकर झूठे क्रोध से सुन्दर मुखमण्डल द्वारा उसने मुझसे कहा–चंचले, इस अक्षमाला को बिना दिये हुए तुम एक कदम भी आगे नहीं जा सकती हो। यह सुनकर मैंने अपने गले से एकावली निकालकर मेरे मुँह पर दृष्टि गड़ाने वाले उसके फैलाये हुए हाथ में रख दी और स्नान करने के लिए तालाब में उतर पड़ी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– प्रकटितप्रणयकोप = प्रकटितः प्रणयकोपः येन सः। नैतदनुरूपम् = न+एतत्+अनुरूपम्। क्षुद्रजनक्षुण्णः = क्षुद्रजनैः क्षुण्णः। धैर्यधना = धैर्य एव धनं येषां ते। इत्येवम् = (इति+एवम्)। उपजातलज्जा = उपजाता लज्जा यस्मिन् सः। नाहम् = (न+अहम्)। अक्षमालाग्रहणापराधम् = अक्षमालायाः ग्रहणस्य अपराधम्। अलीककोपकान्तेन = अलीकः यः कोपः तेन कान्तः तेन। मन्मुखासक्तदृष्टेः = मम मुखे आसक्ता दृष्टिः यस्य तस्य।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. **उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?**
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।
प्रश्न 2. **'धैर्यधना हि साधवः।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**
उत्तर– सज्जन लोगों का धन तो धैर्य ही होता है।
प्रश्न 3. **पुण्डरीकस्य सख्युः किं नाम आसीत्?**
उत्तर– पुण्डरीकस्य सख्युः कपिञ्जल नाम आसीत्।
प्रश्न 4. **धैर्यधना कः?**
उत्तर– धैर्यधना हि साधवः।
प्रश्न 5. **कः विगतचेतनः बभूव?**
उत्तर– पुण्डरीक विगतचेतनः बभूव।
प्रश्न 6. **स्नातुं सरः अवातरम् का?**
उत्तर– महाश्वेता स्नानुं सरः अवातरम्।

41. उत्थाय च कथमपि सखीजनेन नीयमाना, तमेव चिन्तयन्ती स्वभवनम् अम्बया समम् अयासिषम्। गत्वा च प्रविश्य कन्यान्तःपुरम्, ततः प्रभृति तद्विरहविधुरा, सर्वव्यापारान् उत्सृज्य, विसृज्य सखीजनम् एकाकिनी गवाक्षनिक्षिप्तमुखी, तामेव दिशम् ईक्षमाणा तामेवाक्षमालां कण्ठेनोद्वहन्ती दिवसम् अत्यवाहयम्।

शब्दार्थ– उत्थाय = पानी से बाहर आकर, कथमपि = किसी प्रकार। सखीजनेन = सखियों द्वारा। नीयमाना = ले आई जाकर। चिन्तयन्ति = चिन्तन करती हुई। अम्बया समम् = माँ के साथ। अयासिषम् = आई। प्रविश्य = प्रवेश करके। कन्यान्तःपुरम् = कन्या के महल में। ततः प्रभृतिः = उसी समय से। तद्विरहविधुरा = उसके विरह में दुःखी। सर्वव्यापारान् = सभी कामों को। उत्सृज्य = छोड़कर। विसृज्य = विदा करके। सखीजनम् = सखियों को। गवाक्षनिक्षिप्तमुखी = खिड़की पर मुँह लगाये हुए। तामेव दिशम् = उसी दिशा की ओर। ईक्षमाणा = देखती हुई। तामेवाक्षमलाम् = उसी अक्षमाला को। कण्ठेनोद्वहन्ती = गले में धारण किये हुए। दिवसम् = दिन को। अत्यवाहयम् = बिताया।

हिन्दी अनुवाद– वहाँ से उठकर सखियों द्वारा किसी प्रकार ले आई जाती हुई मैं उसी का चिन्तन करती हुई माँ के साथ अपने घर चली गयी। कन्या-भवन में प्रवेश करके उसी समय से उनके वियोग में दुःखी होकर सभी कामों को छोड़कर और

सखियों को विदा करके अकेले खिड़की में मुँह लगाकर उसी ओर देखती हुई तथा उसी अक्षमाला को गले में पहिने हुए मैंने सारा दिन बिता दिया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– कन्यान्तःपुरम् = कन्यायाः अन्तःपुरम्। तद्विरहविधुरा = तस्य विरहेण विधुरा। गवाक्षनिक्षिप्तमुखी = गवाक्षनिक्षिप्तं मुखं यया सा।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः?
उत्तर– अस्य गद्यांशस्य प्रणेता 'बाणभट्टः' अस्ति।
प्रश्न 2. 'तमेव चिन्तयन्ती स्वभवनम् अम्बया समम् अयासिषम्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– उसी का ही चिन्तन करती हुई माँ के साथ अपने घर चली गयी।
प्रश्न 3. का सखीजनेन नीयमानाः?
उत्तर– महाश्वेता सखीजनेन नीयमानाः।
प्रश्न 4. स्वभवनं कया समम् अयासिषम्?
उत्तर– स्वभवनं अम्बया समम् अयासिषम्।
प्रश्न 5. कस्यां कण्ठेनोद्वहन्ती दिवसम् अत्यवाहयम्?
उत्तर– अक्षमालां कण्ठेनोद्वहन्ती दिवसम् अत्यवाहयम्।

42. अथ लोहितायति सूर्ये, छत्रग्राहिणी समागत्य माम् अकथयत्–''भर्तृदारिके, तयोः मुनिकुमारयोः अन्तरः द्वारि तिष्ठति। कथयति च–अक्षमालाम् उपयाचितुम् आगतोऽस्मि'' इति। अहं तु समाहूय कञ्चुकिनं गच्छ प्रवेश्यताम् इत्यादिश्य प्राहिणवम्। अथ मुहूर्तादेव तं तस्य अनुरूपं सखायं मुनिकुमारं कपिञ्जलनामानम् आगच्छन्तम् अपश्यम्। उत्थाय च कृतप्रणामा सादरं स्वयम् आसनम् उपाहरम्। उपविष्टस्य तस्य प्रक्षाल्य चरणौ, उपमृज्य च उत्तरीयांशुकाञ्चलेन अव्यधानायां भूमावेव तस्यान्तिके समुपाविशम्।

शब्दार्थ– लोहितायति सूर्ये = सूर्य के लाल होने पर (सन्ध्याकाल में)। समागत्य = आकर। तयोः मुनिकुमारयोः = उन दोनों मुनि कुमारों में से। अन्यतरः = दूसरा। द्वारि तिष्ठति = दरवाजे पर खड़ा है। उपयाचितुम् = माँगने के लिए। आगतोऽस्मि = आया हूँ। समाहूय = बुलाकर। गच्छ = आओ। प्रवेश्यताम् = प्रवेश कराओ। भीतर ले जाओ। इत्यादिश्य = ऐसा आदेश देकर। प्राहिणवम् = भेजा। तस्य अनुरूपम् = उसके समान रूपवाले। सखायम् = मित्र को। आगच्छन्तम् = आते हुए। अपश्यम् = देखा। कृत प्रणामा = प्रणाम करती हुई। उपाहरम् = दिया। उपविष्टस्य = बैठे हुए। प्रक्षाल्य = धोकर। उपमृज्य = पोछकर। उत्तरीयांशुकेन = दुपट्टे के आँचल से। अव्यवधानायाम् = बिना कुछ बिछाये। भूमौ = पृथ्वी पर। तस्यान्तिके = उसके पास। समुपाविशम् = बैठ गयी।

हिन्दी अनुवाद– सायंकाल मेरी छत्रग्राहिणी ने आकर मुझसे कहा–स्वामिपुत्री, उन दोनों मुनिकुमारों में से दूसरा दरवाजे पर खड़ा है और कहता है कि अक्षमाला माँगने आया हूँ। मैंने कंचुकी को बुलाकर उसे जाकर भीतर ले आने का आदेश देकर भेजा। थोड़ी ही देर में उसके ही समान रूप वाले उसके मित्र मुनिकुमार को, जिसका नाम कपिञ्जल था, आते हुए देखा। मैंने उठकर उन्हें प्रणाम करते हुए स्वयम् आदर के साथ आसन दिया, उस बैठे हुए मुनिकुमार के चरणों को धोकर और अपने दुपट्टे के आँचल से पोंछकर उसके पास ही बिना कुछ बिछाये ही भूमि पर मैं भी बैठ गयी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– इत्यादिश्य = इति+आदिश्य। कृतप्रणामा = कृतः प्रणामः यया सा। तस्यान्तिके = तस्य + अन्तिके। समुपाविराम् = सम + उपाविशम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।

प्रश्न 2. **''भर्तृदारिके, तयोः मुनिकुमारयोः अन्तरः द्वारि तिष्ठति।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**
उत्तर– स्वामिपुत्री! उन दोनों मुनिकुमारों में से दूसरा दरवाजे पर खड़ा है।
प्रश्न 3. **छत्रग्राहिणी समागत्य का अकथयत्?**
उत्तर– छत्रग्राहिणी अकथयत्– 'भर्तृदारिके, तयोः मुनिकुमारयोः अन्यतरः द्वारि तिष्ठति।
प्रश्न 4. **मुनिकुमारः किम् अकथयति?**
उत्तर– मुनिकुमारः अकथयति– अक्षमालाम् उपयाचितुम् आगतोऽस्मि।
प्रश्न 5. **मुनिकुमारस्य किं नाम आसीत्?**
उत्तर– मुनिकुमारस्य कपिञ्जल नाम आसीत्।

43. अथ मुहूर्त्तमिव स्थित्वा स तस्यां मत्समीपोपविष्टायां तरलिकायां चक्षुः अपातयत्। अहं तु विदिताभिप्रया ''भगवन् अव्यतिरिक्तेयम् अस्मच्छरीरात् अशङ्कितम् अभिधीयताम्'' इत्यवोचम्। एवम् उक्तश्च मया कपिञ्जलः प्रत्यवादीत् ''राजपुत्रि! किं ब्रवीमि? किमारब्धं दैवेन? वागेव मे न प्रसरति त्रपया। सर्वथा रक्षणीयाः सुहृदसवः इति कथयामि। अस्ति खलु भवत्या समक्षमेव स मया तथा निष्ठुरम् अभिहितः'' इति। तथा चाभिधाय परित्यज्य तम् उपजातमन्युः अन्यं प्रदेशम् अगमम्।

शब्दार्थ– स्थित्वा = ठहरकर। मत्समीपोपविष्टायाम् = मेरे पास ही बैठी हुई। चक्षुः अपातयत् = निगाहें डालीं। विदिताभिप्राया = उसके अभिप्राय को जान जाने वाली। अव्यतिरिक्तेयम् = यह अभिन्न। अस्मच्छरीरात् = हमारे शरीर से। अशंकितम् = निडर होकर। अभिधीयताम् = कहिए। ब्रवीमि = कहूँ। किमारब्धम् = क्या किया। वागेव = वाणी ही। प्रसरति = फैल रही है, त्रपया = लज्जा से। सुहृदसवः = मित्र के प्राप्ण। भवत्याः आपके। समक्षम् = सामने। निष्ठुरम् = कठोर। अभिहितः = कहा गया। चाभिधाय = और कहकर, परित्यज्य तम् = उसे छोड़कर। उपजातमन्युः = क्रुद्ध होकर। अन्यप्रदेशम् = दूसरी जगह। अगमम् = चला गया।

हिन्दी अनुवाद– थोड़ी देर ठहरकर उसने मेरे पास बैठी हुई तरलिका की ओर देखा। मैं उसके अभिप्राय को समझकर बोली– भगवान्! यह मेरे शरीर से अभिन्न है, अतः आप निडर होकर कहें। मेरे ऐसा कहने पर कपिंजल ने कहा–राजपुत्रि क्या कहूँ? दैव ने यह क्या कर दिया? लाज के कारण वाणी ही नहीं निकल रही है। केवल यही कहता हूँ कि मित्र के प्राणों की रक्षा होनी चाहिए। आपके सामने ही मैंने उसे कठोर बातें कही थीं और उन बातों को सुनकर क्रोध आ जाने से वह दूसरी जगह चला गया था।

व्याकरणात्मक टिप्पणी–विदिताभिप्राया = विदितः अभिप्रायः यया सा। अव्यतिरिक्तेयम् = अव्यतिरिक्ता+इयम्। वागेव = वाक्+एव। चाभिधाय = च+अभिधाय।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. **अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः?**
उत्तर– अस्य गद्यांशस्य प्रणेता 'बाणभट्टः' अस्ति।
प्रश्न 2. **''भगवन् अव्यतिरिक्तेयम् अस्मच्छरीरात् अशङ्कितम् अभिधीयताम्'' इत्यवोचम्। रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**
उत्तर– भगवन्! यह मेरे शरीर से अभिन्न है, अतः आप निडर होकर कहें।
प्रश्न 3. **तरलिकायां चक्षुः अपातयत् कः?**
उत्तर– मुनिकुमारः तरलिकायां चक्षुः अपातयत्।
प्रश्न 4. **महाश्वेता मुनिकुमारेण किम् अवोचत्?**
उत्तर– ''भगवन् अव्यतिरिक्तेयम् अस्मच्छरीरात् अभिधीयताम्'' इत्यवोचत्।
प्रश्न 5. **'सर्वथा रक्षणीयाः सुहृदसवः', कस्य उक्तिः?**
उत्तर– मुनिकुमार कपिञ्जलस्य उक्तिः।

44. अपगतायां भवत्यां मुहूर्तमिव स्थित्वा, एकाकी किमयम् इदानीम् आचरतीति सञ्जातवितर्कः प्रतिनिवृत्त्य विटपान्तरितविग्रहः तं प्रदेशं व्यलोकयम्। यावत् तत्र तं नाद्राक्षम्, तेन तस्यादर्शनेन दूयमानः, मनस्यचिन्तयम्– स कदाचित् धैर्यस्खलनविलक्षः किंचित् अनिष्टमपि समाचरेत्। तत् न युक्तम् एनम् एकाकिनं कर्तुम्' इत्यवधार्य, अन्वेषमाणः निपुणम् इतस्ततो दत्तदृष्टिः तरुलतागहनानि वीक्षमाणः सुचिरं व्यचरम्। अथ एकस्मिन् सरस्समीपवर्तिनि लतागहने व्युपरतसकलव्यापारतया लिखितमिवावस्थितम्, मन्मथावेशस्य परां कोटिम् अधिरूढं करतलनिहितवामकपोलम् शिलातलोपविष्टम् तमहमद्राक्षम्।

शब्दार्थ–अपगतायाम् भवत्याम् = आपके चले जाने पर। स्थित्वा = ठहरकर। एकाकी = अकेला। किमयम् = यह क्या। इदानीम् = इस समय। आचरतीति = कर रहा है। सञ्जातवितर्कः = वितर्क उत्पन्न होने पर। प्रतिनिवृत्त्य = लौटकर। विटपान्तरितविग्रहः = वृक्षों की ओट में शरीर को छिपाने वाला। व्यलोकयम् = देखा। नाद्राक्षम् = नहीं देखा। तस्यादर्शनेन = उसके न दिखने से। दूयमानः = दुःखी होते हुए। मनस्यचिन्तयम् = मन में विचार किया। धर्मस्खलनविलक्षः = धैर्य नष्ट हो जाने से दुःखी। अनिष्टमपि = अप्रिय। समाचरेत् = कर ले। न युक्तम् = ठीक नहीं। एकाकिनम् कर्तुम् = अकेला करना। इत्यवधार्य = ऐसा निश्चित करके। अन्वेषमाणः = खोजता हुआ। निपुणम् = सावधानी से। इतस्ततः = इधर-उधर। दत्तदृष्टिः = दृष्टि डालते हुए। तरुलतागहनानि = घने वृक्षों और घनी लताओं में। वीक्षमाणः = देखते हुए। सुचिरम् = देर तक। व्यचरम् = घूमता रहा। सरस्समीपवर्तिनी = तालाब के समीप। लतागहने = घनी लताओं में। व्युपरतसकलव्यापारतया = सभी क्रियाओं से रहित होने से। लिखितमिव = चित्र में लिखा हुआ-सा जड़ीभूत। अवस्थितम् = बैठा हुआ। मन्मथावेशस्य = कामदेव के आवेश की। परां कोटिम् = चरम सीमा पर। अधिरूढम् = पहुँचा हुआ। करतलनिहितवामकपोलम् = हथेली पर बायें गाल को रखे हुए। शिलातलोपविष्टम् = चट्टान पर बैठे हुए। अद्राक्षम् = देखा।

हिन्दी अनुवाद– आपके चली जाने पर थोड़ी देर ठहरकर 'इस समय अकेले वह क्या कर रहा है' इस प्रकार का तर्क करके लौटकर अपने को पेड़ की ओट में छिपाकर मैं उस स्थान को देखने लगा। उस समय मैंने उसे वहाँ नहीं देखा और उसके वहाँ न देखने से दुःखी होकर कोई अनिष्ट न कर बैठे। इसलिए उसे अकेले छोड़ना उचित नहीं है। ऐसा निश्चय करके इधर-उधर सावधानी से ढूँढ़ते हुए घने पेड़ों और लताओं में देखते हुए बड़ी देर तक मैं घूमता रहा। इसके पश्चात् मैंने तालाब के किनारे एक घनी लता में सारी क्रियाओं से रहित होने के कारण चित्र में लिखे– जैसे तथा कामवासना की अन्तिम सीमा पर पहुँचे हुए उसे बायें गाल को हथेली पर रखकर चट्टान पर बैठे हुए देखा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– सञ्जातवितर्कः = संजातः वितर्कः यस्मिन् सः। विटपान्तरितविग्रहः = विटपेषु अन्तरितः विग्रहः यस्य सः। नाद्राक्षम् = न+अद्राक्षम्। तस्यादर्शनेन = तस्य+अदर्शनेन। मनस्यचिन्तयम् = मनसि+अचिन्तयम्। धैर्यस्खलनविलक्षः = धैर्यस्खलनेन विलक्षः। इत्यवधार्य = इति+अवधार्य। दत्तदृष्टिः=दत्ता दृष्टिः येन सः। व्युपरतसकलव्यापारतया = व्युपरतः सकलव्यापारः तस्य भावः तया। करतलनिहितवामकपोलम् = करतले निहितः वामकपोलः येन सः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।
प्रश्न 2. 'एकाकी किमयम् इदानीम् आचरतीति।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– इस समय अकेले क्या कर रहा है?
प्रश्न 3. कः विटपान्तरितविग्रहः तं प्रदेशं व्यलोकयत्?
उत्तर– कपिञ्जलः विटपान्तरितविग्रहः तं प्रदेशं व्यलोकयत्।
प्रश्न 4. तरुलतागहनानि वीक्षमाणः सुचिरं कः व्यचरत्?
उत्तर– कपिञ्जल तरुलतागहनानि वीक्षमाणः सुचिरं व्यचरत्।
प्रश्न 5. करतलनिहितवामकपोलम् शिलातलोपविष्टम् कम् अद्राक्षीत्?
उत्तर– करतलनिहितवामकपोलम् शिलातलोपविष्टम् पुण्डरीकम् अद्राक्षीत्?
प्रश्न 6. शिलातलोपविष्टम् कः?
उत्तर– शिलातलोपविष्टम् पुण्डरीकः।

45. उपसृत्य च तस्मिन्नेव शिलातलैकपार्श्वे समुपविश्य, अंसदेशावसक्तपाणिः ''सखे पुण्डरीक, कथय किमिदं गुरुभिरुपदिष्टम्, उत धर्मशास्त्रेषु पठितम्, उत मोक्षप्राप्तियुक्तिरियम्, कथमेतद्युक्तं भवतो मनसापि चिन्तयितुम्। धैर्यम् अवलम्ब्य निर्भर्त्स्यताम् अयं दुराकारः कामः'' इति अब्रवम्।

शब्दार्थ– उपसृत्य = पास जाकर। तस्मिन्नेव = उसी। शिलातलैकपार्श्वे = चट्टान के एक किनारे। समुपविश्य = बैठकर। अंसदेशावसक्तपाणिः = कंधे पर हाथ रखकर। कथय = बताओ। गुरुभिः = गुरुजनों द्वारा। उपदिष्टम् = उदेश दिया गया है। उत = अथवा। धर्मशास्त्रेषु = धर्मशास्त्रों में। पठितम् = पढ़ा गया है। मोक्षप्राप्तियुक्तिरियम् = यह मोक्ष पाने का उपाय है। कथमेतद्युक्तं = क्या यह उचित है। चिन्तयितुम् = सोचना। अवलम्ब्य = सहारा लेकर। निर्भर्त्स्यताम् = दुत्कार दो। दुराकारः = दुष्ट। अब्रवम् = कहा।

हिन्दी अनुवाद– उसके पास जाकर उसी चट्टान पर एक किनारे बैठकर तथा उसके कंधे पर हाथ रखकर मैंने कहा कि ''मित्र पुण्डरीक! क्या गुरुओं ने ऐसा ही उपदेश दिया है? अथवा धर्मशास्त्रों में इसे पढ़ा है? या मोक्षप्राप्ति का यही उपाय है? तुम्हारे लिए मन से भी ऐसा सोचना क्या उचित है? इसलिए धैर्य धारण करो और इस दुष्ट कामदेव को दुत्कार दो''।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अंसदेशावसक्तपाणिः = अंसदेशे अवसक्तः पाणिः यस्य सः। मोक्षप्राप्तियुक्तिरियम् = मोक्षप्राप्तेः युक्तिः इयम्। कथमेतद्युक्तं = कथम्+एतत्+युक्तम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. **अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः?**

उत्तर– अस्य गद्यांशस्य प्रणेता 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. **''सखे पुण्डरीक, कथय किमिदं गुरुभिरुपदिष्टम्, उत धर्मशास्त्रेषु पठितम्, उत मोक्षप्राप्तियुक्तिरियम्, कथमेतद्युक्तं भवतो मनसापि चिन्तयितुम्।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**

उत्तर– प्रिय पुण्डरीक! क्या गुरुओं ने ऐसा उपदेश दिया है? अथवा धर्मशास्त्रों में इसे पढ़ा है? या मोक्ष प्राप्ति का यही उपाय है? तुम्हारे लिए मन से भी ऐसा सोचना क्या उचित है?

प्रश्न 3. **'सखे पुण्डरीक! कथय किमिदं गुरुभिरुपदिष्टम्', केन उक्तः?**

उत्तर– कपिञ्जलेन उक्तः।

प्रश्न 4. **''धैर्यम् अवलम्ब्य निर्भर्त्स्यताम् अयं दुराकारः कामः'' इति केन अब्रवीत्?**

उत्तर– कपिञ्जलेन अब्रवीत्।

प्रश्न 5. **शिलातलैकपार्श्वे कः समउपविशः?**

उत्तर– शिलातलैकपार्श्वे कपिञ्जलः समुपविशः।

46. इत्येवं वदत एव मे वचनम् आक्षिप्य, करतलेन पाणौ माम् अवलम्ब्य अवोचत्–''सखे! किं बहुना उक्तेन? सर्वथा स्वस्थोऽसि, यतः आशीविषविषवेगविषमाणां कुसुमचापसायकानां पतितोऽसि न गोचरे। सुखम् उपदिश्यते परस्य। मम तु गत इदानीम् उपदेशकालः। को वापरः त्वत्समः मे जगति बन्धुः? किं करोमि? न शक्नोमि निवारयितुम् आत्मानम्। यावत् प्राणिमि, तावदस्य मदनसंतापस्य प्रतिक्रियां कर्तुम् इच्छामि। अत्र यत् प्राप्तकालं तत् करोतु भवान्'' इति।

शब्दार्थ– इत्येवम् = इस प्रकार। वदतः = कहते हुए। मे वचनम् = मेरी बात को। आक्षिप्य = टोककर, काटकर। करतलेन = हाथ में। पाणौ माम् अवलम्ब्य = मेरा हाथ पकड़कर। अवोचत् = कहा। बहुना उक्तेन = अधिक कहने से। स्वस्थोऽसि = स्वस्थ हो। यतः = क्योंकि। आशीविषविषवेगविषमाणां = साँप के जहर की लहर के समान भीषण। कुसुमचापसायकानाम् = कामदेव के बाणों के। गोचरे = निशाने पर। न पतितोऽसि = नहीं पड़े हो। सुखम् = सरलता से। उपदिश्यते = उपदेश दिया जाता है। परस्य = दूसरे को। गतः = बीत गया। उपदेशकालः = उपदेश का समय। अपरः = दूसरा। त्वत्समः = तुम्हारे समान। मे = मेरा। जगति = संसार में। बन्धुः = भाई। शक्नोमि = सकता हूँ। निवारयितुम् = रोकने में। आत्मानम् = अपने को। प्राणिमि = जी रहा हूँ। मदन संतापस्य = कामपीड़ा का। प्रतिक्रियाम् = उपाय। यत् = जो । प्राप्तकालम् = उचित अवसर के अनुकूल।

हिन्दी अनुवाद– ऐसा कहते हुए मेरी बात को बीच में ही काटकर अपने हाथ से मेरा हाथ पकड़कर उसने कहा–"मित्र! अधिक कहने से क्या लाभ? तुम सब प्रकार से स्वस्थ हो, क्योंकि साँप के विष की लहरों के समान भयंकर कामदेव के बाणों के सामने नहीं पड़े हो। दूसरे को उपदेश देना आसान होता है। मुझे अब उपदेश देने का समय बीत चुका है। संसार में तुम्हारे समान कोई अपना नहीं है। क्या करूँ? मैं अपने को (इस मार्ग से) रोकने में असमर्थ हूँ। जब तक जीवित हूँ इस काम-पीड़ा को दूर करने का उपाय करना चाहता हूँ। इसलिए अब इस विषय में समयानुसार जो उचित हो करो।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– आशीविषविषवेगविषमाणाम् = आशीविषस्य विषवेगः तस्य इव विषमः तेषाम्। कुसुमचापसायकानाम् = कुसुमचापस्य सायकानाम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. **उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?**

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।

प्रश्न 2. **"सखे! किं बहुना उक्तेन? सर्वथा स्वस्थोऽसि" रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**

उत्तर– मित्र! अधिक कहने से क्या लाभ है? तुम सब प्रकार से स्वस्थ हो।

प्रश्न 3. **कः वचनम् आक्षिप्य अवोचत्?**

उत्तर– पुण्डरीकः वचनम् आक्षिप्य अवोचत्।

प्रश्न 4. **कस्य पाणौ अवलम्ब्य अवोचत्?**

उत्तर– कपिञ्जलस्य पाणौ अवलम्ब्य अवोचत्।

प्रश्न 5. **'सुखम् उपदिश्यते परस्य', केन उक्तः?**

उत्तर– पुण्डरीकेन उक्तः।

47. एवम् उक्तोऽहम् अचिन्तयम्–'अतिभूमिं गतोऽयं न शक्यते निवर्तयितुम्। अकालान्तरक्षमश्चायमस्य मदनविकारः। प्राणास्तावदस्य रक्षणीयाः। अतिगर्हितेन अकृत्येनापि रक्षणीयान् सुहृदसून् मन्यन्ते साधवः। तत् अतिह्रेपणम् अवश्यकर्तव्यम् आपतितम्। किं करोमि? कान्यागतिः प्रयामि तस्याः सकाशम्। आवेदयामि एताम् अवस्थाम्' इति चिन्तयित्वा, कदाचित् अनुचितव्यापारप्रवृत्तं मां विज्ञाय, सञ्जातलज्जः निवारयेत् इति अनिवेद्यैव तस्मै, सव्याजम् उत्थाय तस्मात् प्रदेशात् उपागतोऽहम्। तदेवम् अवस्थिते, यदत्र अवसरप्राप्तम् तत्र प्रभवति भवती" इत्यभिधाय, किमियं वक्ष्यतीति गन्मुखासक्तदृष्टिः, तूष्णीमभवत्।

शब्दार्थ– एवम् = इस प्रकार। उक्तोऽहम् = कहा गया मैं। अचिन्तयम् = विचार किया। अतिभूमिम् = बहुत दूर। गतोऽयम् = यह चला गया है। निवर्तयितुम् न शक्यते = लौटाया नहीं जा सकता है। अकालान्तरक्षमश्चायमस्य मदनविकारः = इसका यह काम विकार जीवन भर नहीं जा सकता। प्राणास्तावदस्य = इसके प्राण। रक्षणीया = बचाना चाहिए। अतिगर्हितेन = अत्यन्त निन्दनीय। अकृत्येन = बुरे कर्म से। रक्षणीयान् = रक्षायोग्य। सृहृदसून् = मित्रों के प्राणों को। मन्यन्ते = मानते हैं। साधवः = सज्जन लोग। अतिह्रेपणम् = लज्जाजनक। आपतितम् = अचानक आ पड़ने वाले। कान्यागतिः = दूसरी गति क्या है? प्रयामि = जाता हूँ। तस्याः सकाशम् = उसके पास। आवेदयामि = आवेदन करता हूँ। एताम् अवस्थाम् = इस अवस्था को। चिन्तयित्वा = विचार करके। कदाचित् = कहीं, संभवतः। अनुचितव्यापारप्रवृत्तम् = अनुचित कार्य में लगा हुआ। विज्ञाय = जानकर। सञ्जातलज्जः = लज्जित होकर। निवारयेत् = रोके। अनिवेद्येव = बिना कहे ही। सव्याजम् = बहाने के साथ उठकर, प्रदेशात् = स्थान से। उपगतोऽहम् = मैं आया हूँ। एवम् अवस्थिते = ऐसी स्थिति में। यदत्र अवसरप्राप्तम् = इस समय जो उचित हो। तत्र प्रभवति = वह आप कर सकती हैं। मन्मुखासक्तदृष्टिः = मेरे मुख की ओर टकटकी लगाये। तूष्णीमभवत् = चुप हो गया।

हिन्दी अनुवाद– उसके इस प्रकार कहने पर मैं सोचने लगा– यह बहुत दूर जा चुका है, अतः अब इसे लौटाया नहीं जा सकता। इसका यह कामविकार जीवनभर नहीं जा सकता। इसलिए इसके प्राणों की रक्षा करनी चाहिए। साधु लोग अत्यन्त निन्दनीय बुरे कर्मों द्वारा भी मित्र के प्राणों की रक्षा करना उचित मानते हैं। अतः बहुत लज्जाजनक होने पर भी अचानक उपस्थित

इस काम को करना ही चाहिए। क्या करूँ? दूसरी गति ही क्या है? उसके पास जाता हूँ और उसे इस दशा को बतलाता हूँ ऐसा सोचकर संभवतः मुझे अनुचित कार्य में संलग्न जान लज्जा के कारण वह रोके न, अतः उसे बिना बतलाये ही बहाने से उठकर उस स्थान से आया हूँ। इस स्थिति में जो उचित हो उसे आप कर सकती हैं। ऐसा कहकर यह जानने के लिए कि मैं क्या कहती हूँ, मेरे मुख की ओर देखते हुए वह चुप हो गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अकालान्तरक्षमश्चायमस्य मदनविकारः = अकालान्तरक्षमः+च+अयम्+अस्य मदनविकारः। प्राणास्तावदस्य = प्राणाः+तावत्+अस्य।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. **अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः?**

उत्तर– अस्य गद्यांशस्य प्रणेता 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. **'अतिभूमिं गतोऽयं न शक्यते निवर्तयितुम्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**

उत्तर– यह बहुत दूर तक चला गया है, अतः अब इसे लौटाया नहीं जा सकता।

प्रश्न 3. **कः अचिन्तयत्?**

उत्तर– कपिञ्जलः अचिन्तयत्।

प्रश्न 4. **अकालान्तरक्षमः मदननविकारः कस्य?**

उत्तर– पुण्डरीकस्य अकालान्तरक्षमः मदनविकारः।

प्रश्न 5. **प्राणास्तावत् रक्षणीयाः कस्य?**

उत्तर– पुण्डरीकस्य।

48. अहं तु तत् आकर्ण्य 'दिष्ट्या अयम् अनङ्गः मामिव तमपि अनुबध्नाति' इति सर्वानन्दानाम् उपरि वर्तमाना 'इत्थंभूते किं मया प्रतिपत्तव्यम्' इति विचारयन्ती आसम्। अत्रान्तरे प्रतीहारी ससंभ्रमं प्रविश्य अकथयत् ''भर्तृदारिके! त्वम् अस्वस्थशरीरेति परिजनात् उपलभ्य महादेवी प्राप्ता'' इति। तत् श्रुत्वा जनसंमर्दभीरुः कपिञ्जलः सत्वरम् उत्थाय, ''राजपुत्रि! भगवानयम् अस्तम् उपगच्छति दिवाकरः। तद् गच्छामि–सर्वथा सुहृत्प्राणरक्षादक्षिणार्थम् अयम् उपरचितोऽञ्जलिः'' इत्यभिधाय, प्रतिवचनकालम् अप्रतीक्ष्यैव प्रपयौ।

शब्दार्थ– आकर्ण्य = सुनकर। दिष्ट्या = भाग्य से। अनङ्गः = कामदेव। मामिव = मेरे ही समान। अनुबध्नाति = पीड़ा दे रहा है। सर्वानन्दानाम् = सभी आनन्दों के। उपरि वर्तमाना = ऊपर स्थित। इत्थंभूते = ऐसा होने पर। प्रतिपत्तव्यम् = क्या करना चाहिए। विचारयन्ती आसम् = विचार कर रही थी। अत्रान्तरे = इसी बीच। ससंभ्रमम् = झटके के साथ। अकथयत् = कहा। अस्वस्थशरीरा = बीमार। परिजनात् = सेवकों से। उपलभ्य = समाचार पाकर। जनसंमर्दभीरुः = लोगों की भीड़ से भयभीत। सत्वरम् = शीघ्र ही। अस्तमुपगच्छति = अस्त हो रहे हैं। दिवाकरः = सूर्य। सुहृत्प्राणरक्षादक्षिणार्थम् = मित्र की प्राणरक्षा की दक्षिणा के लिए। उपरचितोञ्जलिः = हाथ जोड़ता हूँ। प्रतिवचनकालम् = प्रत्युत्तर। अप्रतीक्ष्य = प्रतीक्षा किये बिना ही। प्रययौ = चला गया।

हिन्दी अनुवाद– मैं यह बात सुनकर और सौभाग्य से यह कामदेव मेरे ही समान उसे भी पीड़ित कर रहा है, ऐसा जानकर सभी प्रकार के सुखों की चरम सीमा पर पहुँच गयी। इस प्रकार की स्थिति में मुझे क्या करना चाहिए, यह सोच ही रही थी कि इसी बीच बड़ी शीघ्रता से प्रतिहारी ने प्रवेश करके कहा–''स्वामिपुत्रि! सेविकाओं से आपकी अस्वस्थता का समाचार जानकर महादेवी आयी हैं।'' यह सुनकर लोगों की भीड़ से भयभीत कपिञ्जल शीघ्र ही उठकर बोला– ''राजपुत्रि, सूर्यास्त हो रहा है, इसलिए मैं जा रहा हूँ। और मित्र की प्राणरक्षा की दक्षिणा के लिए हाथ जोड़ता हूँ।'' ऐसा कहकर मेरे उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही वह चला गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– जनसंमर्दभीरुः = जनानाम् सम्मर्दात् भीरुः। सुहृत्प्राणरक्षादक्षिणार्थम् = सुहृदः प्राणरक्षायाः दक्षिणा तस्यार्थम्। उपरचितोऽञ्जलिः = उपरचितः+अञ्जलिः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।

प्रश्न 2. ''भर्तृदारिके! त्वम् अस्वस्थशरीरेति परिजनात् उपलभ्य महादेवी प्राप्ता'' इति। रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– स्वामिपुत्रि! सेविकाओं से आपकी अस्वस्थता का समाचार जानकर महादेवी आयी हैं।

प्रश्न 3. सर्वानन्दानाम् उपरि वर्तमाना का?

उत्तर– महाश्वेता सर्वानन्दानाम् उपरि वर्तमाना।

प्रश्न 4. प्रतिहारी का अकथयत्?

उत्तर– भर्तृदारिके! त्वम् अस्वस्थशरीरेति परिजनात् उपलभ्य महादेवी प्राप्ता।

प्रश्न 5. कः अस्तम् उपगच्छति?

उत्तर– भगवान् दिवाकरः अस्तम् उपगच्छति।

49. अम्बा तु मत्समीपम् आगत्य सुचिरं स्थित्वा स्वभवनम् अयासीत्। गतायां च तस्याम् अस्तम् उपगते भगवति सवितरि, किंकर्तव्यतामूढा तरलिकाम् अपृच्छम्–''अयि तरलिके! कथं न पश्यसि दृढमाकुलम् मे हृदयम्। उपदिशतु मे भवती यदत्र साम्प्रतम्। अयमेवं त्वत्समक्षमेवाभिधाय गतः कपिञ्जलः। यदि तावत् विहाय विनयम्, विसृज्य लज्जाम्, अचिन्तयित्वा जनापवादम्, अतिक्रम्य सदाचारम्, अननुज्ञाता पित्रा, अननुमोदिता मात्रा, स्वयम् उपगम्य, पाणि ग्राहयामि तदा गुरुजानातिक्रमात् अधर्मो महान्। अथ धर्मानुरोधे इतरपक्षम् अङ्गीकरोमि, प्रथमं तावत् स्वयम् आगतस्य कपिञ्जलस्य प्रणयभङ्गः। अपरम्– यदि कदाचित् तस्य जनस्य मत्कृतात् आशाभङ्गात् प्राणविपत्तिः उजायते, तदपि मुनिजनवधजनितं महत् पातकं भवेत्'' इत्येवम् उच्चारयन्त्यामेव मयि अभिनवोदितेन रजनिकरबिम्बेन रमणीयतामनीयत यामिनी।

शब्दार्थ– मत्समीपम् = मेरे पास। आगत्य = आकर। सुचिरम् स्थित्वा = देर तक ठहरकर। अयासीत् = चली गयी। सवितरि = सूर्य। गतायाम् च तस्याम् = उनके जाने पर। किंकर्तव्यविमूढा = क्या करूँ, क्या न करूँ। इसका निर्णय न कर सकने वाली। अपृच्छम् = पूछा। कथम् = क्या। पश्यसि = देखती हो। दृढ़माकुलम् = अत्यन्त व्याकुल। उपदिशतु = बताओ। साम्प्रतम् = उचित। त्वत्समक्षमेव = तुम्हारे सामने ही। अभिधाय = कहकर। गतः = चला गया है। विहाय = छोड़कर। विसृज्य = त्यागकर। अचिन्तयित्वा = चिन्ता न करके। अतिक्रम्य = लाँघकर। अननुज्ञाता = बिना अनुमति लिये। पित्रा = पिता द्वारा। अननुमोदिता = बिना स्वीकृति पाये। उपगम्य = उसके पास जाकर। पाणिम् ग्राहयामि = हाथ पकड़ा लूँ। गुरुजनातिक्रमात् = गुरुजनों का अतिक्रम करने से। धर्मानुरोधेन = धर्म के अनुरोध से। इतरपक्षम् = दूसरे पक्ष को। अङ्गीकरोमि = स्वीकार करूँ। आगतस्य = आये हुए। प्रणयभंगः=प्रेम का भंग। अपरम् = दूसरे। तस्यजनस्य = उस व्यक्ति का (पुण्डरीक का)। मत्कृतात् = मेरे कारण। आशाभङ्गात् = आशा टूटने से। प्राणविपत्तिः उपजायते = मृत्यु हो जाय। मुनिजनवधजनितम् = मुनि के वध से उत्पन्न। महत् पातकम् = बहुत बड़ा पाप। भवेत् = होवे। उच्चारयन्त्यामेव = कहते ही। अभिनवोदितेन = नये नये निकले हुए। रजनिकरबिम्बेन = चन्द्रमण्डल के कारण। रमणीयतामनीयत = सुन्दरता को पहुँचायी गयी। यामिनी = रात्रि।

हिन्दी अनुवाद– मेरी माता मेरे पास आकर बहुत देर तक रुकने के बाद अपने महल में चली गयीं। उनके चले जाने पर सूर्यास्त के समय कुछ निश्चय करने में असमर्थ मैंने तरलिका से पूछा–तरलिके क्या मेरे इस अत्यन्त व्याकुल हृदय को नहीं देखती हो? इस समय मेरे लिए जो उचित हो बताओ। यह कपिंजल तुम्हारे सामने ही वैसा कहकर गया है। यदि विनय को छोड़कर, लज्जा का परित्याग कर, लोकापवाद की चिन्ता न करके, सदाचार की सीमा लाँघकर, पिता की आज्ञा और माता की स्वीकृति लिये बिना ही स्वयं उसके पास जाकर अपना हाथ उसे पकड़ा दूँ (विवाह कर लूँ) तो गुरुजनों का उल्लंघन करने से महान् अधर्म होगा और यदि धर्म के अनुरोध से दूसरे पक्ष को (वहाँ न जाने को) स्वीकार करूँ तो पहले तो स्वयं आने वाले कपिञ्जल का प्रेम टूट जायेगा, दूसरे यदि मेरे कारण आशा टूट जाने से उसकी मृत्यु हो गयी तो मुनिवध का महान् पाप होगा, मेरे इस प्रकार कहते समय नये-नये निकले हुए चन्द्रमण्डल के द्वारा रात अत्यन्त रमणीय हो उठी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– गुरुजनातिक्रमात् = गुरुजनानां अतिक्रमणम् तस्मात्। मुनिजनवधजनितम् = मुनिजनस्य वधात् जनितम्। मत्समीपम् = मम समीपम्। त्वत्समक्षमेव = त्वत्+समक्षम्+एव। उच्चारयन्त्यामेव = उच्चारमन्त्याम्+एव।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः?

उत्तर– अस्य गद्यांशस्य प्रणेता 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. ''अयि तरलिके! कथं न पश्यसि दृढमाकुलम् मे हृदयम्।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– तरलिके! क्या मेरे इस अत्यन्त व्याकुल हृदय को नहीं देखती हो।

प्रश्न 3. का मत्समीपम् आगत्य सुचिरं स्थित्वा स्वभवनम् अयासीत्?

उत्तर– अम्बा मत्समीपम् आगत्य सुचिरं स्थित्वा स्वभवनम् अयासीत्।

प्रश्न 4. किंकर्तव्यविमूढा का आसीत्?

उत्तर– किंर्तव्यविमूढा महाश्वेता आसीत्।

प्रश्न 5. महाश्वेता काम् अपृच्छत्?

उत्तर– महाश्वेता तरलिकाम् अपृच्छत्।

50. तदानीम्–दुर्विषहमदनवेदनातुरां, तथाविधं रजनिकरबिम्बं विलोकयन्तीम् मूर्च्छा मां निमीलितलोचनाम् अकार्षीत्। अथ संभ्रान्ता तरलिका, सरभसम् उपनीताभिः चन्दनचर्चाभिः तालवृन्तानिलैश्च लब्धसंज्ञां माम् आबद्धाञ्जलिः एवम् अवादीत्– ''भर्तृदारिके! किं लज्जया, गुरुजनापेक्षया वा? प्रसीद प्रेषय माम्। आनयामि ते हृदयदयितम्। उत्तिष्ठ। स्वयं वा तत्र गम्यताम्'' इति। एवंवादिनीम् ताम् ''उत्तिष्ठ, संभावयामि स्वयम् अभिगमनेन हृदयदयितं जनम्'' इति अभिदधाना कथंचित् तामेव अवलम्ब्य, उदतिष्ठम्। उच्चलितायाश्च मे दुर्निमित्तनिवेदकम् अस्पन्दत दक्षिणं चक्षुः। तेन उपजातशङ्का च अचिन्तयम्। 'इदमपरं किमप्युत्क्षिप्तं दैवेन' इति।

शब्दार्थ– तदानीम् = उस समय। दुविषहमदनवेदनातुराम् = असह्य कामपीड़ा से व्यग्र। तथाविधम् = वैसे। रजनिकरबिम्बम् = चन्द्रमण्डल को। विलोकयन्तीम् = देखने वाली। निमीलितलोचना = बन्द आँखों वाली। अकार्षीत् = कर दिया। सभ्रान्ता = घबड़ायी हुई। सरभसम् = शीघ्रता से, उपनीताभिः = लायी गयी। चन्दन चर्चाभिः = चन्दन के लेप द्वारा। तालवृन्तानिलैः = ताड़ के पंखे की वायु से। लब्धसंज्ञाम् = होश में आने वाली को। आबद्धांजलिः = हाथ जोड़ते हुए। एवम् = इस प्रकार। अवादीत् = बोली। किं लज्जया = लज्जा से क्या? गुरुजनापेक्षया = गुरुजनों की अनुमति से। प्रसीद = कृपा करो। प्रेषय = भेजो। आनयामि = ले आ रही हूँ। हृदयदयितम् = प्राणप्रिय को। उत्तिष्ठ = उठो। गम्यताम् = चलो। एवंवादिनीम् = इस प्रकार कहने वाली। संभावयामि = सम्मान करूँ। अभिगमनेन = जान से। अभिदधाना = कहती हुई। कथंचित् = किसी प्रकार। अवलम्ब्य = सहारा लेकर। उदतिष्ठतम् = उठी। उच्चलितायाश्च = चलने वाली का। दुर्निमित्तनिवेदकम् = अपशकुन बताने वाला। अस्पन्दत = फड़क उठा। दक्षिणम् चक्षुः = दाहिना नेत्र। उपजातशंका = शंकित होकर। अचिन्तयम् = सोचा। इतः परम् = यह दूसरा। किमप्युत्क्षिप्तम् = कुछ डाल दिया गया। दैवेन = भाग्य द्वारा।

हिन्दी अनुवाद– उस समय असह्य कामपीड़ा से व्याकुल मुझे उस प्रकार के चन्द्रबिम्ब के देखने से मूर्च्छा आ गयी और मेरी आँखें बन्द हो गयीं, इसके बाद घबड़ायी तरलिका ने लाकर चन्दन का लेप किया और ताड़ के पंखे से हवा किया जिससे मैं होश में आ गयी। उसने मुझसे हाथ जोड़कर कहा– स्वामिपुत्री! इस लज्जा और गुरुजनों की उपेक्षा से क्या होगा? कृपा करके मुझे भेजिए, मैं आपके प्राणप्रिय को लाती हूँ, अथवा उठिए, स्वयं वहाँ चलिए। इस प्रकार कहने वाली तरलिका से मैंने कहा– उठो मैं स्वयं वहाँ चलकर प्राणप्रिय को सम्मानित करूँ। ऐसा कहकर उसी का सहारा लेते हुए मैं उठ खड़ी हुई। ज्यों ही मैं चलने लगी त्यों ही अपशकुन की सूचना देने वाली मेरी दाहिनी आँख फड़क उठी। जिससे शंकित होकर मैंने विचार किया कि अब भाग्य और कौन दूसरी घटना उपस्थित करना चाहता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– दुर्विषहमदनवेदनातुराम् = दुर्विषहेन मदनवेदनया आतुरा या ताम्। लब्धसंज्ञाम् = लब्धा संज्ञा तया ताम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।
प्रश्न 2. ''भर्तृदारिके! किं लज्जया, गुरुजनापेक्षया वा? प्रसीद प्रेषय माम्।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– स्वामिपुत्रि! लज्जा से अथवा श्रेष्ठ लोगों की अनुमति से क्या प्रयोजन है? (आप) प्रसन्न होवें, मुझे भेज दें।
प्रश्न 3. दुर्विषहमदनवेदनातुरां का आसीत्?
उत्तर– महाश्वेता दुर्विषहमदनवेदनातुराम् आसीत्।
प्रश्न 4. रजनीबिम्बं विलोकयन्तमीम् का मूर्च्छिता आसीत्?
उत्तर– महाश्वेता मूर्च्छिता आसीत्।
प्रश्न 5. का सम्भ्रान्ता आसीत्?
उत्तर– तरलिका सम्भ्रान्ता आसीत्।

51. अथ च गृहीतविविधकुसुमताम्बूलाङ्गरागया तरलिकया अनुगम्यमाना रक्तांशुकेन कृतशिरोवगुण्ठना केनचित् आत्मीयेनापि परिजनेन अनुपलक्ष्यमाणा, प्रमदवनपक्षद्वारेण निर्गत्य, तत्कालोचितैः आलापैः तम् उद्देशम् अभ्युपागमम्। तत्र च तस्मिन्नेव सरसः पश्चिमे तटे पुरुषस्येव रुदितध्वनिम् विप्रकर्षात् नातिव्यक्तम् उपालक्षयम्। दक्षिणेक्षणस्फुरणेन प्रथममेव मनस्याहित-शङ्काविषण्णेन अन्तरात्मना 'तरलिके! किमिदम्' इति सभयम् अभिदधाना, तदाभिमुखम् अतित्वरितम् अगच्छम्।

शब्दार्थ– गृहीतविविधकुसुमताम्बूलांगरागया =तरह-तरह के फूल, ताम्बूल और अङ्गराग को लेने वाली। अनुगम्यमाना = अनुगमन की गयी। रक्ताशुकेन = लालवस्त्र से। कृतशिरोवगुण्ठना = सर पर घूँघट डाली हुई। आत्मीयेनापि = खास। परिजनेन = सेवक द्वारा। अनुपलक्ष्यमाणा = न देखी हुई, छिपकर। प्रमदवनपक्षद्वारेण = प्रमदवन के छोटे द्वार से। निर्गत्य = निकलकर। तत्कालोचितैः = उस समय के अनुरूप। आलापैः = बातचीत द्वारा। उद्देशम् = स्थान। अभ्युपागमम् = समीप में पहुँची। पुरुषस्येव = पुरुष जैसा। रुदितध्वनिम् = रोने की आवाज। विप्रकर्षात् = दूर होने से। नातिव्यक्तम् = स्पष्ट न होने वाली। उपालक्षयम् = सुनी। दक्षिणेक्षणस्फुरणेन = दाहिनी आँख फड़कने से। प्रथमेव = पहिले ही। मनस्याहितशंकाविषण्णेन = मन में आयी हुई शंका से दुःखी। अन्तरात्मना = हृदय से। सभयम् = भय के साथ। अभिदधाना = कहती हुई। तदभिमुखम् = उसी ओर। अतित्वरितम् = बड़ी शीघ्रता से। अगच्छम् = चली।

हिन्दी अनुवाद– इसके पश्चात् अनेक फल, ताम्बूल तथा अंगराग लेकर पीछे-पीछे आनेवाली तरलिका के साथ लाल रंग के कपड़े का घूँघट डाल कर और अपने निजी सेवकों से भी छिपकर मैं प्रमदवन के छोटे से दरवाजे से निकलकर समयोचित वार्तालाप करती हुई उस स्थान के समीप पहुँची। वहाँ के पश्चिमी किनारे पर दूर होने के कारण स्पष्ट न होने वाली पुरुष जैसे रोने की आवाज सुनाई पड़ी। दाहिनी आँख फड़कने के कारण पहले ही मन में सशंक हो उठने वाली मैं दुःखी हृदय से बोली– तरलिके! ये क्या है? इस प्रकार कहकर मैं उसी ओर जल्दी-जल्दी चलने लगी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– गृहीतविविधकुसुमताम्बूलांगरागया = गृहीतानि विविधानि कुसुमानि ताम्बूलानि अंगरागानि च तया। प्रमदवनपक्षद्वारेण = प्रमदवनस्य पक्षद्वारेण।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपरोक्त गद्यांशः केन विरचित पुस्तकात् उद्धृतः?
उत्तर– उपरोक्त गद्यांशः बाणभट्टेन विरचित 'चन्द्रापीडकथायाः' उद्धृतः?
प्रश्न 2. ''अथ च गृहीतविविधकुसुमताम्बूलाङ्गरागया तरलिकया अनुगम्यमाना रक्तांशुकेन कृतशिरोवगुण्ठना।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– तत्पश्चात् अनेक प्रकार के फल, ताम्बूल और अङ्गराग को ग्रहण करने वाली तरलिका से अनुगत होती हुई लाल कपड़े सिर पर डाली हुई है।

प्रश्न 3. कया अनुगम्यमाना?
उत्तर– तरलिकया अनुगम्यमाना।
प्रश्न 4. केन कृतिशिरोवगुण्ठना?
उत्तर– रक्तांशुकेन कृतशिरोवगुण्ठना।
प्रश्न 5. सरसः पश्चिम तटे कस्य रुदितध्वनिम् अश्रुणोत्?
उत्तर– सरसः पश्चिम तटे पुरुषस्येव रुदितध्वनिम् अश्रुणोत्।

52. अथ निशीथप्रभावात् दूरादेव विभाव्यमानस्वरम् उन्मुक्तार्तनादम् ''हा हतोऽस्मि, हा किमिदम् आपतितम्? हा दुरात्मन् मदन! निर्घृण! किमिदम् अकृत्यम् अनुष्ठितम्। आः पापे दुर्विनीते महाश्वेते! किम् अनेन ते अपकृतम्। आः पाप दुश्चरित! चन्द्र! चाण्डाल! कृतार्थोऽसि इदानीम्। हा भगवन् श्वेतकेतो! न वेत्सि मुषितम् आत्मानम्। हा तपः! निराश्रयमसि। हा सत्य! अनाथमसि। हा सरस्वति! विधवाऽसि। सखे! प्रतिपालय माम्। अहमपि भवन्तम् अनुयास्यामि। न शक्नोमि भवता विना श्रणमप्यवस्थातुम् एकाकी'' इत्येतानि अन्यानि च विलपन्तं कपिञ्जलम् अश्रौषम्।

शब्दार्थ– निशीथप्रभावात् = रात के प्रभाव से। दूरादेव = दूर से ही। विभाव्यमानस्वरम् = जिसका स्वर पहचाना जा रहा हो। उन्मुक्तार्तनादम् = जिसकी दुःखपूर्ण आवाज प्रकट हो रही हो। हतोऽस्मि = मैं मारा गया हूँ। किमिदम् = यह क्या। आपतितम् = अचानक आ पड़ा। निर्घृण = नीच। मदन = कामदेव। अकृत्यम् = बुरा कर्म। अनुष्ठितम् = किया। दुर्विनीते = दुष्ट। अपकृतम् = अपराध किया। अनेन = इसके द्वारा। ते = तुम्हारा। कृतार्थोऽसि = सफल हो जाओ। न वेत्सि = नहीं जानते हो। मुषितम् आत्मानम् = अपना लूट लिया जाना। निराश्रयम् = असहाय। प्रतिपालय = प्रतीक्षा करो। अनुयास्यामि = पीछे चलूँगा। क्षणमप्यवस्थातुम् = एक क्षण भी रहना। इत्येतानि = इस प्रकार यह। अन्यानि = अन्य प्रकार से। विलपन्तम् = विलाप करते हुए। अश्रौषम् = सुना।

हिन्दी अनुवाद– इसके पश्चात् मैंने कपिञ्जल को विलाप करते हुए सुना जिसका स्वर रात्रि के कारण दूर से ही पहिचान में आ रहा था। वह चिल्ला-चिल्ला कर रो रहा था– हाय! मैं मारा गया। हाय! यह अचानक क्या हो गया। अरे दुष्ट, निष्ठुर कामदेव तुमने क्यों इतना बुरा कार्य कर डाला। अरी पापिनी महाश्वेते! इसने तुम्हारा क्या अपराध किया था? अरे पापी कुकर्मी, चांडाल चन्द्रमा अब तुम सफल मनोरथ हो जाओ। हाय भगवान् श्वेतकेतु! तुम्हें अपना लुट जाना नहीं मालूम है। हाय तप! तुम असहाय हो गये। हाय! सत्य! तुम अनाथ हो गये। हाय सरस्वती! आज तुम विधवा हो गयी। मित्र! मेरी प्रतीक्षा करो, मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा। तुम्हारे बिना मैं अकेले एक क्षण भी यहाँ नहीं ठहर सकता। वह इसी प्रकार तथा और दूसरी-दूसरी बातें कहकर रो रहा था।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– विभाव्यमानस्वरम् = विभाव्यमानः स्वर यस्य तम्। उन्मुक्तार्तनादम् = उन्मुक्तः आर्तनादः यस्य सः तम्। इत्येतानि = इतिः एतानि।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।
प्रश्न 2. ''न शक्नोमि भवता विना श्रणमप्यवस्थातुम् एकाकी'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– तुम्हारे बिना अकेला क्षणभर भी जीवित नहीं रह सकता हूँ।
प्रश्न 3. कं विलपन्तम् अश्रौषम्?
उत्तर– कपिञ्जलं विलपन्तम् अश्रौषम्।
प्रश्न 4. उन्मुक्तार्तनादम् कः?
उत्तर– कपिञ्जलः उन्मुक्तार्तनादम्।
प्रश्न 5. 'हा भगवन् श्वेतकेतो! न वेत्सि मुषितम् आत्मानम्।' कस्य उक्तिः?
उत्तर– कपिञ्जलस्य उक्तिः।

53. तच्च श्रुत्वा दूरादेव मुक्तैकताराक्रन्दा, त्वरितैः पादप्रक्षेपैः पदे पदे प्रस्खलन्ती, तं प्रदेशं गत्वा, सरस्तीरसमीपवर्तिनि शशिमणिशिलातले विरचितं मृणालमयं शयनम्, अधिशयानम्, तत्क्षणविगतजीवितं तं महाभागम् अद्राक्षम्। ''एतद्भूतमूर्च्छान्धकारां च तदा किमकरवम्? किं व्यलपम्? इति सर्वमेव नाज्ञासिषम्। अथाहम् अतिचिरात् लब्धचेतना, 'हा हां ! किमिदम् उपनतम्' इति मुक्तार्तनादा 'हा अम्ब! हा तात! हा सख्यः!' इति व्याहरन्ती 'हा नाथ! क्व माम् एकाकिनीम् उत्सृज्य यासि? हा हतास्मि मन्दभागिनी, धिङ् मां दुष्कृतकारिणीम्। याहमेवंविधं भवन्तम् उत्सृज्य गृहं गतवती–भगवत्यः वनदेवताः! प्रसीदत। प्रयच्छतास्य प्राणान्'' इत्येतानि अन्यानि च ग्रहगृहीतेव उन्मत्तेव व्यलपम्। मुहुर्मुहुः तरलिकां कण्ठे गृहीत्वा प्रारुदम्। 'भगवन्! प्रसीद प्रत्युज्जीवयैनम्' इति मुहुर्मुहुः कपिञ्जलस्य पादयोः अपतम्। तथाभूते तस्मिन् अवस्थान्तरे मरणैकनिश्चया तत्तत् बहु विलप्य, तरलिकाम् अब्रवम्–''अयि! उत्तिष्ठ काष्ठान्याहृत्य विरचय चिताम्। अनुसरामि जीवितेश्वरम्'' इति।

शब्दार्थ– तच्च = और यह। मुक्तैकताराक्रन्दा = एक स्वर से चिल्लाकर रोने वाली। त्वरितैः = जल्दी-जल्दी। पादप्रक्षेपैः = कदम डालने से, पदे-पदे = कदम-कदम पर। प्रस्खलन्ती = लड़खड़ाती हुई। तम् प्रदेशम् गत्वा = उस स्थान पर जाकर। सरस्तीरसमीपवर्तिनी = तालाब के किनारे के समीप स्थित। शशिमणि-शिलातले = चन्द्रकांत मणि की चट्टान पर। विरचितम् = लगाये गये। मृणालमयं शयनम् = कमल की डंठल के बिछौने पर। अधिशयानम् = सोये हुए। तत्क्षण-विगतजीवितम् = तत्काल के मरे हुए। एतद्भूतमूर्च्छान्धकारां = इसके कारण मूर्च्छा के अन्धकार में पड़ने वाली। किमकरवम् = क्या किया। किं व्यलपम् = क्या विलाप किया। नाज्ञासिषम् = न जान सकी। अतिचिरात् = बहुत देर के बाद। लब्धचेतना = होश में आने वाली। किमिदम् उपनतम् = यह क्या हो गया? व्याहरन्ती = पुकारती हुई। मुक्तार्तनादा = फूट-फूट कर रोती हुई। क्व = कहाँ। एकाकिनीम् = अकेली को। उत्सृज्य = छोड़कर, यासि = जा रहे हो। हतास्मि = मारी गयी हूँ। धिङ् = धिक्कार है। दृष्कृतकारणीम् = पाप करने वाली। एवंविधं = इस प्रकार। भवन्तम् = आपको। गतवती = चली गयी। प्रसीदत = प्रसन्न होइए। प्रयच्छतास्य = इसको दो। ग्रहगृहीतेव = ग्रह के वश में पड़ी हुई। उन्मत्तेव = पगली जैसी। व्यलपम् = विलाप करने लगी। मुहुर्मुहुः = बार-बार। कण्ठे गृहीत्वा = गला पकड़कर। प्रारुदम् = रोने लगी। प्रत्युज्जीवयैनम् = इन्हें जीवित कर दो। पादयोः = पैरों पर। अपतम् = गिरने लगी। तथाभूते = ऐसा होने पर। अवस्थान्तरे = मृत्यु। मरणैकनिश्चया = एकमात्र मरने का निश्चय करने वाली। तत्तत् = बहुत प्रकार से। विलप्य = विलाप करके। अब्रवन् = बोली। उत्तिष्ठ = उठो। काष्ठान्याहृत्य = लकड़ियाँ इकट्ठी करके। विरचय = बनाओ। अनुसरास्मि = अनुसरण करूँगी। जीवितेश्वरम् = प्राणनाथ।

हिन्दी अनुवाद– दूर से ही कपिञ्जल का रुदन सुनकर फूट-फूट कर रोती हुई तथा शीघ्रता के साथ पैरों के रखने के कारण पग-पग पर लड़खड़ाती हुई उस स्थान पर जाकर तालाब के किनारे के समीप ही चन्द्रकांतमणि की शिला पर कमलदंड से बनायी गयी शैय्या पर लेटे तथा उसी समय मरे हुए उस महाभाग को मैंने देखा। उन्हें इस प्रकार देखते ही मैं मूर्च्छित हो गयी। इसलिए उस समय मैंने क्या कहा और क्या-क्या किया, यह सब न जान सकी। बहुत देर बाद होश आने पर हाय! यह क्या हो गया? इस प्रकार चिल्लाकर हाय माता, हाय पिता, हाय सखियाँ कहकर रोने लगी और कहने लगी कि हाय मुझे अकेली छोड़कर तुम कहाँ जा रहे हो? मैं भाग्यहीन मारी गयी, मुझ पापिनी को धिक्कार है जो आपको इस दशा में छोड़कर घर चली गयी। भगवती, वनदेवता! मेरे ऊपर कृपा करो, इन्हें फिर से जीवन प्रदान करो। इस प्रकार तथा और भी दूसरी तरह ग्रह के वशीभूत तथा पगली के समान विलाप करने लगी। बार-बार तरलिका का गला पकड़कर रोने लगी। भगवान्! इन्हें कृपा करके फिर जीवित कर दो, ऐसा कहकर बार-बार कपिञ्जल के पैरों पर गिरने लगी। इस प्रकार उसकी मृत्यु हो जाने पर एकमात्र मरण का निश्चय कर मैंने नाना प्रकार के विलाप करके तरलिका से कहा–अरी! उठ, लकड़ियाँ इकट्ठी करके चिता बना। मैं अपने प्राणनाथ का अनुगमन करूँगी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– तच्च = तत्+च। मुक्तैकताराक्रन्दा = मुक्ताः एकतार आक्रन्दः यस्य सा। तत्क्षण-विगतजीवितम् = (तस्मिन् क्षणे एव विगतम् जीवनम् यस्य तम्)। लब्धचेतना = लब्धा चेतना यया सा। मुक्तार्तनादा = मुक्तः आर्तनादः यथा सा। प्रयच्छतास्य = प्रयच्छत+अस्य। प्रत्युज्जीवयैनम् = प्रति+उत्+जीवय+एनम्। उन्मत्तेव = उत्मत्ता+इव। मरणैक निश्चया = मरणम् एव एकः निश्चयः यस्या सा। काष्ठान्याहृत्य = काष्ठानि+आहृत्य।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. **अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः?**
उत्तर– अस्य गद्यांशस्य प्रणेता 'बाणभट्टः' अस्ति।
प्रश्न 2. **'भगवन्! प्रसीद प्रत्युज्जीवयैनम्' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**
उत्तर– भगवान्! इन्हें कृपा करके फिर जीवित कर दो।
प्रश्न 1. **विगतजीवितं कं महाभागम् अद्राक्षम्?**
उत्तर– पुण्डरीक महाभागं विगतजीवितम् अद्राक्षम्।
प्रश्न 2. **केन अद्राक्षम्?**
उत्तर– महाश्वेतया अद्राक्षम्।
प्रश्न 3. **का मूर्च्छिता बभूव?**
उत्तर– महाश्वेता मूर्च्छिता बभूव।

54. **अत्रान्तरे चन्द्रमण्डलात् विनिर्गतः दिव्याकृतिः पुरुषः गगनात् अवतीर्य, बाहुभयां तम् उपरतम् उत्क्षिपन् गंभीरेण स्वरेण ''वत्से महाश्वेते! न परित्याज्याः त्वया प्राणाः। पुनरपि तवानेन सह भविष्यति समागमाः।'' इति माम् आदृतः पितेव अभिधाय, सहैव अनेन गगनतलम् उदपतत्।**

शब्दार्थ– अत्रान्तरे = इसी बीच। चन्द्रमण्डलात् = चन्द्रमंडल से। विनिर्गतः = निकला हुआ। दिव्याकृतिः पुरुषः = दिव्य आकृति वाला पुरुष। गगनात् = आकाश से। अवतीर्य = उतरकर। बाहुभ्याम् = भुजाओं से। तम् उपरतम् = उस मरे हुए को। उत्क्षिपन् = उठाते हुए। गंभीरेण स्वरेण = गम्भीर स्वर से। परित्याज्याः = छोड़ना चाहिए। पुनरपि = फिर भी। तवानेन सद् = तुम्हारा इसके साथ। भविष्यति = होगा। समागमः = मिलन। आदृतः पितेव = आदरणीय पिता के समान। अभिधाय = कहकर। सहैव अनेन = उसके साथ ही। गगनतलम् = आकाश में। उदपतत् = उड़ गया।

हिन्दी अनुवाद– इसी बीच चन्द्रमण्डल से निकले हुए एक दिव्य पुरुष ने आकाश से उतरकर अपनी दोनों भुजाओं पर उस मरे हुए पुण्डरीक को उठाते हुए गम्भीर स्वर में आदरणीय पिता के समान मुझसे कहा कि–पुत्री महाश्वेते! तुम प्राणों का परित्याग मत करना। तुम्हारा इसके साथ फिर मिलन होगा। इस प्रकार कहकर वह उसके साथ ही साथ आकाश में उड़ गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अत्रान्तरे = अत्र+अन्तरे। दिव्याकृतिः = दिव्य+आकृतिः। पुनरपि = पुनः + अपि। तवानेन सह = (तव+अनेन+सह)।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. **उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?**
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।
प्रश्न 2. **''वत्से महाश्वेते! न परित्याज्याः त्वया प्राणाः।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**
उत्तर– वत्से महाश्वेते! तुम प्राणों का परित्याग मत करना।
प्रश्न 3. **चन्द्रमण्डलात् कः विनिर्गतः?**
उत्तर– दिव्याकृतिः पुरुषः विनिर्गतः।
प्रश्न 4. **बाहुभ्यां कम् उपरतम् उत्क्षिपत्?**
उत्तर– पुण्डरीकम् उपरतम् उत्क्षिपत्।
प्रश्न 5. **गंभीर स्वरेण केन अकथयत्?**
उत्तर– द्विव्याकृतिः पुरुषेण अकथयत्।

55. अहं तु तेन व्यतिकरकेण सभया सविस्मया सकौतुका च सती किमिदम् इति कपिञ्जलम् अपृच्छम्। असौ तु ससंभ्रमम् अदत्त्वैवोत्तरम्, उत्थाय ''दुरात्मन् क्व मे वयस्यम् अपहृत्य गच्छसि?'' इत्यभिधाय सकोपः सवेगम् उत्तरवल्कलेन परिकरम् आबध्य, तमेव अनुसरन् अन्तरिक्षम् उदपतत्। पश्यन्त्याः एव मे सर्वे एव ते तारागणमध्यम् अविशन्।

शब्दार्थ– तेन व्यतिकरेण = उस घटना से। सभया = भयभीत। सविस्मया = चकित। सकौतुका = उत्कण्ठित। सती = होकर। अपृच्छम् = पूछा। ससंभ्रमम् = एकाएक। अदत्त्वैवोत्तरम् = बिना उत्तर दिये ही। उत्थाय = उठकर। क्व = कहाँ। मे वयस्यम् = मेरे मित्र को। अपहृत्य = छीनकर। गच्छसि = जा रहे हो। इत्यभिधाय = ऐसा कहकर। सकोपः = क्रोध के साथ। सवेगम् = बड़े वेग से। उत्तरवल्कलेन = वल्कल की चादर से। परिकरम् आबध्य = कमर को कसकर। तमेव अनुसरन् = उसी का पीछा करते हुए। अन्तरिक्षम् = आकाश में। उदपतत् = उड़ गया। पश्यन्त्या = देखने वाली। सर्वे एव = वे सभी। तारागण मध्यम् = तारों के बीच। अविशन् = प्रविष्ट हो गये।

हिन्दी अनुवाद– इस घटना से भयभीत, चकित और उत्कण्ठित होकर मैंने कपिञ्जल से पूछा कि यह क्या है? वह बिना उत्तर दिये ही एकाएक उठकर, 'दुष्ट! मेरे मित्र को छीनकर कहाँ लिये जा रहे हो?' इस प्रकार कहते हुए वल्कल (पेड़ की छाल) के दुपट्टे से कमर को बाँधकर उसके पीछे-पीछे आकाश में उड़ गया और हमारे देखते-देखते वे सभी तारों के बीच प्रविष्ट हो गये।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अदत्त्वैवोत्तरम् = अदत्वा+एव+उत्तरम्। इत्यभिधाय = इति+अभिधाय।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. **उपरोक्त गद्यांशः केन विरचित पुस्तकात् उद्धृतः?**
उत्तर– उपरोक्त गद्यांशः बाणभट्टेन विरचित 'चन्द्रापीडकथायाः' उद्धृतः?
प्रश्न 2. **''दुरात्मन् क्व मे वयस्यम् अपहृत्य गच्छसि?'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**
उत्तर– दुष्ट! मेरे मित्र को खींचकर कहाँ लिये जा रहे हो?
प्रश्न 3. **का सभया सविस्मया सकौतुका च?**
उत्तर– महाश्वेता सभया सविस्मया सकौतुका च।
प्रश्न 4. **कपिञ्जलेन के अपृच्छत्?**
उत्तर– महाश्वेता अपृच्छत्।
प्रश्न 5. **'दुरात्मन क्व मे वयस्यम् अपहृत्य गच्छसि।' केन उक्तः?**
उत्तर– कपिञ्जलेन उक्तः।

56. अहं तु कपिञ्जलगमनेन द्विगुणीकृतशोका, किंकर्तव्यतामूढा तरलिकाम् अब्रवम्– ''अयि न जानासि? कथय किमेतत्'' इति। सा तु तत् अवलोक्य स्त्रीस्वभावकातरा विषण्णहृदया अवादीत्–''भर्तृदारिके! न जानामि किन्तु महदिदम् आश्चर्यम्। अमानुषाकृतिः एष पुरुषः। समाश्वासिता च सानुकम्पम् भर्तृदारिका। तमनुसरन् गत एव कपिञ्जलः तत् कोऽयम्? कुतोऽयम्, किमर्थं वानेनायम् अपगतासुः उत्क्षिप्य नीतः? क्व वा नीतः इति सर्वम् उपलभ्य जीवितं वा मरणं वा समाचरिष्यसि। कपिञ्जलस्य प्रत्यागमनकालावधि ध्रियन्ताम् अमी प्राणाः'' इत्युक्त्वा पादयोः मे न्यपतत्।

शब्दार्थ– कपिञ्जलगमनेन = कपिञ्जल के जाने से। द्विगुणीकृतशोका = दूना शोक करती हुई। किंकर्तव्यतामूढा = कार्याकार्य का निर्णय करने में असमर्थ। अब्रवम् = बोली। जानासि = जानती हो। कथय = कहो। किमेतत् = यह क्या है? अवलोक्य = देखकर। स्त्रीस्वभावकातरा = स्त्रीस्वभाव के कारण भयभीत। विषण्णहृदया = दुःखी हृदय वाली। अवादीत् = बोली। महदिदम् = यह महान। अमानुषाकृतिः मनुष्य जैसी आकृति वाला नहीं दैवी। समाश्वासिता = आश्वस्त किया है। सानुकम्पम् = कृपा के साथ। तमनुसरन् = उसका पीछा करते हुए। वानेनायम् = अथवा उसके द्वारा यह। अपगतासुः = मृतक। नीतः = ले जाया गया। उपलभ्य = जानकर। समाचरिष्यसि = करोगी। प्रत्यागमनकालावधि = लौटने के समय तक। ध्रियन्ताम् = धीरज

धारण कीजिए। अभी = इन। न्यपतत् = गिर पड़ी।

हिन्दी अनुवाद– कपिञ्जल के जाने से दूनी दुःखी होकर तथा कार्याकार्य का निर्णय करने में असमर्थ होने के कारण मैंने तरलिका से कहा– अरी! नहीं जानती है, कहो यह क्या है? उसने उस घटना को देख स्त्री-स्वभाव के कारण भयभीत और दुःखी हृदय से कहा–स्वामिपुत्रि! मैं नहीं जानती हूँ, किन्तु यह महान् आश्चर्य है। वह पुरुष दिव्य आकृति का है, और दयापूर्वक उसने आप को आश्वासन भी दिया है। उसका पीछा करते हुए कपिञ्जल गया ही है, अतः वह कौन है, कहाँ से आया है और उस मृतक को किसलिए लेकर उड़ गया है, यह सारी बातें जानकर ही आप जीने अथवा मरने का निश्चय करें। कपिञ्जल के लौटने तक इन प्राणों को धारण किये रहें। ऐसा कहकर वह तरलिका मेरे पैरों पर गिर पड़ी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– द्विगुणीकृतशोका = द्विगुणकृतः शोकः यया सा। स्त्रीस्वभावकातरा = स्त्रीस्वभावेन कातरा। वानेनायम् = वा+अनेन+अयम्। अपगतासुः = अपगता असवः यस्य सः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. **अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः?**

उत्तर– अस्य गद्यांशस्य प्रणेता 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. **''भर्तृदारिके! न जानामि किन्तु महदिदम् आश्चर्यम्। अमानुषाकृतिः एष पुरुषः।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**

उत्तर– स्वामिपुत्रि! मैं नहीं जानती हूँ, किन्तु यह महान आश्चर्य है। वह पुरुष दिव्य आकृति का है।

प्रश्न 3. **केन गमनेन द्विगुणीकृतशोका?**

उत्तर– कपिञ्जलगमनेन द्विगुणीकृतशोका।

प्रश्न 4. **का द्विगुणीकृतशोका आसीत्?**

उत्तर– महाश्वेता द्विगुणीकृतशोका आसीत्।

प्रश्न 5. **किंकर्तव्यतामूढा का आसीत्?**

उत्तर– महाश्वेता किंकर्तव्यतामूढा आसीत्।

57. अहमपि तदेव युक्तं मन्यमाना नोत्सृष्टवती जीवितम्। तस्मिन्नेव सरस्तीरे तरलिकाद्वितीया तां क्षपां क्षपितवती। प्रत्युषसि तु उत्थाय तस्मिन्नेव सरसि स्नात्वा तमेव कमण्डलुम् आदाय, तामेव अक्षमालां गृहीत्वा, गृहीतब्रह्मचर्या बहुविधैः नियमैः शरीरं शोषयन्ती, देवम् शरणार्थिनी स्थाणुम् आश्रिता। अपरेद्युश्च, कुतोऽपि समुपलब्धवृत्तान्तः तातः, सहाम्बया, सह बन्धुवर्गेणागत्य तैस्तैः उपदेशैः गृहगमनाय मे महान्तं यत्नम् अकरोत्। अथ च दृढाध्यवसायां मां विसृज्य सशोक एव गृहान् अयासीत्। ''साहम् एवंविधा, निर्लज्जा, निष्फलजीविता, निस्सुखा च'' इत्युक्त्वा वल्कलोपान्तेन वदनम् आच्छाद्य, मुक्तकण्ठं प्रारोदीत्।

शब्दार्थ– तदेव = यही। युक्तम् = उचित। मन्यमना = मानती हुई। नोत्सृष्टवती = नहीं छोड़ा। जीवितम् = जीवन को। तरलिकाद्वितीया = तरलिका के साथ। क्षपाम् = रात को। क्षपितवती = बिताया। प्रत्युषसि = प्रातःकाल। सरसि = तालाब में। स्नात्वा = स्नान करके। आदाय = लेकर। अक्षमालाम् = रुद्राक्ष की माला को। गृहीतब्रह्मचर्या = ब्रह्मचारिणी का व्रत लेकर। बहुविधैः नियमैः = अनेक नियमों से। शोषयन्ती = सुखाती हुई। शरणार्थिनी = शरण पाने की कामना वाली। देवस्थाणुम् = भगवान् शंकर का। आश्रिता = सहारा लिया। अपरेद्युः = दूसरे दिन। कुतोऽपि = कहीं से। समुपलब्धवृत्तान्तः = समाचार पाये हुए। तातः = पिता। सहाम्बया = माता के साथ। सह बन्धुवर्गेण = परिवार वालों के साथ। आगत्य = आकर। तैस्तैः उपदेशैः = विभिन्न प्रकार के उपदेशों से, गृहगमनाय = घर चलने के लिए। दृढाध्यवसायाम् = दृढ़ निश्चयवाली। विसृज्य = छोड़कर। सशोकः = दुःख के साथ। अयासीत् = चले गये। एवंविधा = इस प्रकार। निर्लज्जा = लज्जा रहित। निष्फल जीविता = व्यर्थ जीवन वाली। निस्सुखा = सुख रहित। बल्कलोपान्तेन = वल्कल के आँचल से। वदनम् = मुँह को। आच्छाद्य = ढँककर। मुक्तकण्ठ = खुले गले से। प्रारोदीत् = रोने लगी।

हिन्दी अनुवाद– मैंने भी यही उचित समझकर जीवन का परित्याग नहीं किया। उसी सरोवर के किनारे तरलिका के साथ

वह रात बितायी और प्रातःकाल उठकर सरोवर में स्नान करके उसी कमण्डल और उसी रुद्राक्ष की माला को लेकर ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया तथा अनेक नियमों से शरीर को सुखाती हुई शरण पाने की कामना से भगवान शिव का सहारा लिया। दूसरे दिन कहीं से समाचार पाकर मेरे पिता ने माताजी तथा परिवार वालों के साथ आकर विभिन्न उपदेशों द्वारा मुझे घर ले चलने का बहुत अधिक प्रयत्न किया। इसके पश्चात् (घर न लौटने के लिए निश्चय वाली) मुझको छोड़कर दुःखी हृदय से घर लौट गये। हे राजकुमार चन्द्रापीड, मैं वही निर्लज्ज, व्यर्थ का जीवन बिताने वाली दुखिया हूँ। इस प्रकार कहकर वल्कल (पेड़ की छाल से बना वस्त्र) के आँचल से मुँह ढँककर फूट-फूटकर रोने लगी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– तदेव = तत्+एव। गृहीतब्रह्मचर्या = गृहीतम् ब्रह्मचर्यम् यया सा। दृढाध्यवसायाम् = दृढः अध्यवसायः यस्याः ताम्। निष्फलजीविता = निष्फलम् जीवितम् यस्याः सा।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।

प्रश्न 2. ''साहम् एवंविधा, निर्लज्जा, निष्फलजीविता, निस्सुखा च'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– मैं वही निर्लज्जा, निष्फल जीवन बिताने वाली दुखिया हूँ।

प्रश्न 3. का नोत्सृष्टवती जीवितम्?

उत्तर– महाश्वेता नोत्सृष्टवती जीवितम्।

प्रश्न 4. कया सह क्षपां क्षपितवती?

उत्तर– तरलिकया सह क्षपां क्षपितवती।

प्रश्न 5. महाश्वेता कस्य देवम् आश्रिता?

उत्तर– महाश्वेता देवस्थाणुम् आश्रिता।

58. चन्द्रापीडश्च तस्याः विनयेन दाक्षिण्येन मधुरालापतया च प्रथममेव उपारूढगौरवः, तदानीम् अपरेण प्रदर्शितसद्भावेन स्ववृत्तान्तकथनेन नितरां प्रीतो बभूव। अभाषत च– ''भगवति! क्लेशभीरुः कृत्स्नो लोकः स्नेहसदृशं कर्म अनुष्ठातुम् अशक्तः निष्फलेन अश्रुपातमात्रेण स्नेहम् उपदर्शयन् रोदिति त्वया तु सर्वं प्रेमोचितम् आचेष्टितम्। किमर्थं रोदिषि? यदेतत् अनुमरणं नाम, तत् अतिनिष्फलम्, अविद्वज्जनाचरित एषः मार्गः। अज्ञानपद्धतिरियम्। मौर्ख्यस्खलितमिदम्।

शब्दार्थ– विनयेन = विनम्रता से। दाक्षिण्येन = सरलता से। मधुरालापतया = मीठी-मीठी बातों से। प्रथमेव = पहले ही। उपारूढगौरवः = गौरवयुक्त। तदानीम् = उस समय। अपरेण = दूसरे। प्रदर्शितसद्भवेन = सद्भाव प्रकट करने से। स्ववृत्तान्तकथनेन = अपने समाचार कहने से, नितराम् = अत्यन्त। प्रीतो बभूव = प्रसन्न हुआ। अभाषत् = कहा। क्लेशभीरुः = कष्टों से भयभीत। कृत्सनो लोकः = सभी लोग। स्नेहसदृशम् = प्रेम जैसा। अनुष्ठातुम् अशक्त; = करने के लिए असमर्थ। निष्फलेन = व्यर्थ। अश्रुपातमात्रेण = केवल आँसू गिराकर। उपदर्शयन् = दिखाते हुए। रोदिति = रोते हैं। प्रेमोचितम् = प्रेम के लिए उचित। आचेष्टिम् = आचरण किया। अनुमरण = किसी के पीछे मरना। अतिनिष्फलम् = अत्यन्त व्यर्थ है। अविद्वज्जनाचरितम् = मूर्खों द्वारा अपनाया गया। अज्ञानपद्धतिरियम् = यह अज्ञान की रीति है। मौर्ख्यस्खलितमिदम् = यह मूर्खतापूर्ण लगती है।

हिन्दी अनुवाद– चन्द्रापीड उसकी विनम्रता, सरलता एवं मधुर बातचीत से पहले ही अपने को गौरवशाली समझने लगा था अथवा उसके प्रति गौरव की भावना से पूर्ण हो चुका था, अब उसके इस आत्मीयता दिखाने तथा अपना वृत्तांत कह सुनाने के कारण अत्यन्त प्रसन्न हो गया, उसने कहा कि देवि! कष्टों से डरने वाले सभी लोग प्रेम जैसा कर्म करने में असमर्थ होने के कारण व्यर्थ ही आँसू गिराकर प्रेम प्रकट करते हुए रोते हैं। तुमने तो केवल प्रेमोचित आचरण किया है। फिर क्यों रो रही हो? और यह जो किसी के पीछे मरने की क्रिया (सती होना) है वह तो अत्यन्त व्यर्थ है। वह मूर्खों द्वारा अपनाया गया मार्ग है, अज्ञान की रीति है तथा मूर्खतापूर्ण भूल है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– उपारूढगौरवः = उपारूढ गौरवः यस्य सः। प्रदर्शितसद्भावेन = प्रदर्शितः सद्भावः यया तेन। क्लेशभीरुः = क्लेशेण भीरुः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः?

उत्तर– अस्य गद्यांशस्य प्रणेता 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. ''भगवति! क्लेशभीरुः कृत्स्नो लोकः स्नेहसदृशं कर्म अनुष्ठातुम् अशक्तः निष्फलेन अश्रुपातमात्रेण स्नेहम् उपदर्शयन् रोदिति।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– देवि! कष्टों से डरने वाले सभी लोग प्रेम जैसा कर्म करने में असमर्थ होने के कारण व्यर्थ ही आँसू गिराकर प्रेम प्रकट करते हुए रोते हैं।

प्रश्न 3. कः नितरां प्रीतो बभूव?

उत्तर– चन्द्रापीडः नितरां प्रीतो बभूव।

प्रश्न 4. कया प्रेमोचितम् आचेष्टितम्?

उत्तर– महाश्वेतया प्रेमोचितम् आचेष्टितम्।

प्रश्न 5. केन आचरित एषः मार्गः?

उत्तर– अविद्वज्जनाचरित एषः मार्गः।

59. स्वयं चेत् न जहति, न परित्याज्याः प्राणाः। अत्र हि विचार्यमाणे स्वार्थ एव प्राणपरित्यागः असह्यशोकवेदनाप्रतीकारत्वात्। उपरतस्य तु न कमपि गुणम् आवहति। न तावत् तस्यायं प्रत्युज्जीवनोपायः, न नरकपतनप्रतीकारः, न धर्मोपचयकारणम्, न दर्शनोपायः, अन्यामेवासौ कर्मणा नीयते कर्मभूमिम्। असावप्यात्मघाती केवलम् एनसा संयुज्यते। जीवस्तु जलाञ्जलिदानादिना बहूपकरोत्युपरतस्यात्मनश्च। मृतस्तु नोभयस्यापि। स्मर तावत् प्रियाम् एकपत्नीं रतिम् भर्तरि मकरकेतौ मृतेऽपि अविरहिताम् असुभिः। उतरां च विराट्दुहितरं पञ्चत्वमभिमन्यौ उपगतेअपि धृतदेहाम्। पृथां च पाण्डौ मृतेऽपि अपरित्यक्तजीविताम्। अतो नार्हस्यनिन्द्यम् आत्मानं निन्दितुम्''। इत्येवंविधै अन्यैश्च बहुभिः उपसान्त्वनैः संस्थाप्य ताम् अञ्जलिपुटोपनीतेन निर्झरजलेन प्रक्षालितमुखीम् अकारयत्।

शब्दार्थ– चेत् = यदि। न जहति = नहीं छोड़ता है। विचार्यमाणे = विचार करने पर। असह्यशोकवेदनाप्रतीकारत्वात् = असह्य शोक पीड़ा दूर करने का उपाय होने के कारण। उपरतस्य = मरे हुए का। गुणम् न आवहति = कोई लाभ नहीं करता। प्रत्युज्जीवनोपायः = फिर जिलाने का उपाय। न नरकपतनप्रतीकारः=नरक में गिरने से बचने का कोई उपाय नहीं। धर्मोपचयकारणम् = धर्मलाभ करने का हेतु। दर्शनोपायः = देखने का उपाय। अन्यामेवासौ = यह दूसरी ही। कर्मणा = कर्म द्वारा। नीयते = ले जाया जाता है। असावप्यात्मघाती = यह आत्मघात करनेवाला। एनसा संयुज्जते = पाप से युक्त होता है। जीवस्तु = जीवित रहकर, जलाञ्जलिदानादिना = जल की अंजली देने से, तपर्ण आदि करने से। बहूपकरोत्युपरतस्यात्मनश्च = मृतक और अपना दोनों का उपकार करता है। नोभयस्यापि = दोनों का नहीं। स्मर = स्मरण करो। एकपत्नीम् = एकमात्र पत्नी। मकरकेतौ = कामदेव की। भर्तरि = स्वामी। असुभिः अविरहिताम् = प्राणों से युक्त होने वाली। विराटदुहितरम् = विराट कन्या। पञ्चत्वमभिमन्यौ = अभिमन्यु के मरने पर। उपगतेअपि = जाने पर भी। धृतदेहाम् = शरीर धारण करने वाली। पाण्डौ मृतेऽपि = पाण्डु के मरने पर भी। अपरित्यक्तजीविताम् = जीव का परित्याग न करने वाली। नार्हस्यनिन्द्यम् = निन्दा न करने योग्य। उपसान्त्वनैः = सान्त्वना की बातों से। संस्थाप्य = समझाकर। अञ्जलीपुटोपनीतेन = अंजलिपुट में लाये गये। निर्झरजलेन = झरने के जल से। प्रक्षालितमुखीम् = धुले हुए मुखवाली। अकारयत् = कराया।

हिन्दी अनुवाद– यदि प्राण स्वयं नहीं छोड़ते हैं तो उनका परित्याग नहीं करना चाहिए। इस विषय में विचार करने पर प्राणों का परित्याग स्वार्थ ही है, क्योंकि वह असह्यवेदना से छुटकारा पाने का उपाय है। इससे मरने वाले को कोई भी लाभ नहीं पहुँचता। यह न तो उसके फिर जी उठने का उपाय है, न यह नरक में गिरने से बचने का उपाय है, न धर्मसंचय का हेतु

है और न उसके दर्शन का उपाय है। मरा हुआ व्यक्ति अपने कर्मों द्वारा ही दूसरी कर्मभूमि में पहुँचा दिया जाता है (अर्थात् अपने प्रिय के पीछे मरने वाला व्यक्ति दूसरे जन्म में जीवन धारण करता है)। इस प्रकार आत्मघात करने वाला केवल पाप का भागी बनता है। जीवित रहने वाला तर्पण आदि करके मृतक तथा अपना दोनों का लाभ करता है। मरा हुआ तो दोनों का उपकार नहीं कर सकता। अपने पति कामदेव के मरने पर प्राणों का त्याग न करने वाली प्रिय पत्नी रति का, अभिमन्यु के मर जाने पर शरीर धारण करने वाली विराट की पुत्री उत्तरा का और पाण्डु के मरने पर भी जीवन धारण करने वाली कुन्ती का स्मरण करो। इसलिए तुम्हें अपनी पवित्र आत्मा की निन्दा करना उचित नहीं है। इस प्रकार तथा और भी अनेक सान्त्वना की बातों से उसे (महाश्वेता को) समझा-बुझाकर अपनी अंजली में लाये गये जल से चन्द्रापीड ने उसका मुँह धुलवा दिया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अन्यामेवासौ = अन्याम् एव असौ। असावप्यात्मघाती = असौ+अपि+आत्मघाती। बहूपकरोत्युपरतस्यात्मनश्च = बहु+उपकरोति+उपरतस्य+आत्मनः+च। नोभयस्यापि = न+उपभयस्य+अपि। नार्हस्यनिन्द्यम् = न+अर्हसि+अनिन्द्यम्। प्रक्षालितमुखीम् = प्रक्षालितं मुखं यस्याः सा ताम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।
प्रश्न 2. 'स्वयं चेत् न जहति, न परित्याज्याः प्राणाः।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– यदि प्राण स्वयं नहीं छोड़ते तो उनका परित्याग नहीं करना चाहिए।
प्रश्न 3. स्वयं चेत् न जहति, न परित्याज्याः के?
उत्तर– स्वयं चेत् न जहति, न परित्याज्याः प्राणाः।
प्रश्न 4. विराटस्य पुत्री का आसीत्?
उत्तर– विराटस्य पुत्री उत्तरा आसीत्।
प्रश्न 5. कः निर्झरजलेन प्रक्षालितमुखम् अकारयत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः निर्झरजलेन प्रक्षालितमुखम् अकारयत्।

60. अथ क्षीणे दिवसे महाश्वेता मन्दम् मन्दम् उत्थाय, पश्चिमां सन्ध्याम् उपास्य, वल्कलशयनीये सखेदम् उष्णं च निःश्वस्य निषसाद। चन्द्रापीडोऽपि उत्थाय कृतसन्ध्याप्रणामः तस्मिन् द्वितीये शिलातले मृदुभिः लता पल्लवैः शय्याम् अकल्पयत्।

शब्दार्थ– क्षीणे दिवसे = दिन के समाप्त होने पर। मन्दं-मन्दं = धीरे-धीरे। उत्थाय = उठकर। पश्चिमाम् संध्याम् = सायंकाल की सन्ध्या। उपास्य = उपासना करके। वल्कलशयनीये = वल्कल के बिछौने पर। सखेदम् = कष्ट के साथ। उष्णं च निःश्वस्य = और गरम साँस लेकर। निषसाद = बैठी। कृतसंध्याप्रणामः = सन्ध्यावन्दन करने वाले। मृदुभिः = कोमल। लतापल्लवैः = लताओं के पत्तों से। अकल्पयत् = लगायी।

हिन्दी अनुवाद– इसके पश्चात् दिन बीत जाने पर महाश्वेता धीरे-धीरे उठकर सन्ध्याकालीन सन्ध्योपासना करके वल्कल के बिछौने पर दुःखी हृदय से गरम आहें भरती हुई चुपचाप आकर बैठ गयी। चन्द्रापीड ने भी उठकर सन्ध्या-वन्दनादि करके उसी दूसरी चट्टान पर लताओं के कोमल पत्तों से शैय्या लगायी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– कृतसंध्याप्रणामः = कृतः संध्यायाः प्रणामः येन सः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः?
उत्तर– अस्य गद्यांशस्य प्रणेता 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. **''अथ क्षीणे दिवसे महाश्वेता मन्दम् मन्दम् उत्थाय, पश्चिमां सन्ध्याम् उपास्य, वल्कलशयनीये सखेदम् उष्णं च निःश्वस्य निषसाद।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**

उत्तर– इसके पश्चात् दिन बीत जाने पर महाश्वेता धीरे-धीरे उठकर सन्ध्याकालीन सन्ध्योपासना करके वल्कल के बिछौने पर दुःखी हृदय से गरम आहें भरती हुई चुपचाप आकर बैठ गयी।

प्रश्न 3. **वल्कलशयनीये सखेदम् उष्णं च निःश्वस्य निषसाद का?**

उत्तर– महाश्वेता वल्कलशयनीये सखेदम् उष्णं च निःश्वस्य निषसाद।

प्रश्न 4. **कः द्वितीये शिलातले मृदुभिः लता पल्लवैः शय्याम् अकल्पयत्?**

उत्तर– चन्द्रापीडः द्वितीये शिलातले मृदुभिः लता पल्लवैः शय्याम् अकल्पयत्।

प्रश्न 5. **महाश्वेता पश्चिमां सन्ध्यां कदा उपासितः?**

उत्तर– महाश्वेता क्षाणेदिवसे पश्चिमां सन्ध्याम् उपासितः।

61. उपविष्टश्च तस्याम् पुनः पुनः तमेव महाश्वेतावृत्तान्तं मनसा भावयन्, पुनरेनां पप्रच्छ–''भगवति! सा तव परिचारिका तरलिका क्व गता?'' इति। अथ सा अकथयत्–''महाभाग! श्रूयताम्– अमृतसंभवात् अप्सरः कुलात् मदिरेति नाम्ना कन्यका अभूत्। दक्षदुहितुः मुनेः तनयः चित्ररथो नाम गन्धर्वराजः तस्याः पाणिम् अग्रहीत्। तयोश्च परस्परप्रेमसंवर्धितानि यौवनसुखानि सेवमानयोः दुहितृरत्नम् उदपादि कादम्बरीति नाम्ना। सा च मे जन्मनः प्रभृति द्वितीयमिव हृदयं बालमित्रम्। सेयम् अमुनैव मदीयेन वृत्तान्तेन सशोका निश्चयम् अकार्षीत– 'नाहं कथंचिदपि सशोकायां महाश्वेतायाम् आत्मनः पाणिं ग्राहयिष्यामि' इति।

शब्दार्थ– उपविष्टश्च = और बैठकर। मनसा भावयन् = मन ही मन सोचते हुए। पुनरेनाम् = फिर उससे। पप्रच्छ = पूछा। तव परिचारिका = तुम्हारी सेविका। क्व गता = कहाँ गयी है? अकथयत् = कहा। अमृतसंभवात् = अमृत से उत्पन्न हुए। अप्सरःकुलात् = अप्सरा के वंश से। अभूत् = पैदा हुई। दक्षदुहितुः = दक्ष की पुत्री। मुनेः = मुनि के। तनयः = पुत्र। तस्याः = उसका। पाणिम् अग्रहीत् = पाणिग्रहण किया। तयोश्च = उन दोनों के। परस्परप्रेमसंवर्धितानि = परस्पर प्रेम से बढ़े हुए। यौवनसुखानि = जवानी के सुख। सेवमानयोः = भोग करने वाले। उद्पादि = उत्पन्न हुई। जन्मनः प्रभृति = जन्म से ही। द्वितीयमिव हृदयम् = दूसरे हृदय के समान। बालमित्रम् = बालसखी। अमुनैव = इसे ही। मदीयेन वृत्तान्तेन = मेरे इस समाचार से। सशोका = दुःखी होकर। अकार्षीत् = किया। कथंचिदपि = किसी प्रकार भी, आत्मनः = अपना, पाणिम् ग्राहयिष्यामि = हाथ पकड़ाऊँगी, विवाह करूँगी।

हिन्दी अनुवाद– उस शैय्या पर बैठकर बार-बार उसी महाश्वेता के वृत्तान्त के बारे में सोचते हुए चन्द्रापीड ने फिर उससे पूछा-देवी, तुम्हारी वह सेविका तरलिका कहाँ गयी? उसने कहा-महाभाग! अमृत से उत्पन्न अप्सरा वंश से मदिरा नाम की एक कन्या उत्पन्न हुई। दक्ष की पुत्री मुनि के लड़के गन्धर्वराज चित्ररथ ने उससे विवाह किया। परस्पर प्रेम से बढ़े यौवन सुख का अनुभव करने वाले उन दोनों से कादम्बरी नाम की कन्या उत्पन्न हुई। वह जन्म से ही दूसरे हृदय जैसी मेरी बालसखी है। उसने मेरे इस वृत्तान्त से दुःखी होकर निश्चय किया कि जब तक महाश्वेता इस शोकावस्था में रहेंगी, मैं किसी प्रकार भी अपना विवाह नहीं करूँगी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– उपविष्टश्च = उपविष्टः+च। पुनरेनाम् = पुनः+एनाम्। कथंचिदपि = कथंचित्+अपि।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. **उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?**

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।

प्रश्न 2. **'नाहं कथंचिदपि सशोकायां महाश्वेतायाम् आत्मनः पाणिं ग्राहयिष्यामि' इति।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**

उत्तर– महाश्वेता के शोकाकुल रहने पर मैं किसी भी प्रकार अपना पाणिग्रहण नहीं कराऊँगी।

प्रश्न 3. **अप्सरः कुलात् का नाम्ना कन्यका अभूत?**

उत्तर– अप्सरः कुलात् मदिरेति नाम्ना कन्यका अभूत।

प्रश्न 4. दक्षस्य दुहिता का नाम्नासीत्?
उत्तर– दक्षस्य दुहिता मदिरा नाम्नासीत्।
प्रश्न 5. चित्ररथः कया पाणिम् अग्रहीत्?
उत्तर– चित्ररथः मदिरायाः पाणिम् अग्रहीत्।
प्रश्न 6. कादम्बर्याः मातापितरौ कौ आस्ताम्?
उत्तर– कादम्बर्याः माता मदिरा पिता चित्ररथः च आस्ताम्।

62. तत् आत्मदुहितुः निश्चयवचनं शुश्राव। गच्छति च काले समुपारूढयौवनाम् आलोक्य सः ताम् एकापत्यतया अतिप्रियतया च, किञ्चिदपि ताम् अभिधातुम् अशक्तः ''वत्से ! महाश्वेते! त्वमेव शरणम् इदानीं कादम्बरीम् अनुनेतुम्''इति संदिश्य, क्षीरोदनामानं कञ्चुकिनम् अद्यैव प्रत्युषसि मत्समीपं प्रेषितवान्। ततो मया गुरुवचनगौरवेण सखीप्रेम्णा च, क्षीरोदेन सार्धं सा तरलिका ''सखि कादम्बरि ! किं दुःखितमपि जनम् अतितरां दुःखयसि? जीवन्तीम् इच्छसि चेन्मां तत् कुरु गुरुवचनम् अवितथम्'' इति संदिश्य विसर्जितां गतायां च तस्याम् अनन्तरमेव इमां भूमिम् अनुप्राप्तः महाभागः। इत्यभिधाय तूष्णीम् अभवत्।

शब्दार्थ– आत्मदुहितुः = अपनी कन्या के। निश्चयवचनं = निश्चय की बात को, शुश्राव = सुना। गच्छति काले = कुछ समय बीतने पर। समुपारूढयौवनाम् = युवावस्था में पहुँची हुई, आलोक्य = देखकर, एकापत्यतया = एक ही संतान होने के कारण, अतिप्रियतया च = बहुत प्रिय होने से, अभिधातुम् = समझने में, अशक्तः = असमर्थ होकर, त्वमेव शरणम् = तुम्हीं शरण हो, तुम्हीं समर्थ हो। इदानीम् = अब, अनुनेतुम् = समझाने के लिए, संदिश्य = सन्देश देकर, अद्यैव = आज ही। प्रत्युषसि = प्रातःकाल ही, मत्ससमीपम् = मेरे पास, प्रेषितवान् = भेजा, गुरुवचनगौरवेण = गुरुवाणी के आदर से, सखीप्रेम्णा = सखी के प्रेम से, सार्धम् = साथ, दुखितमपि जनम् = इस दुखिया को, अतितराम् = और भी अधिक, दुःखयसि = दुखी बना रही हो, जीवन्तीम् = जीती रहने वाली, इच्छति = चाहती हो, चेन्माम् = यदि मुझको कुरु = करो, गुरुवचनम् = माता-पिता की बात, अवितथम् = सत्य, विसर्जिता = भेजी गयी, गतायाम् च तस्याम् = उसके जाने पर, अनन्तरमेव = बाद ही, इमाम् भूमिम् = इस स्थान पर, अनुप्राप्तः = आये, तूष्णीम् अभवत् = चुप हो गयी।

हिन्दी अनुवाद– इसके पश्चात् चित्ररथ ने अपनी कन्या के निश्चय को सुना। कुछ समय बीतने पर उसे भलीभाँति युवावस्था में पहुँची हुई देखकर, इकलौती सन्तान होने तथा अपने अत्यन्त प्रेम के कारण उसे समझने में असमर्थ चित्ररथ ने क्षीरोदक नाम के कंचुकी को आज ही प्रातःकाल मेरे पास यह सन्देश लेकर भेजा कि पुत्री महाश्वेते ! अब तुम्हीं कादम्बरी को मना सकती हो। गुरुजनों की आज्ञा के प्रति गौरव की भावना तथा सखी के प्रेम के कारण क्षीरोदक के साथ तरलिका को आज ही यह सन्देश लेकर भेजा है कि सखी कादम्बरी! मुझ दुखिया को और अधिक दुःखी क्यों बना रही हो ? यदि तुम मुझे जीवित देखना चाहती हो तो गुरुजनों की बात मान लो। उसके जाने के, तुरन्त बाद महानुभाव यहाँ आये हैं, ऐसा कहकर वह चुप हो गयी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– गुरुवचनगौरवेण = गुरोः वचनस्य गौरवेण। दुखितमपि = दुखितम्+अपि। चेन्माम् = चेत+माम्। अनन्तरमेव = बाद ही।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः?
उत्तर– अस्य गद्यांशस्य प्रणेता 'बाणभट्टः' अस्ति।
प्रश्न 2. ''किं दुःखितमपि जनम् अतितरां दुःखयसि? जीवन्तीम् इच्छसि चेन्मां तत् कुरु गुरुवचनम् अवितथम्'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– क्यों इस दुखिया को और भी अधिक दुखित कर रही हो? मुझे जीती हुई देखना चाहती हो तो गुरुजन के वचन को मान लो।
प्रश्न 3. चित्ररथः कस्य निश्चयवचनं शुश्राव?
उत्तर– चित्ररथः आत्मदुहितुः निश्चयवचनं शुश्राव।

प्रश्न 4. कंचुकीयाः का नाम आसीत्?
उत्तर– कंचुकीयाः क्षीरोदक नाम आसीत्।
प्रश्न 5. चित्ररथः क्षीरोदनामानं कञ्चुकिनं कस्याः समीपं प्रेषितवान्?
उत्तर– चित्ररथः क्षीरोदनामानं कञ्चुकिनं महाश्वेतायाः समीपं प्रेषितवान्।

63. क्रमेण च उद्गते कुमुदनान्धवे, चन्द्रापीडः सुप्तामालोक्य महाश्वेताम् पल्लवशयने समुपाविशत्। ''किं नु खलु अस्यां वलाया मामन्तरेण चिन्तयति वैशम्पायनः'' इति चिन्तयन्नेव निद्रां ययौ। अथ क्षीणायाम् क्षपायाम्, उषसि सन्ध्याम् उपास्य, शिलातलोपविष्टायां महाश्वेतायाम्, निर्वर्तितप्राभातिकविधौ चन्द्रापीडे, तरलिका षोडशवर्षवयसा केयूरकनाम्ना गन्धर्वदारकेण अनुगम्यमाना प्रादुरासीत्। आगत्य च महाश्वेतायाः समीपम् उपसृत्य कृतप्रणामा, सविनयम् उपाविशत्। महाश्वेता तु तां दृष्ट्वा, ''किं त्त्वया दृष्टा कादम्बरी कुशलिनी? करिष्यति वा तत् अस्मद्वचनम्?'' इत्यपृच्छत्।

शब्दार्थ – उद्गते = निकलने पर। कुमुदबान्धवे = चन्द्रमा। सुप्ताम् = सोयी हुई, आलोक्य = देखकर, समुपाविशम् = बैठ गया, अस्याम् बेलायाम् = इस समय, मामन्तरेण = मेरे बिना, चिन्तयति = सोचता होगा, चिन्तयन्नेव = सोचते-सोचते, निद्रां ययौ = सो गया, क्षीणायाम् क्षपायाम् = रात बीतने पर, उषसि = प्रातःकाल, सन्ध्यामुपास्य = संध्या करके, शिलातलौपविष्टायाम् = शिला पर बैठी हुई। निर्वर्तितप्राभातिकविधौ = प्रातःकालीन क्रियाओं को कर लेने वाले। षोडशवर्षवयसा = 16 वर्ष वाले, गन्धर्वदारकेण = गन्धर्व पुत्र के साथ, प्रादुरासीत् = आ पहुँची, आगत्य = आकर, उपसृत्य = बैठ कर, कृतप्रणामा = प्रणाम करके, उपाविशत् = बैठ गयी, दृष्टा = देखी गयी, कुशलिनी = कुशल से, करिष्यति = करेगी, अस्मद्वचनम् = हमारी बात।

हिन्दी अनुवाद– धीरे-धीरे चन्द्रमा के उदय हो जाने पर चन्द्रापीड महाश्वेता को सोयी हुई देखकर पल्लव की बनी शय्या पर आ बैठा और इस समय मेरे बिना वैशम्पायन क्या सोचता होगा? ऐसा सोचते-सोचते सो गया। रात के बीत जाने पर प्रातःकाल सन्ध्या करके महाश्वेता जब उसी चट्टान पर आकर बैठ गयी और चन्द्रापीड ने प्रातःकालीन सभी कार्यों को पूरा कर लिया। ठीक उसी समय सोलह वर्ष की अवस्था वाले केयूरक नाम के एक गन्धर्व पुत्र को पीछे-पीछे लिये तरलिका आ पहुँची। वहाँ आकर वह महाश्वेता के पास गयी और प्रणाम करके विनम्रता के साथ बैठ गयी। महाश्वेता ने उसे देखकर पूछा कि क्या तुमने देखा? कादम्बरी कुशलपूर्वक है न? और क्या वह हमारे वचन का पालन करेगी?

व्याकरणात्मक टिप्पणी– कुमुदबान्धवे = (कुमुदः बान्धवः यस्य स तस्मिन्) निर्वर्तितप्राभातिकविधौ = निर्वर्तितः प्राभातिकस्य विधिः येन सः तस्मिन्। समुपाविशम् = सम+उपविशम्। मामन्तरेण = माम्+अन्तरेण। सन्ध्यामुपास्य = सन्ध्याम्+उपास्य।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।
प्रश्न 2. ''किं नु खलु अस्यां वलाया मामन्तरेण चिन्तयति वैशम्पायनः'' इति। रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– इस समय वैशम्पायन मेरे बिना क्या सोचता होगा?
प्रश्न 3. कः सुप्तामालोक्य महाश्वेतां पल्लवशयने समुपाविशत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः सुप्तामालोक्य महाश्वेतां पल्लवशयने समुपाविशत्।
प्रश्न 4. चन्द्रापीडः कां सुप्तामालोक्य पल्लवशयने समुपाविशत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः महाश्वेतां सुप्तामालोक्य पल्लवशयने समुपाविशत्?
प्रश्न 5. केयूरकः कः आसीत् ?
उत्तर– केयूरकः एकः गन्धर्वस्य पुत्रः आसीत्।

64. अथ सा तरलिका ''भर्तृदारिके, दृष्टा मया भर्तृदारिका कादम्बरी सर्वतः कुशलिनी। विज्ञापिता च निखिलं भर्तृदुहितुः सन्देशम्। आकर्ण्य च यत् तथा प्रतिसन्दिष्टम्, तदेषः तयैव विसर्जितः तस्या एव वीणावाहकः केयूरकः कथयिष्यति'' इति व्यजिज्ञपत्। विरतवचसि तस्यां केयूरकः अब्रवीत्–''भर्तृदारिके महाश्वेते ! देवी

कादम्बरी त्वां विज्ञापयति–यदियम् आगत्य माम् अवदत् तरलिका किमिदं मच्चित्तपरीक्षणम्? किं प्रेमविच्छेदाभिलाषः? किं वा प्रकोपः? यत्र भर्तृविरहविधुरा प्रियसखी महत् कृच्छ्रम् अनुभवति तत्राहम् अविगणय्य एतत् कथम् आत्मसुखार्थिनी पाणिं ग्राहयिष्यामि? कथं वा मम सुखं भविष्यति? तत् मा कृथाः स्वप्नेऽपि पुनरिममर्थं मनसि'' इति। महाश्वेता तु तत् श्रुत्वा, सुचिरं विचार्य ''गच्छ, स्वयमेव अहम् आगत्य यथाहम् आचरिष्यामि,'' इत्युक्त्वा केयूरकं प्राहिणोत्।

शब्दार्थ– सर्वतः = भलीभाँति। विज्ञापितः = निवेदन किया। निखिलम् = सम्पूर्ण। भर्तृदुहितुः = स्वामिपुत्री के। आकर्ण्य = सुनकर। यत् = जो। प्रतिसन्दिष्टम् = संदेश के उत्तर में जो सन्देश दिया। तयैव विसर्जितः=उसके द्वारा भेजा हुआ। तस्याः एव = उसका ही। वीणावाहकः = वीणा लेकर चलने वाला। कथयिष्यति = कहेगा। व्यजिज्ञपत् = निवेदन किया। विरतवचसि = चुप हो जाने पर। विज्ञापयति = निवेदन करती है। यदियम् = यह जो। अवदत् = कहा। किमिदम् = क्या यह। मच्चित्तपरीक्षणम् = मेरे हृदय की परीक्षा है। प्रेमविच्छेदाभिलाषः = प्रेम तोड़ने की अभिलाषाः। प्रकोपः = क्रोधः। भर्तृविरहविधुरा = पतिवियोग से दुखी, कृच्छ्रम् = कष्ट को, अविगणय्य = ध्यान न देकर, आत्मसुखार्थिनी = अपने सुख को चाहने वाली। पाणिं ग्राहयिष्यामि = विवाह करूँगी। मा कृथाः = मत करो। स्वप्नेऽपि = स्वप्न में भी। पुनरिममर्थम् = फिर इस विषय को। मनसि = मन में। सुचिरं विचार्य = बड़ी देर तक सोचकर। यथाहम् = यथोचित। आचरिष्यामि = करूँगी। प्राहिणोत् = भेज दिया।

हिन्दी अनुवाद– इसके बाद तरलिका ने निवेदन किया कि स्वामिपुत्री! मैंने देखा कि कादम्बरी भलीभाँति कुशलपूर्वक हैं। मैंने राजकुमारी (आप) के सभी सन्देशों को उससे निवेदन किया। उसे सुनकर उत्तर में उसने जो सन्देश दिया है, उसे उसी द्वारा भेजा गया उसी का वीणा-वाहक यह केयूरक कहेगा। उसके चुप हो जाने पर केयूरक ने कहा– राजकुमारी महाश्वेते, देवी कादम्बरी ने आप से निवेदन किया है कि तरलिका ने आकर जो कुछ मुझसे कहा, क्या वह मेरे हृदय की परीक्षा है अथवा प्रेम तोड़ने की अभिलाषा है? अथवा वह मेरे ऊपर क्रोध है? जहाँ पतिवियोग से दुःखी मेरी प्रिय सखी महान् कष्ट का अनुभव करती है वहाँ मैं उसे न देखकर उसके कष्टों की उपेक्षा करके कैसे ब्याह करूँगी? और मुझे सुख कैसे मिलेगा? इसलिए अब स्वप्न में भी फिर इस विषय को वह अपने मन में न लायें। महाश्वेता ने यह सुनकर बड़ी देर तक विचार किया और यह कहकर केयूरक को भेज दिया कि जाओ, मैं स्वयं आकर जैसा उचित होगा वैसा करूँगी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– यदियम् = यत्+इयम्। किमिदम् = किम्+इदम्। मच्चित्तपरीक्षणम् = मत्+चित्त+परीक्षणम्। प्रेमविच्छेदा भिलाषः = (प्रेम्णः विच्छेदस्य अभिलाषः)। भर्तृविरहविधुरा = (भर्तुः विरहेण विधुरा)। पुनरिममर्थम् = (पुनः+इमम्+अर्थम्)।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः?

उत्तर– अस्य गद्यांशस्य प्रणेता 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. ''भर्तृदारिके, दृष्टा मया भर्तृदारिका कादम्बरी सर्वतः कुशलिनी।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– स्वामिपुत्रि! मैंने देखा कि कादम्बरी भलीभाँति कुशलपूर्वक है।

प्रश्न 3. तरलिका कया निवेदनम् अकरोत्?

उत्तर– तरलिका महाश्वेतया निवेदनम् अकरोत्।

प्रश्न 4. वीणावाहकः कः आसीत्?

उत्तर– वीणावाहकः केयूरकः आसीत्।

प्रश्न 5. देवी कादम्बरी कां विज्ञापयति?

उत्तर– देवी कादम्बरी महाश्वेतां विज्ञापयति।

65. गते च केयूरके चन्द्रापीडम् उवाच ''राजपुत्र ! रमणीयः हेमकूटः। चित्रा च चित्ररथराजधानी। पेशलो गन्धर्वलोकः। सरलहृदया महानुभावा च कादम्बरी। तत इतः मयैव सह गत्वा हेमकूटम् दृष्ट्वा च मत्रिर्विशेषां कादम्बरीम् अपनीय तस्याः मोहविलसितम्, एकम् अहः विश्रम्य, श्वोभूते प्रत्यागमिष्यसि'' इत्युक्तवतीं,

चन्द्रापीडः, ''भगवति ! दर्शनात् प्रभृति, परवान् अयं जनः कर्तव्येषु यथेष्टं नियुज्यताम्'' इत्यभिधाय, तया सहैव उदचलत्।

शब्दार्थ– गते = चले जाने पर। उवाच = बोली। रमणीयः = सुन्दर। चित्रा = विचित्र। पेशलः = सुन्दर। चित्ररथराजधानी = चित्ररथ की राजधानी। सरल हृदया = सरल हृदयवाली। गन्धर्वलोकः = गन्धर्वों का देश। इतः = यहाँ से। मयैव सह गत्वा = मेरे साथ चलकर। मत्विर्विशेषाम् = मुझसे अभिन्न। अपनीय = दूर करके। तस्याः = उसके। मोहविलसितम् = मोह के अज्ञान को। अहः = दिन। विश्रम्य = विश्राम करके। श्वोभूते = दूसरे दिन। प्रत्यागमिष्यसि = लौट आइयेगा। इत्युक्तवतीम् = ऐसा कहने वाली। परवान् = पराधीन, तुम्हारे अधीन। कर्त्तव्येषु = कार्यों में। यथेष्टम् = इच्छानुसार। नियुज्यताम् = लगाइये। अभिधाय = कहकर। उदचलत् = चल पड़ा।

हिन्दी अनुवाद– केयूरक के चले जाने पर महाश्वेता ने चन्द्रापीड से कहा– हेमकूट बहुत ही मनोहर है। महाराज चित्ररथ की राजधानी अनोखी है। गन्धर्वों का देश अत्यन्त सुन्दर है और कादम्बरी अत्यन्त सरल और उदार स्वभाव की है। इसलिए यहाँ से मेरे साथ हेमकूट चलकर मुझसे अभिन्न कादम्बरी को देखकर उसके मोहरूपी अज्ञान को दूर करके एक दिन वहाँ विश्राम कीजिएगा और दूसरे दिन लौट आइएगा। इस प्रकार कहने वाली महाश्वेता से चन्द्रापीड ने कहा–देवि, मैंने जब से आपको देखा है तभी से मैं आपके अधीन हो चला हूँ। आप अपनी इच्छानुसार मुझसे काम लीजिए। ऐसा कहकर उसके साथ चल पड़ा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– चित्ररथराजधानी = चित्ररथस्य राजधानी। गन्धर्वलोकः =गन्धर्वाणाम् लोकः। मोहविलसितम् = मोहस्य यत् विलसितम् तत्। इत्युक्तवतीम् = इति+उक्तवतीम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. **उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?**

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।

प्रश्न 2. **''गते च केयूरके चन्द्रापीडम् उवाच ''राजपुत्र ! रमणीयः हेमकूटः। चित्रा च चित्ररथराजधानी।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**

उत्तर– केयूरक के चले जाने पर महाश्वेता ने चन्द्रापीड से कहा– हेमकूट बहुत मनोहर है। महाराज चित्ररथ की राजधानी अनोखी है।

प्रश्न 3. **केयूरकस्य गते महाश्वेता केन अकथयत्?**

उत्तर– केयूरकस्य गते महाश्वेता चन्द्रापीडेन अकथयत्।

प्रश्न 4. **महाराज चित्ररथस्य राजधानी कीदृशः आसीत्?**

उत्तर– महाराज चित्ररथस्य राजधानी रमणीयः आसीत्।

प्रश्न 5. **चन्द्रापीडः केन सह उदचलत्?**

उत्तर– चन्द्रापीडः महाश्वेताया उदचलत्।

66. क्रमेण च गत्वा हेमकूटम्, आसाद्य गन्धर्वराजकुलम्, समतीत्य सप्तकक्ष्यान्तराणि, प्रविश्य कन्यान्तःपुरम्, तत्र च कादम्बरीभवनं तन्मध्ये च श्रीमण्डपं ददर्श। तत्र च मध्यभागे, अनेकसहस्रसङ्ख्येन कन्यकाजनेन परिवृताम्, नीलप्रच्छदपटप्रावृतस्य नातिमहतः पर्यङ्कस्य आश्रये धवलोपधानन्यस्तभुजलतावष्टम्भेन अवस्थिताम् सर्वरामणीयकानाम् एकनिवासभूताम्, कादम्बरीं ददर्श।

शब्दार्थ– आसाद्य = पहुँचकर। समतीत्य = लाँघकर। सप्तकक्ष्यान्तराणि = सात ड्योढ़ियाँ। प्रविश्य = प्रवेश करके। कन्यान्तःपुरम् = राजकुमारी के महल। तत्र = वहाँ। कादम्बरीभवनम् =कादम्बरी के महल में। तन्मध्ये = उसके बीच। श्रीमण्डपम् = अत्यन्त सुन्दर मण्डप। ददर्श = देखा। मध्यभागे = बीच में । अनेकसहस्रसंख्येन = कई हजार। कन्यकाजनेन = कुमारियों द्वारा। परिवृताम् = घिरी हुई। नीलप्रच्छदपटप्रावृतस्य = नीले रंग की चादर से ढके हुए। नातिमहतः = जो बहुत बड़ा नहीं था। पर्यङ्कस्य = पलंग के सहारे। धवलोपधानन्यस्त भुजलतावष्टम्भेन = उज्ज्वल तकिये पर भुजाओं को रखकर उसी के सहारे। अवस्थिताम्

= बैठी हुई। सर्वगामणीयकानाम् = सभी सुन्दरताओं की। एकनिवासभूताम् = एकमात्र निवासभूमि।

हिन्दी अनुवाद– क्रमशः हेमकूट पर्वत पर जाकर और गन्धर्व राजकुल में पहुँचकर चन्द्रापीड सात ड्योढ़ियों को लाँघने के बाद राजकुमारियों के स्थान पर पहुँचा। वहाँ कादम्बरी का महल और उसके बीच बने हुए सुन्दर मण्डप को देखा। उस मण्डप के बीच कई हजार कन्याओं से घिरी नीली चादर से ढँके हुए न बहुत बड़े न बहुत छोटे पलंग के सहारे सफेद तकिये पर भुजाओं को रखकर उसी के सहारे बैठी हुई सभी सुन्दरताओं की एकमात्र निवास भूमि कादम्बरी को उसने देखा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– नीलप्रच्छदपटप्रावृतस्य = नीलवर्णः यः प्रच्छदपटः तेन आवृतः तस्य। धवलोपधानन्यस्तभुजलतावष्टम्भेन = धवलं यत् उपधानं तत्र न्यस्ता या भुजलता तस्याः अवष्टम्भेन।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. **उपरोक्त गद्यांशः केन विरचित पुस्तकात् उद्धृतः?**

उत्तर– उपरोक्त गद्यांशः बाणभट्टेन विरचित चन्द्रापीडकथायाः उद्धृतः?

प्रश्न 2. **''क्रमेण च गत्वा हेमकूटम्, आसाद्य गन्धर्वराजकुलम्, समतीत्य सप्तकक्ष्यान्तराणि, प्रविश्य कन्यान्तःपुरम्, तत्र च कादम्बरीभवनं तन्मध्ये च श्रीमण्डपं ददर्श।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**

उत्तर– क्रमशः हेमकूट पर्वत पर जाकर और गन्धर्व राजकुल में पहुँचकर चन्द्रापीड सात ड्योढ़ियों को लाँघने के बाद राजकुमारियों के स्थान पर पहुँचा।

प्रश्न 3. **चन्द्रापीडः कुत्र अगच्छत्?**

उत्तर– चन्द्रापीडः हेमकूटम् अगच्छत्।

प्रश्न 4. **चन्द्रापीडः कन्यान्तःपुरं प्रविश्य किं ददर्श?**

उत्तर– कादम्बरी भवनं तन्मध्ये च श्रीमण्डपं ददर्श।

प्रश्न 5. **अनेकसहस्रसंख्येन कन्यकाजनेन का परिवृता?**

उत्तर– कादम्बरी अनेकसहस्रसंख्येन कन्यकाजनेन परिवृता।

●●

➨ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. शूद्रकः कः आसीत् ?
उत्तर– शूद्रकः राजा आसीत्।
प्रश्न 2. शूद्रकस्य राजधानी का आसीत् ?
उत्तर– शूद्रकस्य राजधानी विदिशा नाम नगरी आसीत्।
प्रश्न 3. शूद्रकस्य राजधानी कया नद्या परिगता आसीत् ?
उत्तर– शूद्रकस्य राजधानी वेत्रवत्या नद्या परिगता आसीत्।
प्रश्न 4. शूद्रकस्य प्रधान अमात्यः कः आसीत् ?
उत्तर– शूद्रकस्य प्रधान अमात्यः कुमारपालितः आसीत्।
प्रश्न 5. राजा शूद्रकः पूर्व जन्मनि कः आसीत् ?
उत्तर– राजा शूद्रकः पूर्व जन्मनि चन्द्रापीडः आसीत्।
प्रश्न 6. पञ्जरस्थं शुकमादाय शूद्रकस्य समीपं का आगता?
उत्तर– पञ्जरस्थं शुकमादाय शूद्रकसमीपं चाण्डाल-कन्या आगता।
प्रश्न 7. दण्डकारण्यः कुत्र आसीत्?
उत्तर– दण्डकारण्यः विन्ध्याटव्याम् आसीत्।
प्रश्न 8. जीर्णः शाल्मलीवृक्षः कुत्र आसीत्?
उत्तर– जीर्णः शाल्मलीवृक्षः पम्पाभिधानस्य सरसः पश्चिमे तीरे आसीत्।
प्रश्न 9. राज्ञः शूद्रकस्य राजधानी काभिधाना नगरी आसीत्?
उत्तर– राज्ञः शूद्रकस्य राजधानी विदिशाभिधाना नगरी आसीत्।
प्रश्न 10. चन्द्रापीडस्य बालमित्रं कः आसीत्?
उत्तर– चन्द्रापीडस्य बालमित्रं वैशम्पायनः आसीत्।
प्रश्न 11. शुकनासः कस्य मंत्री आसीत्?
उत्तर– शुकनासः राज्ञः तारापीडस्य मंत्री आसीत्।
प्रश्न 12. नाना-देश-समागतानि शुकशकुनिकुलानि कुत्र प्रतिवसन्ति स्म?
उत्तर– नाना-देश-समागतानि शुक-शकुनिकुलानि शाल्मली वृक्षे प्रतिवसन्ति स्म।
प्रश्न 13. अभिमुखम् आगच्छन्तम् शबरसैन्यम् कः अपश्यत्?
उत्तर– अभिमुखम् आगच्छन्तम् शबरसैन्यम् वैशम्पायनः शुकं अपश्यत्।
प्रश्न 14. चाण्डालकन्या का आसीत् ?
उत्तर– चाण्डालकन्या पुण्डरीकस्य माता आसीत्।
प्रश्न 15. शूद्रकस्य सभायां शुकम् आदाय का आगता?
उत्तर– शूद्रकस्य सभायां शुकम् आदाय चाण्डालकन्या आगता।
प्रश्न 16. शूद्रक सभायां प्राप्तः शुकः केन जनेन तत्रानीतः?
उत्तर– शूद्रक सभायां शुकः चाण्डालकन्यया तत्रानीतः।
प्रश्न 17. चाण्डालकन्यका हस्ते कम् आदाय शूद्रकसभायाम् आगता?
उत्तर– चाण्डालकन्यका हस्ते पञ्जरस्थं शुकम् आदाय आगता।
प्रश्न 18. पत्रलेखा का आसीत्?
उत्तर– पत्रलेखा चन्द्रपत्नी रोहिण्याः अवतारः चन्द्रापीडस्य च ताम्बूलकरंकवाहिनी आसीत्।

प्रश्न 19. चन्द्रापीडः कस्य अवतारः आसीत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः चन्द्रस्य अवतारः आसीत्।
प्रश्न 20. शूद्रकस्य पुरः पञ्जरं निधाय का अपससार?
उत्तर– शूद्रकस्य पुरः पञ्जरं निधाय चाण्डालकन्या अपससार।
प्रश्न 21. शुकस्य किम् नाम आसीत्?
उत्तर– शुकस्य "वैशम्पायनः" इति नाम आसीत्।
प्रश्न 22. कस्मिन् वृक्षे वैशम्पायनः शुकः अवसत्?
उत्तर– शाल्मली वृक्षे वैशम्पायनः शुकः अवसत्।
प्रश्न 23. इन्द्रायुधः कस्य अवतारः आसीत्?
उत्तर– इन्द्रायुधः कपिंजलस्य अवतारः आसीत्।
प्रश्न 24. कोलाहलध्वनिम् आकर्ण्य शुकः कुत्र अविशत्?
उत्तर– कोलाहलध्वनिम् आकर्ण्य शुकः स्वपितुः पक्षपुटान्तरम् अविशत्।
प्रश्न 25. चन्द्रापीडम् आनेतुं कः विद्यामन्दिरम् अगच्छत्?
उत्तर– चन्द्रापीडम् आनेतुं बलाधिकृतः बलाहकः विद्यामन्दिरम् अगच्छत्।
प्रश्न 26. चन्द्रापीडस्य माता पितरौ कौ आस्ताम्?
उत्तर– चन्द्रापीडस्य माता विलासवती पिता च तारापीडः आस्ताम्।
प्रश्न 27. शुकस्य किं नाम आसीत् ?
उत्तर– शुकस्य नाम वैशम्पायनः आसीत्।
प्रश्न 28. कः स्वप्ने विलासवत्याः वदने प्रविशन्तं शशिनम् अद्राक्षीत्?
उत्तर– राजा तारापीडः स्वप्ने विलासवत्याः वदने प्रविशन्तं शशिनम् अद्राक्षीत्।
प्रश्न 29. शुकनासपुत्रः वैशम्पायनः कस्य अवतारः आसीत्?
उत्तर– शुकनासपुत्रः वैशम्पायनः पुण्डरीकस्य अवतारः आसीत्।
प्रश्न 30. राजानमुद्दिश्य विहंगराजः काम् आर्यां पपाठ ?
उत्तर– सः विहंगराजः कृतजयशब्दः राजानमुद्दिश्य इमाम् आर्याम् पपाठ-
'स्तनयुगमश्रुस्नातं समीपतरवर्ति हृदयशोकाग्नेः।
चरति विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम्।।'
प्रश्न 31. कादम्बरी का आसीत् ?
उत्तर– कादम्बरी चित्ररथस्य गन्धर्वराजस्य पुत्री आसीत्।
प्रश्न 32. पम्पाभिधानस्य सरसः नातिदूरवर्तिनि तपोवने कः मुनिः प्रतिवसित स्म?
उत्तर– पम्पाभिधानस्य सरसः नातिदूरवर्तिनी तपोवने जाबालिः नाम मुनिः प्रतिवसति स्म।
प्रश्न 33. शुक शिशु किं नामधेयः आसीत् ?
उत्तर– शुक शिशु वैशम्पायनः नामधेयः आसीत्।
प्रश्न 34. हारीतः कस्मात् कारणात् शुक-शिशुम् स्वाश्रमं आनीतवान्?
उत्तर– हारीतः शाल्मलीवृक्षस्य तवस्विदुरारोहत्वात् शुकशिशुम् स्वाश्रमम् आनीतवान्।
प्रश्न 35. सकलभूतलरत्नः को नाम शुकः आसीत् ?
उत्तर– सकलभूतलरत्नः वैशम्पायनो नाम शुकः आसीत्।
प्रश्न 36. कादम्बरी कस्मिन् अनुरक्ता आसीत्?
उत्तर– कादम्बरी चन्द्रापीडे अनुरक्ता आसीत्।
प्रश्न 37. कादम्बर्याः माता-पितरौ कौ आस्ताम्?
उत्तर– कादम्बर्याः माता मदिरा पिता च चित्ररथः आस्ताम्।

प्रश्न 38. महाश्वेता कस्मिन् अनुरक्ता आसीत्?
उत्तर– महाश्वेता पुण्डरीके अनुरक्ता आसीत्।
प्रश्न 39. महाश्वेतायाः माता पितरौ कौ आस्ताम्?
उत्तर– महाश्वेतायाः माता गौरी पिता च हंसः आस्ताम्।
प्रश्न 40. राजा शूद्रकस्य इष्टदेवः कः आसीत्?
उत्तर– राजा शूद्रकस्य इष्टदेवः पशुपति भगवान् शङ्करः आसीत्।

➡ बहुविकल्पीय प्रश्न

नोट : निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. **'कमलयोनिरिव विमानीकृतराजहंसमण्डलः' यह विशेषण किसके लिए प्रयुक्त है?**
(i) शूद्रक (ii) चन्द्रापीड (iii) कुमारपालित (iv) वैशम्पायन
उत्तर– (i) शूद्रक।

2. **कस्य विमले कृपाणधाराजले चिरमुवास राजलक्ष्मीः?**
(i) चन्द्रापीडस्य (ii) तारापीडस्य (iii) शूद्रकस्य (iv) शुकनासस्य
उत्तर– (iii) शूद्रकस्य।

3. **भगवतः नारायणस्य कः अनुकरोति?**
(i) शूद्रकः (ii) शुकनासः (iii) तारापीडः (iv) चन्द्रापीडः
उत्तर– (i) शूद्रकः।

4. **अचिरमृदित महिषासुर रुधिररक्तं चरणमिव कात्यायनीम्–यह विशेषण वाक्य किसके लिए प्रयुक्त है?**
अथवा **'अरण्यकमलिनीमिव मातङ्गकुलदूषिताम्' यह वाक्यांश किसके लिए प्रयुक्त है?**
(i) महाश्वेता (ii) कादम्बरी (iii) चित्रलेखा (iv) चाण्डालकन्या
उत्तर– (iv) चाण्डालकन्या।

5. **'गङ्गा प्रवाह इव भगीरथपथप्रवृत्तः'–यह विशेषण किसके लिए है?**
(i) वैशम्पायन (ii) शूद्रक (iii) चाण्डालदारक (iv) चन्द्रापीड
उत्तर– (ii) शूद्रक।

6. **'विदितसकलशास्त्रार्थः राजनीतिप्रयोगकुशलः' यह विशेषण किसके लिए प्रयुक्त है?**
(i) शूद्रक के लिए (ii) चन्द्रापीड के लिए
(iii) वैशम्पायन शुक के लिए (iv) कुमारपालित के लिए
उत्तर– (iii) वैशम्पायन शुक के लिए।

7. **प्रथमे वयसि कः सुखमतिचिरमुवास?**
(i) तारापीडः (ii) शूद्रकः (iii) शुकनासः (iv) वैशम्पायनः
उत्तर– (ii) शूद्रकः।

8. **'देव विदित सकल शास्त्रार्थः राजनीतिप्रयोगकुशलः वैशम्पायनो नाम शुकः'। इस वाक्य का वक्ता कौन है?**
(i) शूद्रकः (ii) चाण्डालकन्या (iii) वृद्धपुरुषः (iv) प्रतीहारी
उत्तर– (iii) वृद्धपुरुषः।

9. **आदर्शः सर्वशास्त्राणाम् – यह विशेषण किससे सम्बद्ध है?**
अथवा **'कः आसीत् आदर्शः सर्वशास्त्राणाम्?**
(i) शूद्रक (ii) चन्द्रापीड (iii) वैशम्पायन (iv) कुमारपालित
उत्तर– (i) शूद्रक।

10. **'वनितासम्भोगपराङ्मुखः सुहृत्परिवृतः' यह विशेषण किसके लिए प्रयुक्त है?**
(i) शूद्रक (ii) तारापीड (iii) चन्द्रापीड (iv) वैशम्पायन
उत्तर– (i) शूद्रक।

11. **'रजोजुषे जन्मनि' यह विशेषण किसके लिए प्रयुक्त है?**
(i) ब्रह्मा (ii) विष्णु (iii) इन्द्र (iv) शिव
उत्तर– (i) ब्रह्मा।

12. **कस्य प्रतापानलो दिवानिशं जज्वाल?**
(i) शूद्रकस्य (ii) तारापीडस्य (iii) चन्द्रापीडस्य (iv) वैशम्पायनस्य
उत्तर– (i) शूद्रकस्य।

13. **'उत्पातकेतुरहितजनस्य' यह विशेषण किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?**
(i) वैशम्पायन (ii) चन्द्रापीड (iii) शूद्रक (iv) प्रतीहारी
उत्तर– (iii) शूद्रक।

14. **'आसीदशेष-नरपति-शिरः समभ्यर्चित-शासन अपर इव पाकशासनः' यह कथन किसका है?**
अथवा **''अशेष-नरपति समभ्यर्चित शासनः।'' यह विशेषण किसके लिए प्रयुक्त है?**
(i) चन्द्रापीड (ii) शुकनास (iii) शूद्रक (iv) तारापीड
उत्तर– (iii) शूद्रक।

15. **'कृत युगानुकारिणी त्रिभुवन प्रसव भूमिरिव विस्तीर्णा।' यह विश्लेषण किसका है?**
(i) विदिशा (ii) चम्पा (iii) काशी (iv) मथुरा
उत्तर– (i) विदिशा।

16. **'उदयशैलो मित्रमण्डलस्य' यह पद किसके लिए प्रयुक्त है?**
(i) चन्द्रापीड (ii) शूद्रक (iii) वृद्ध शबर (iv) वैशम्पायन शुक
उत्तर– (ii) शूद्रक।

17. **का दक्षिणपथादागता?**
अथवा **दक्षिणापथात् का आगता आसीत्?**
(i) महाश्वेता (ii) कादम्बरी (iii) चाण्डालकन्यका (iv) तरलिका
उत्तर– (iii) चाण्डालकन्यका।

18. **विदिशाभिधाना नगरी राजधान्यासीत्–**
(i) शुकनासस्य (ii) चन्द्रापीडस्य (iii) शूद्रकस्य (iv) कुमारपालितस्य
उत्तर– (iii) शूद्रकस्य।

19. **'दिग्गज इवानवरतप्रदत्तदानाद्रीकृतकरः' कः आसीत्?**
(i) शुकनासः (ii) शूद्रकः (iii) वैशम्पायनः (iv) तारापीडः
उत्तर– (ii) शूद्रकः।

20. **'तस्य च कलिकालभयपुञ्जीभूतकृतयुगानुकारिणी विदिशाभिधाना नगरी राजधानी आसीत्।' वाक्य में 'तस्य' पद किसके लिए प्रयुक्त है?**
अथवा **''कलिकालभयपुञ्जीभूत कृतयुगानुकारिणी'' विशेषण प्रयुक्त है–**
(i) चन्द्रापीड के लिए (ii) तारापीड के लिए (iii) शूद्रक के लिए (iv) पुण्यवर्मा के लिए
उत्तर– (iii) शूद्रक के लिए।

21. **कः आसीदशेषनरपतिसमभ्यर्चितशासनः?**
(i) वैशम्पायनः (ii) शुकनासः (iii) तारापीडः (iv) शूद्रकः
उत्तर– (iv) शूद्रकः।

22. मातङ्ग कुमारी को किसने प्रवेश कराया?
(i) प्रतीहारी (ii) द्वारपाल (iii) शूद्रक (iv) बाणभट्ट
उत्तर– (i) प्रतीहारी।

23. विदिशा नगरी किस नदी से परिगत थी?
अथवा **''त्रिभुवन प्रसवभूमिरिव विस्तीर्णा'' का नगरी अस्ति?**
अथवा **शूद्रक की राजधानी विदिशा किस नदी से घिरी हुई थी?**
(i) गोदावरी (ii) कावेरी (iii) वेत्रवती (iv) कालिन्दी
उत्तर– (iii) वेत्रवती।

24. 'विन्ध्य वनभूमिरिव वेत्रलतावती' किसके लिए कहा गया है?
(i) चाण्डालकन्या (ii) प्रतीहारी (iii) कादम्बरी (iv) कञ्चुकी
उत्तर– (ii) प्रतीहारी।

25. शूद्रकस्य राजधानी का आसीत्?
अथवा **शूद्रक की राजधानी का नाम था–**
अथवा **''त्रिभुवनप्रसव भूमिरिव विस्तीर्णा'' यह विशेषण किसके लिए प्रयुक्त है?**
अथवा **''त्रिभुवनप्रसव भूमिरिव विस्तीर्णा'' का नगरी अस्ति?**
(i) उज्जयिनी (ii) कान्धारः (iii) विदिशा (iv) काञ्ची
उत्तर– (iii) विदिशा।

26. 'हर इव जितमन्मथः' कः अस्ति?
(i) चन्द्रापीडः (ii) शूद्रकः (iii) वैशम्पायनः (iv) प्रतीहारी
उत्तर– (ii) शूद्रकः।

27. 'कर्त्ता महाश्चर्याणाम्' यह किसके लिए प्रयुक्त है?
अथवा **चापकोटि समुत्सारित-सकलाराति-कुलोचलो राजा'' वाक्य प्रयुक्त है–**
(i) शूद्रक के लिए (ii) चन्द्रापीड के लिए (iii) वैशम्पायन के लिए (iv) चाण्डालकन्या के लिए
उत्तर– (i) शूद्रक के लिए।

28. 'वैनतेय इव विनतानन्दजननः' यह वाक्य निम्नलिखित में से किसके लिए प्रयुक्त है?
(i) चन्द्रापीड के लिए (ii) वैशम्पायन के लिए (iii) शूद्रक के लिए (iv) पुण्डरीक के लिए
उत्तर– (iii) शूद्रक के लिए।

29. 'अन्तःपुराद् वैशम्पायनमादायागच्छ'–यह आदेश किसको दिया गया?
(i) महाश्वेता (ii) कञ्चुकी (iii) ताम्बूलकरङ्कवाहिनी (iv) चाण्डालकन्या
उत्तर– (ii) कञ्चुकी।

30. चाण्डालकन्या कस्मात् पथादागता?
अथवा **चाण्डालकन्या कहाँ से आयी थी?**
(i) पूर्व (ii) पश्चिम (iii) उत्तर (iv) दक्षिण
उत्तर– (iv) दक्षिण।

31. क्रतूनां आहर्ता कः आसीत्?
(i) तारापीडः (ii) वैशम्पायनः (iii) शूद्रकः (iv) पुण्डरीकः
उत्तर– (iii) शूद्रकः।

32. 'प्रतापानुरागावनत समस्त सामन्तचक्रः' यह वाक्य किसके लिए प्रयुक्त है?
(i) तारापीड (ii) वैशम्पायन (iii) शूद्रक (iv) चन्द्रापीड
उत्तर– (iii) शूद्रक।

33. शूद्रकस्य राज्ये कलङ्काः कुत्र आसन्?
(i) छत्रेषु (ii) ध्वजेषु (iii) गवाक्षेषु (iv) कवचेषु
उत्तर– (iv) कवचेषु।

34. प्रतीहारी कां प्रावेशयत्?
(i) वैशम्पायनम् (ii) चाण्डालकन्यकाम् (iii) कञ्चुकीम् (iv) चन्द्रापीडम्
उत्तर– (ii) चाण्डालकन्यकाम्।

35. विदिशा नगरी कया नद्या परिगता आसीत्?
(i) गोदावर्या (ii) महानद्या (iii) वेत्रवत्या (iv) भागीरथ्या
उत्तर– (iii) वेत्रवत्या।

36. 'राजानमुद्दिश्यार्यामिमांपपाठ' यह वाक्य निम्नलिखित में से किसके लिए है?
(i) प्रतीहारी के लिए (ii) शुक के लिए (iii) शूद्रक के लिए (iv) पुण्डरीक के लिए
उत्तर– (ii) शुक के लिए।

37. 'आश्रयो रसिकानाम्' यह विशेषण किसके लिए प्रयुक्त है?
(i) चन्द्रापीड (ii) शूद्रक (iii) तारापीड (iv) शुकनास
उत्तर– (ii) शूद्रक।

38. 'दिग्गज इवानवरतप्रवृत्तदानार्द्रो कृतकरः' यह विशेषण किसके लिए प्रयुक्त है?
अथवा **'अनुकरोति स्म भगवतो नारायणस्य' यह वाक्यांश किसके लिए प्रयुक्त है?**
(i) चाण्डालकन्या के लिए (ii) शूद्रक के लिए (iii) पुण्डरीक के लिए (iv) वैशम्पायन के लिए
उत्तर– (ii) शूद्रक के लिए।

39. 'आगमः काव्यामृतरसानाम्' यह पद किसके लिए प्रयुक्त है?
(i) चन्द्रापीड के लिए (ii) शूद्रक के लिए (iii) चाण्डालकन्या के लिए (iv) विश्रुत के लिए
उत्तर– (ii) शूद्रक के लिए।

40. 'जामदग्न्यपरशुधारेव वशीकृतसकलराजमण्डला' यह वाक्य किसके लिए प्रयुक्त है?
अथवा **'आलेख्यगतामिव दर्शनमात्रफलाम्' यह पद किसके लिए प्रयुक्त है?**
अथवा **अरण्यकमलिनी इव मातङ्गकुलदूषिता'' का आसीत्?**
(i) चाण्डालकन्या (ii) प्रतीहारी (iii) चामरग्राहिणी (iv) वाराङ्गनाजन
उत्तर– (i) चाण्डालकन्या।

41. 'सन्निहितविषधरेव चन्दनलताभीषणा रमणीयाकृतिः' किसके लिए प्रयुक्त है?
(i) चाण्डालकन्या (ii) प्रतीहारी (iii) चामरग्राहिणी (iv) वाराङ्गना
उत्तर– (ii) प्रतीहारी।

42. 'सकलभूतलरत्नभूतः' कः आसीत्?
अथवा **'कर्ता महाश्चर्याणाम्, आदर्शः सर्वशास्त्राणां कः आसीत्?**
(i) पुण्डरीकः (ii) चन्द्रापीडः (iii) शूद्रकः (iv) वैशम्पायनः
उत्तर– (iv) वैशम्पायनः।

43. 'यस्य च कृपाणेनाकृष्यमाण, अभिसारिके समरनिशासु समीपमसकृदाजगाम राजलक्ष्मीः' यह वाक्य किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?
(i) शूद्रक के लिए (ii) चन्द्रापीड के लिए (iii) अनन्तवर्मा के लिए (iv) विहारभद्र के लिए
उत्तर– (i) शूद्रक के लिए।

44. 'सर्वमेव देवीभिः' स्वयं करतलोपनीयमानममृतायते' यह वाक्य किसके द्वारा कहा गया है?
(i) वैशम्पायन (ii) शूद्रक (iii) तारापीड (iv) चन्द्रापीड
उत्तर– (i) वैशम्पायन।

45. 'कच्चित् अभिमतमारचादितमभ्यन्तरे भवता' यह उक्ति किसके लिए प्रयुक्त है?
(i) चाण्डालकन्या के लिए (ii) शूद्रक के लिए (iii) वैशम्पायन के लिए (iv) कादम्बरी के लिए
उत्तर– (iii) वैशम्पायन के लिए।

46. विदित सकलशास्त्रार्थः राजनीति प्रयोग कुशलः कः आसीत्?
(i) शूद्रकः (ii) शुकनासः (iii) वैशम्पायनः (iv) तारापीडः
उत्तर– (iii) वैशम्पायनः।

47. ''उदयशैलः मित्रमण्डलस्य'' यह वाक्य किसके लिए कहा गया है?
अथवा **''को दोषः, प्रवेश्यताम्'' किसका कथन है?**
(i) वैशम्पायन (ii) शूद्रक (iii) प्रतीहारी (iv) चाण्डालकन्या
उत्तर– (ii) शूद्रक।

48. 'आश्रयो रसिकानाम्'–यह विशेषण किसके लिए प्रयुक्त है?
(i) चन्द्रापीड (ii) शूद्रक (iii) तारापीड (iv) शुकनास
उत्तर– (ii) शूद्रक।

49. 'हर्षचरितम्' किसकी रचना है?
(i) बाणभट्ट (ii) दण्डी (iii) सुबन्धु (iv) भूषणभट्ट
उत्तर– (i) बाणभट्ट।

50. गद्य रचनाकारों में सर्वश्रेष्ठ कवि कौन है?
(i) सुबन्धु (ii) बाणभट्ट (iii) दण्डी (iv) पं० अम्बिका दत्त व्यास
उत्तर– (ii) बाणभट्ट।

51. शूद्रकस्य मनसि कः वसति?
(i) कोपः (ii) धर्म (iii) स्नेहः (iv) ममता
उत्तर– (ii) धर्म।

52. 'नृत्तप्रयोगदर्शन निपुणः' यह विशेषण किसके लिए प्रयुक्त है?
(i) चन्द्रापीड (ii) शुक (iii) शूद्रक (iv) तारापीड
उत्तर– (ii) शुक।

53. पञ्जरस्थं शुकमादाय चाण्डालकन्या कुतः आगता?
(i) विदर्भदेशात् (ii) पुष्पपुरात् (iii) कम्बोजप्रान्तात् (iv) दक्षिणापथात्
उत्तर– (iv) दक्षिणापथात्।

54. कः व्यायामभूमिमयासीत्?
(i) चन्द्रापीडः (ii) पुण्डरीकः (iii) तारापीडः (iv) शूद्रकः
उत्तर– (iv) शूद्रकः।

55. 'देव किं किं वा नास्वादितम्'–यह कथन किसका है?
(i) कञ्चुकी (ii) वैशम्पायन (iii) शूद्रक (iv) प्रतीहारी
उत्तर– (ii) वैशम्पायन।

56. शूद्रकस्य प्रधानामात्यः कः आसीत्?
अथवा **राजा शूद्रक के महामात्य का नाम था–**
(i) कुमारपालित (ii) वैशम्पायन (iii) कञ्चुकी (iv) प्रथु
उत्तर– (i) कुमारपालित।

●●